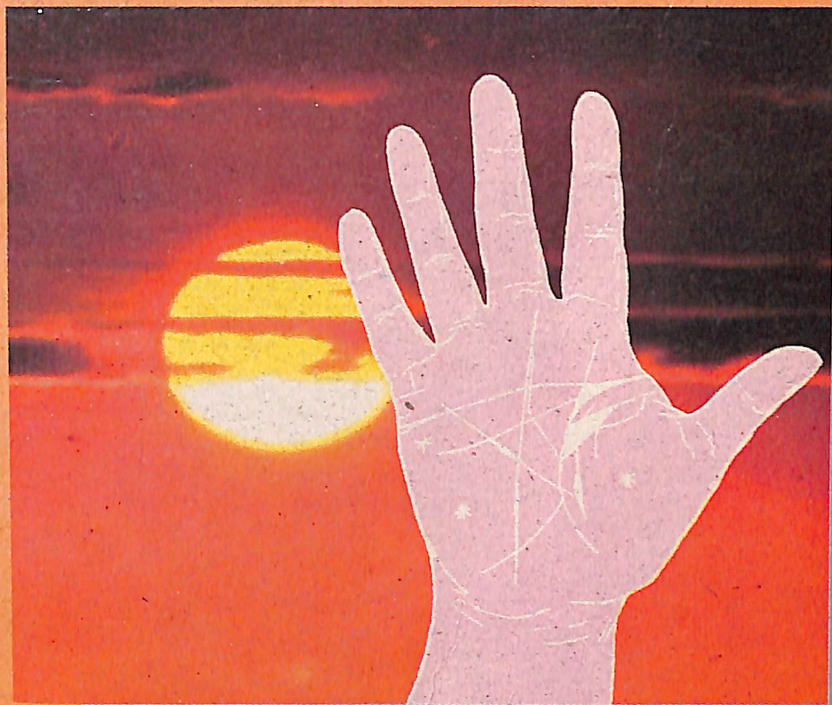
सचित्र

सामुद्रिक-रहस्य

भाषा - टीका



प्रकाशक

ज्योतिष प्रकाशन

चौक (चित्रा के सामने), वाराणसी २२१००१

श्रीः

सचित्र

सामुद्रिक-रहस्यम्

बनारसस्टेट-'रामनगर'-निवासिना श्री १०८ काशिराजाश्रित-
श्रीमत्-हनुमानप्रसादज्योतिर्विदात्मजेन राजज्यौतिषी-

स्व. पं. श्रीकालिकाप्रसादशर्मणा

सङ्कलितम्

काशिराजकीयाङ्ग्लविद्यालया-(मि. हा. स्कूल)-ऽध्यापक-साहित्याचार्य-

द्विवेद्युपाह्व-पं. श्रीठाकुरप्रसादशर्मणा

परिष्कृतम्

व्याकरणाचार्य, साहित्यवारिधि-इत्युपाधिधारिणा

पण्डित-श्रीशिवदत्तमिश्र-शास्त्रिणा

संशोधितम्

प्रकाशक :

ज्योतिष प्रकाशन

चौक, वाराणसी-२२१००१

प्राप्ति स्थान : ठाकुर प्रसाद बुक्सेलर, चौक, वाराणसी

सन् २०११ फोन-०५४२-२३९०८५४ मूल्य ६०)-

प्रकाशक :
ज्योतिष प्रकाशन
चौक, चित्रा के सामने
वाराणसी-२२१००१
फोन : ०५४२-२३९०८५४

सन् २०११ ई.

मूल्य : ६०)००

फोटो कम्पोजिंग :
ज्योतिष प्रकाशन
चौक, वाराणसी-२२१००१

मुद्रक :

स्वस्ति-श्रीमन्महाराजाधिराज-द्विजराज-काशिराज-
परमगौरवास्पद-कैप्टन हिज हाइनेस
श्री १०८ मदादित्यनारायण सिंह शर्म
धर्मवीर पुङ्गव के. सी. एस. आई.
महोदय के कर-कमलों में

समर्पण

राजन् !

श्रीमान् प्रिय प्रजाजनों के प्राणाधार तथा भारतवर्ष में धर्म के स्तम्भ-स्वरूप हैं। सनातनधर्म और हिन्दू समाज को महाराज से गौरव है। इस लेखक को राज्य से बहुकालिक सम्बन्ध है। अतः यह 'सामुद्रिक-रहस्य' नामक सचित्र पुस्तक का चतुर्थ-संस्करण महाराज के कर-कमलों में सादर समर्पित है। आशा है कि श्रीमान् इसे स्वीकार कर पूर्ववत् मुझे प्रोत्साहित करेंगे।

प्राचीन रामनगर,
बनारस स्टेट
संवत् २००२

श्रीमान् का शुभेच्छु-
पं० कालिकाप्रसाद
राजज्यौतिषी।

भूमिका

श्री सर्वशक्तिमान् सच्चिदानन्द परम कारुणिक परब्रह्म परमेश्वर को अनन्त धन्यवाद है, जिन्होंने जगत् की रचना कर सांसारिक जीवों के उपकारार्थ अनिर्वचनीय सुखोत्पादक सामग्रियों को प्रस्तुत किया। प्रत्येक विषय-ज्ञान के लिये अनेक उपाय भी दर्शाये। परमेश्वर की ही प्रेरणा से त्रिकालदर्शी महर्षियों के द्वारा कला-कौशल-ज्ञान के लिये शिल्प, रोग से मुक्त होने के लिये वैद्यक, भूत, भविष्य, वर्तमान जानने के लिये ज्यौतिष एवं अनेक विषय जानने के लिये अनेकानेक शास्त्र रचे गये। अवान्तर भेदों के सहित ज्यौतिषशास्त्र में अनेक शाखायें हैं; जैसे स्वर, केरल, होरा, शकुन, गणित, संहिता और सामुद्रिक। इस शास्त्र के द्वारा प्राचीनकाल के महर्षि लोग भूत, भविष्य, वर्तमानकाल की यथार्थ बातें बतलाते थे; जो पुराणों में प्रसङ्ग-वश यथावकाश उपलब्ध होते हैं। उन ग्रन्थों में हल, पद्म, पुष्करिणी, हय, गज इत्यादि के द्वारा फल-कथन की प्रणाली कही गई है। वस्तुतः मनुष्यों के हाथ में हाथी, घोड़ा, रथ, पालकी, हल, बैल इत्यादि प्रत्यक्ष रूप से नहीं दिख पड़ते, इनका कोई विशेष चिह्न अवश्य हैं परन्तु उनके रूप और स्थान का परिचय प्रायः सर्वत्र नहीं मिलता, इसी कारण से देववाणी में यह ग्रन्थ लुप्तप्राय हो रहा है।

पाश्चात्त्य विद्वानों ने यद्यपि इस विषय में नवीन प्रणाली का अत्यन्त अनुसन्धान कर इस शास्त्र की उन्नति की है और उन्हीं रेखाओं के द्वारा विचित्र ढंग से फल-कथन प्रणाली भी प्रदर्शित की है, तथापि (रेखा कामदुघा स्मृता) रेखायें कामधेनु रूप हैं— ऐसा महर्षियों ने कहा है। अतः प्राचीन पद्धति के अनुसार फल-कथन में कठिनाई होती है। इस कारण इस छोटी-सी पुस्तक में बहुत अन्वेषण के साथ प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों का अध्ययन, मनन और अनुभव द्वारा प्राचीन तथा नवीन रीतियों का समावेश कर चित्रों में सुगमता-पूर्वक अङ्क के द्वारा रेखाओं के रूप, स्थान और सप्रमाण फल दर्शाये गये हैं।

इसमें दो विषय हैं, लक्षण और रेखा। रेखाओं के तीन प्रधान स्थान हैं— कर, कपाल तथा चरण। चिरकाल के अनुभव से इनके द्वारा भूत, भविष्य, वर्तमान तथा जन्मकालिक मास, पक्ष, तिथि इत्यादि का भी ज्ञान होता है। प्रायः ऐसी जनश्रुति है कि इस शास्त्र द्वारा कथित भूत और वर्तमान फल ठीक

घटते हैं, पर भविष्य नहीं मिलता। यह अत्यन्त गूढ़ विषय है, इस पर विचार करना आवश्यक है। जैसे आकाश में बादल जब उठने लगता है तो ऊँट, बकरी, घोड़ा इत्यादि का रूप धारण करता है, परन्तु दर्शकों को पहले ही यथार्थ रूप का ज्ञान नहीं होता। इसी प्रकार हाथ में जब छोटी-छोटी रेखाओं का उदय होने लगता है, जो थोड़े ही भेद से फल में महान् भेद कर देता है, उसका भी आकाशस्थ बादल के समान यथार्थ ज्ञान होना कठिन है। जब यह रेखा पूर्णतया अपने रूप को धारण कर लेती है तो उस समय का फल भूत हो जाता है; इस कारण भूत, वर्तमान फल तो ठीक मिल जाता है परन्तु भविष्य के लिए अनुभव तथा शुद्ध प्रतिभा की आवश्यकता पड़ती है।

जैसे चित्र ११ में नं० ११। चित्र १८ में नं० ९। एवं चित्र १३ में नं० ११। चित्र १७ में नं० ३ इत्यादि रेखाओं के अल्प भेद से फल में विशेष अन्तर होता है। अतः उदयकाल में साधारण पुरुष इनका यथार्थ फल नहीं कह सकता एवं अनेक कारणों से भविष्य-फल में अड़चन मालूम होती है। इसका चिरकाल तक अनुभव धीरता के साथ करना चाहिए।

यदि पाठकगण अपनी दया-दृष्टि से इस प्रस्तुत संस्करण को पूर्व संस्करण की भाँति अपना कर पुनः मेरे उत्साह को बढ़ायेंगे तो भविष्य में मैं और भी अनेक विषयों को लेकर सेवा में उपस्थित होऊँगा।

नष्ट जन्मपत्र की बहुत-सी सामग्री भी एकत्र है। परमेश्वर की कृपा से सर्वाङ्ग सम्पन्न होने पर प्रकाशित किया जायेगा।

चित्रों में जो पृष्ठांक दिये गये हैं वे प्रायः उत्तरार्द्ध के हैं। पूर्वार्द्ध के लिए उसी स्थान पर पूर्वार्द्ध या पू० शब्द दिया गया है।

इस ग्रन्थ के रचना में मेस्टर हाई स्कूल के अध्यापक पूज्यपाद द्विवेद्युपनामक पं० ठाकुरप्रसाद शर्मा, साहित्याचार्य ने अत्यन्त सहायता दी है तथा और कई प्रसिद्ध महानुभाव विशेषज्ञ विद्वानों ने जो यथावकाश इसमें सम्मति दिये हैं उन सब महानुभावों को हार्दिक धन्यवाद देते हुए इस भूमिका को समाप्त करता हूँ।

लेखक
कालिकाप्रसाद
राजज्यौतिषी, रामनगर, वाराणसी स्टेट

प्रस्तावना

श्री परम कृपालु परब्रह्म परमेश्वर की परमानुकम्पा से सचित्र 'सामुद्रिक रहस्य' का प्रस्तुत संस्करण लेकर पाठकों की सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इस संस्करण में भाल-रेखा सम्बन्धी कुछ अनेक नवीन विषय तथा गत १२ वर्षों में इस शास्त्र के अनेक प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों के अध्ययन-मनन तथा अनुभव द्वारा प्राप्त विषयों की टिप्पणी चित्र-प्रकरण और मूल ग्रन्थ की टीका में यथावकाश प्रकाशित की गयी है।

संवत् १९७७ में कामरूप कामाख्या के एक महात्मा से इस विषय की शिक्षा प्राप्त हुई। महात्माजी इस शास्त्र के द्वारा विचित्र ढंग से फल कहते थे, जिसे देख और सुनकर ऐसा प्रतीत होता था मानो इष्ट द्वारा फल-कथन कर रहे हैं। वस्तुतः यह बात नहीं थी, वे केवल इसी शास्त्र के आधार पर तीनों का यथार्थ फल कहते थे।

उन्हीं महात्मा की दया से संवत् १९८४ वि. में सचित्र सामुद्रिक-रहस्य का प्रथम संस्करण, संवत् १९९८ में सामुद्रिक दर्पण नामक सचित्र छोटी पुस्तक केवल भाषा में लेकर पाठकों की सेवा की थी, जिसे विद्वज्जनों ने अपनाकर अनुपम प्रसन्नता के साथ-साथ अपनी अमूल्य सम्मति भी प्रदान की, जिनका दिग्दर्शन ग्रन्थ के अन्त में यथावकाश हुआ।

इस संस्करण में नष्ट जन्म-पत्रादि विषय के समावेश करने का विचार था, परन्तु स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण शीघ्रता से सम्पूर्ण सामग्री प्रस्तुत न हो सकी, अतः पाठकगण इसके लिए कृपया क्षमा प्रदान करेंगे।

यदि परमेश्वर की कृपा होगी तो फिर कभी इस विषय को लेकर उपस्थित होने का साहस करूँगा। इस समय सामुद्रिक सोपान नामक एक और छोटी पुस्तक सर्वसाधारण के लाभार्थ इसके साथ ही प्रकाशित की जाती है। आशा है, सज्जनगण पूर्ववत् इन्हें अपनाकर मुझे प्रोत्साहित करेंगे। इति शम्।

कालिका प्रसाद, राज-ज्यौतिषी,
रामनगर, वाराणसी स्टेट।

नवम संस्करण की प्रस्तावना

प्रिय पाठक महोदय !

आज मैं पूज्य पिताजी की अनुपस्थिति में सचित्र सामुद्रिक-रहस्य के प्रस्तुत संस्करण को लेकर उपस्थित हुआ हूँ। इस पुस्तक को अपनाकर आप लोगों ने जो उदारता दिखलायी है उसके लिए मैं आप लोगों का हृदय से कृतज्ञ हूँ, इस पुस्तक के छपते ही धड़ाधड़ इसकी प्रतियाँ विक जाती हैं। जिससे कि इस अल्पकाल में ही इसके नवम संस्करण छपने की नौबत आयी, यही इस पुस्तक के सर्वोपयोगी होने का प्रमाण है और इसके अतिरिक्त भारत के अनेक हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत के धुरन्धर विज्ञ विद्वान्, राजा-महाराजा, धनी-मानी सज्जन तथा ख्यातिप्राप्त पत्रकारों ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करके इसे और भी गौरवान्वित किया है। जिसके कारण कई संस्करण थोड़े ही समय में एकदम बिक गये और जिसके लिए वहुत दिनों से देश-विदेश के चारों ओर से माँग पर माँग बराबर जारी है। यही इस पुस्तक की अधिक चाह का और भी द्योतक है। अतएव इसका नवम संस्करण छपना अनिवार्य समझ कर संशोधन करके शीघ्र उसी को छपाना चाहा, परन्तु अनेक कार्य कारणवश छपने में बहुत विलम्ब हुआ। इसके लिए पाठकों से क्षमा चाहता हूँ। इस वर्ष इस पुस्तक में कुछ नवीन विषय परिवर्द्धित नहीं हो सका, जहाँ कहीं पूर्व संस्करण में छोटी-मोटी त्रुटियाँ रह गई थीं उनको ठीक करके शुद्ध तथा साफ छापने की ओर विशेष ध्यान दिया गया है। परन्तु फिर भी दृष्टिदोष तथा प्रेस-कर्मचारियों की असावधानी से कुछ त्रुटियाँ इस बार भी रह गई हों तों पाठक-वृन्द कृपया सुधार कर पढ़ेंगे, यही प्रार्थना है। प्रस्तुत संस्करण में सम्पूर्ण संशोधन-कार्य ***पण्डित श्रीशिवदत्तमिश्र जी शास्त्री*** ने किया है। अतः वे धन्यवादार्ह हैं।

गत तीन वर्ष पूर्व 'सामुद्रिक कुञ्चिका' नाम की एक छोटी-सी पुस्तक द्वारा मैंने पाठकों की सेवा की है। वह पुस्तक "सचित्र सामुद्रिक रहस्य" पढ़नेवालों के लिए परमोपयोगी है, क्योंकि जहाँ-कहीं इस सामुद्रिक रहस्य में विषय गुप्त है उसके लिए कुञ्चिका पथ-प्रदर्शन का काम करती है। पाठकगण स्वयं मँगाकर इसका अनुभव कर लाभ उठा सकते हैं, हाथ कंगन को आरसी क्या? मूल्य ५०.०० मात्र

किमधिकम्

विनीत—

संवत् २०३५

पं. गौरीशंकर उपाध्याय
रामनगर, (सामुद्रिक सदन)

सामुद्रिक-रहस्य की विशेषता—

जिस समय इस सामुद्रिक-रहस्य का जन्म हुआ, उस समय हिन्दी भाषा में प्रायः इसका अभाव-सा था। जो एक-दो ग्रन्थ मिलते भी थे, तो किसी में नखशिख वर्णन-मात्र ही है तथा किसी में प्राचीन काल के "छत्रं तामरसं धनू रथवरो दम्भोऽलिकूर्माङ्कुशाः" इत्यादि चित्र परिचय के ४१ पृष्ठ में उक्त ३२ रेखाओं की आकृति चित्र में देकर उनके फल प्रदर्शित हैं। परन्तु वैसा रथ, हय, गज, कलशादि की रेखायें हाथ में कहीं भीं प्रत्यक्ष देखने में नहीं आतीं। अतः इस विषय के जिज्ञासुओं का मन उसमें नहीं रमने से यह विषय प्रायः लुप्त हुआ जाता था। कोई एकाध पुस्तक पाश्चात्य ग्रन्थों का अनुसरण कर छपी भी थी तो विस्तार और मूल्य के आधिक्य से प्रचलित नहीं थी। अतः स्वर्गीय पं. कालिकाप्रसादजी राजज्यौतिषी ने कामरूप कामाख्या के महात्मा से प्राप्त प्रसाद का अनुभव कर पुस्तकरूप में प्रकाशित कर जनता में काफी प्रचार किया।

यद्यपि, अनेक सामुद्रिक पुस्तकें मुद्रित हैं, तथापि इसके टक्कर की अबतक एक भी पुस्तक नहीं निकल सकी, क्योंकि संकलन की ऐसी प्रणाली किसी भी पुस्तक में नहीं है। बड़ी भारी विशेषता तो यह है कि काम (कोक) शात्रोक्त शशक, मृग आदि जाति के अवान्तरभेद सहित १६ प्रकार के पुरुष एवं पद्मिनी, चित्रिणी, हस्तिनी और शंखिनी जाति की स्त्रियों के जीवनचरित्र, नख-शिखादि वर्णन, विधवा, सधवा, पुंश्चली, देवी, देवादि लक्षण, शुभाशुभ फल ज्ञान की रीति, उद्वाह मेलापक, बालकों का शुभाशुभ चिह्न, बालारिष्ट आदि विषयों ने इसे अत्युत्कृष्ट बना दिया है। एवं दस भाल चित्रों द्वारा ललाट तथा २० चित्रों द्वारा प्रायः सम्पूर्ण रेखाओं के नाम, रूप, स्थान, फल अत्यन्त सरल रीति से दिये गये हैं। यही कारण है कि यह पुस्तक दनादन बिकती जाती है। यदि कई कारणों से इस संस्करण के छपने में विलम्ब न हुआ होता तो अब तक कइयों संस्करण हो गये होते। अस्तु, जैसी यह पुस्तक सर्वोपयोगी हुई है, वैसी ही उक्त ज्यौतिषीजी द्वारा संकलित 'सामुद्रिक कुञ्चिका' भी सर्वोपयोगी पुस्तक है। इन पुस्तकों में ग्रन्थकार ने अनेक गुप्त विषयों का समावेश कर सोने में सुगन्ध का काम किया है। सिर्फ इसकी परीक्षा प्रार्थनीय है।

ठाकुर प्रसाद द्विवेदी
अध्यापक, मे. हाईस्कूल, रामनगर, बनारस स्टेट।

अथ चित्र-रेखा सूचीपत्र

चित्र	रेखा	फल
८	३	दैवी बुद्धिवाला इत्यादि
९	४	त्रिकोण बनता है
१०	४	विश्वासरहित इत्यादि
११	४	उदररोगयुक्त इत्यादि
१२	३	अनेकरूप धारण करना, वक्ता, आत्माभिमानी इ०
१३	३	साहित्यशास्त्रज्ञाता इत्यादि
१४	३	प्रभावशाली इत्यादि
१५	३	अकालमृत्यु इत्यादि
१५	५	(यव चि०) विवाहरहित इ०
१६	३	भक्त इत्यादि
१६	९	मातृ-पितृ-वियोग इत्यादि
१७	८	सहसा विनाश इत्यादि
१८	२	फाँसी इत्यादि
१९	४	विधवा
२०	८	सधवा

स्वास्थ्य वा आरोग्य रेखा

चित्र	रेखा	फल
४	४	(पितृरेखायुक्त) दुःखी इत्यादि
६	४	वाचाल, बुद्धिमान् इत्यादि
८	२	(मातृरेखायुक्त) दैवीबुद्धि इ०
९	५	(भाग्य मातृ युक्त त्रिकोण) से भविष्यद् वक्ता
१०	५	सुखी इत्यादि
११	५	अव्यवस्थितचित्त, प्रमेहरोगइ०
११	८	अग्निमान्द्य इत्यादि

भाग्य वा ऊर्ध्वरेखा

चित्र	रेखा	फल
१	९	परिचय
२	४	राज्यरोग इत्यादि
३	२	(हल) राजयोग इत्यादि
४	१	(केतु) राजयोग इत्यादि
५	१	(करवाल) राजयोग इत्यादि
६	१	(चाप) ऐश्वर्यशाली इत्यादि
७	१	(गज) राजयोग इत्यादि
८	१	कष्टनिवृत्ति इत्यादि
९	२	शिल्पी (कारीगर)
१०	२	नाटक द्वारा प्रसिद्धि, शास्त्रोपदेशक, विज्ञानोपदे०
११	२	शिल्पीशास्त्रज्ञ इत्यादि
११	१०	(त्रि०) अनायास धनप्राप्ति
१२	२	उच्चाभिलाषी
१३	२	दुर्भाग्यसूचक इत्यादि
१४	२	दरिद्र इत्यादि
१४	५	(यव) मातृ-पितृवियोग इत्या.
१५	२	प्रथमदरिद्र पश्चाद्धनी इत्यादि
१५	५	विवाहरहित इत्यादि
१५	५	स्त्री पुरुष को मोहित करे, पुरुष स्त्री को मोहित करे
१५	६	(त्रिकोण) मातृपितृवियोग इ०
१६	२	त्रिकालज्ञान
१७	१	धननष्ट इत्यादि
१७	३	स्त्रीकष्ट इत्यादि
१७	४	माता-पिता के रहते भी दुःख
१७	५	मातृ-पितृ विनाश
१७	६	असवर्ण पुरुष से स्त्री, असवर्ण स्त्री से पुरुष मोहित
१८	४	परधर्मग्रहण
१८	५	विपत्ति

चित्र	रेखा	फल
१८	६	सांसारिक कष्ट
१६	७	उद्योगरहित
१६	६ ७,८	विधवा
२०	२ १३	सधवा

पितृ, कर्म वा मतान्तर से आयुरेखाफलम्।

चित्र	रेखा	फल
१	१०	परिचय
२	५	वर्णसङ्कर तथा मातृ-पितृसुख इत्यादि।
३	३	मातृ-पितृसुखज्ञान।
४	२	सांसारिक कष्ट और (छिन्न-भिन्न) अव्यवस्थित
५	२	दीर्घजीवी इत्यादि
६	२	अल्पायु इत्यादि
७	२	दीर्घजीवी इत्यादि
७	५	(त्रिकोण) पैतृकधनाधि०इ०
८	२	किसी स्त्री का उत्तराधिकारी इत्यादि
६	३	द्यूत(जुआ)कलह से सम्पत्ति वि
१०	३	स्त्री-पुत्र विनाश
१०	१०	परसम्पत्तिप्राप्ति इत्यादि
११	११	आत्मीयजनवियोग
१३	३	रचना-निपुणता इत्यादि
१४	१०	विद्या में पारङ्गत इत्यादि
१६	६	मातृ-पितृ वियोग इत्यादि
१७	३	स्त्रीवियोग इत्यादि
१८	६	सम्मानपूर्वक प्रतिष्ठा इत्यादि
१६	२	विधवा
२०	३	सधवा

मणिबन्धरेखाफलम्

चित्र	रेखा	फल
१	६ ७ ८	परिचय
२	१ २ ३	धन, शास्त्र, भक्ति
८	६	परिश्रम से द्रव्याप्ति
६	१	(त्रिकोण) परधनप्राप्ति
१०	१	आलसी, दरिद्र
११	१	पापी इत्यादि
१२	१	द्वीपान्तर यात्रा
१३	१	द्वीपान्तरयात्रा में मृत्यु
१४	१	अनायास धनप्राप्ति
१५	१	दूसरे की सहायता से धनप्राप्ति
१६	१	भाग्यहीन
१६	१	विधवा
२०	१	सधवा

अथ शङ्खादिविविधरेखाविचार

चित्र	रेखा	फल
३	८	शङ्खरेखाविचार
३	६	चक्रविचार
३	१०	सीपविचार
१५	६	पर्वविचार
५	६	पर्वविचार
८	७	पर्वविचार
२	६	ललना (स्त्री) रेखाविचार
२	१०	भ्रातृभगिनी रेखाविचार
२	११ १२	सन्तान रेखाविचार
१३	५	पुत्र-पौत्रादिविचार
१६	७	हिंसारेखाविचार
७	१०	हिंसारेखाविचार
३	७	हिंसारेखाविचार

चित्र	रेखा	फल
१६	८	शत्रु-मित्र विचार विद्याप्रद-रेखाविचार उत्तरार्द्ध पृ.१६७ श्लोक ३२,३३ महिला (स्त्री) अर्थरुदनयोग उ० पृष्ठ १६८ श्लोक ३४
५	७	परदारायोग
३	४	(डमरू) याञ्चावृत्ति, वज्र, कुम्भ, रेखाविचार उत्तरार्द्ध पृष्ठ १६८ श्लोक ३४-३५
६	८ ६	(सूर्यचन्द्र) यश-अपयशवि. ८ यश-अपयशविचार
५	६	(मकर-रेखा) झगड़ालू अन्यमत से धनी। (योगावली)
१८	८	भगवदाराधनायोग
१६	३	भक्तियोग
१७	१०	भविष्यद्वक्ता का योग
१६	२	त्रिकालज्ञयोग
१८	१	(योगरेखा) योगी का योग
१८	१	शनिस्थान में त्रिकोण होने से योग में विशेष गौरव प्राप्त हो, उत्तरार्द्धपृष्ठ १७० श्लोक ५।
१२	६	श्रेष्ठपदलाभयोग
१०	१०	परसम्पत्तिलाभयोग
१४	१०	विद्यापारङ्गतयोग– (रेखा ३ या बहु कूट, खण्ड, कुठार, कूर्म से) धनकष्ट पृष्ठ १७१ श्लोक ६।

चित्र	रेखा	फल
१३	११	द्रव्यनाश योग
१३	१०	विवाह से धनप्राप्ति योग (कष्टकर विवाह पृष्ठ१७२ श्लोक१२)
१४	६	अनेकभार्यायोग।
१४	७	स्त्रीवियोग। विवाहविचार तथा दाम्पत्य जीवन, उत्तरार्द्ध पृष्ठ १७३
१४	८ ६	कारागारयोग।
१८	२	फाँसीयोग
१८	३	आत्महत्यायोग
१३	७	अल्पमृत्यु योग
३	६	अकालमृत्युयोग
१५	७	अल्पायु
	८	तीर्थमृत्यु (दीर्घायु,मध्यायु, अल्पायु विचार, उत्तरार्द्ध पृष्ठ १७५-१७७
२	७	अरिष्ट विचार, पृष्ठ ५५ विशेष व्याख्या उत्तरार्द्ध पृष्ठ १७७-१७८)
१३	८	व्यभिचारयोग।
१८	४	परधर्मग्रहणयोग
१७	७	भाग्योदय योग
१२	६	जलमग्नयोग
१६	१०	सुखमयजीवन

(चित्रपरिचय-टिप्पणी सूची)

रेखाओं का माप (नाप) पृ०१२७

चित्र	रेखा	फल
५	८	ग्राम और काननरेखा। (नवीनरेखाओं का उदय)

चित्र	रेखा	फल
		(समान रेखा, समान रेखा कटी नहीं कही जाती, पृ.१६) बाह्य सामुद्रिक पृ.२१-२३ (आवश्यकसूचना पृष्ठ२५-२७) (चूर्णिका पृष्ठ२६) (विशेषसूचना पृष्ठ३१)
१२	७	शैलरेखा पृष्ठ२६। (पञ्च-रेखाज्ञान (नोट) पृष्ठ३३) (सांकेतिक सामुद्रिक पृष्ठ ३५, ३७,३६)
१६	६	आयुरेखा में यवफल। (द्वात्रिंशत् ३२लक्षण,पृ.४१) चक्रवर्तीलक्षण, धन (संख्या-ज्ञान पृ.४३) (नारद-का कहा हुआ रेखा देखने का प्रकार पृष्ठ३७) (नोट पृष्ठ४८) (स्त्रीपुरुषों का शुभाशुभ बोधकचक्र पृष्ठ४८)

परिभाषोक्त शेष रेखा सूची

चित्र	रेखा	फल
३	१	(मत्स्य रेखा) सबका स्वामी
२०	२	(मत्स्य रेखा) सधवा
७	७	(दण्ड) पण्डितश्रेष्ठ
७	८	(छत्र) पुरुषश्रेष्ठ
७	६	(तरु) पण्डितश्रेष्ठ
१७	८	(तुरग) राजलक्ष्मी इ०
१०	६	(वृषभ) कृषिकर्म में निपुण इ०(मन्दिर त्रिकोण को ही मन्दिर कहते हैं परिभाषा प्रकरण पृ.२)
४	८	(पुष्करिणी) पुरुषश्रेष्ठ
४	६	(आदर्श) सर्वश्रेष्ठ
४	१०	(आलबाल) दरिद्र
४	११	(अहि,) शत्रुवृद्धि
५	८	(कानन) उत्तमप्रकृति
५	१०	(कुठार) अत्यन्त दुःखी
६	१०	(ग्राम) सम्पत्तिशाली
१३	८	(जाल) व्यभिचारी इत्यादि
१२	७	(शैल) मण्डलाधीश्वर
१५	८	(पद्म) तीर्थमृत्यु
१६	५	(पद्म)
११	८	(करे०) कल्याणयुक्त
११	६	(घट) राजलक्ष्मी इत्यादि
६	१०	(वीणा) पुरुषश्रेष्ठ
२	१२	(यव अङ्गुष्ठमूलमें) सन्तानयुक्त
२	१३	(अङ्गुष्ठोदर में यव) यशस्वी,

पक्षी, तोमर, बाण, नदी, कूर्म, उपवीत इत्यादि अनेक रेखायें हाथ में होती हैं, जो गुरुपरम्परा इष्टदेव प्रसाद से जानी जाती हैं। ग्रंथविस्तार भय से इनके रूप-स्थानादि नहीं दिखलाये जा सके। इति शम्।

चित्ररेखाओं के बाद ललाट-सम्बन्धी-विचार तथा भालचित्र यथा-वकाश दिखाये गये हैं।

श्रीगणेशाय नमः

सामुद्रिकरहस्य-पूर्वार्द्धस्य विषयाऽनुक्रमणिका

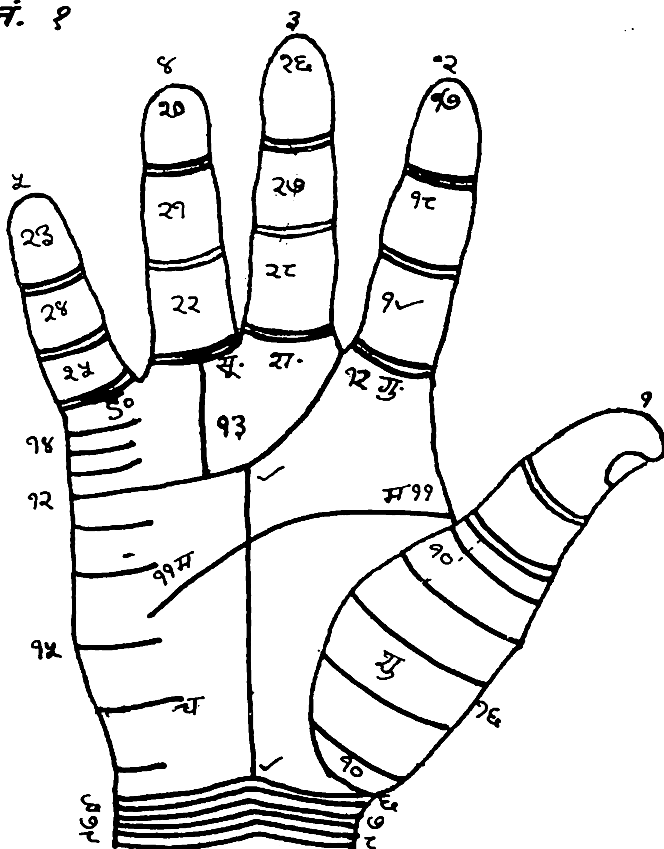
शुभं भूयात्।

साम्बसदाशिवार्पणमस्तु।

।। श्रीमङ्गलमूर्तये नमः ।।

अथ चित्र-परिचयः

चित्र नं. १



१ चित्रपरिचय—

१. इस अङ्क-स्थान को अंगुष्ठ कहते हैं।। ... गों
मध्यमा।। ४ अनामिका।। ५ कनिष्ठा।। ६ ... हो
मणिबन्ध कहते हैं।। ९ उर्ध्वरेखा अथवा भा...

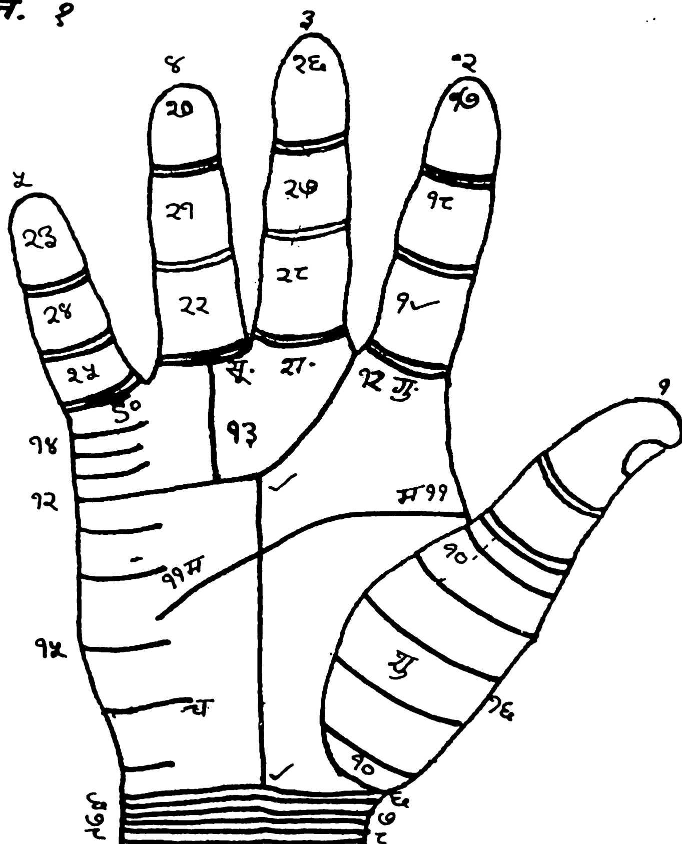
शुभं भूयात्।

साम्बसदाशिवार्पणमस्तु।

//श्रीमङ्गलमूर्तये नमः//

अथ चित्र-परिचयः

चित्र नं. १



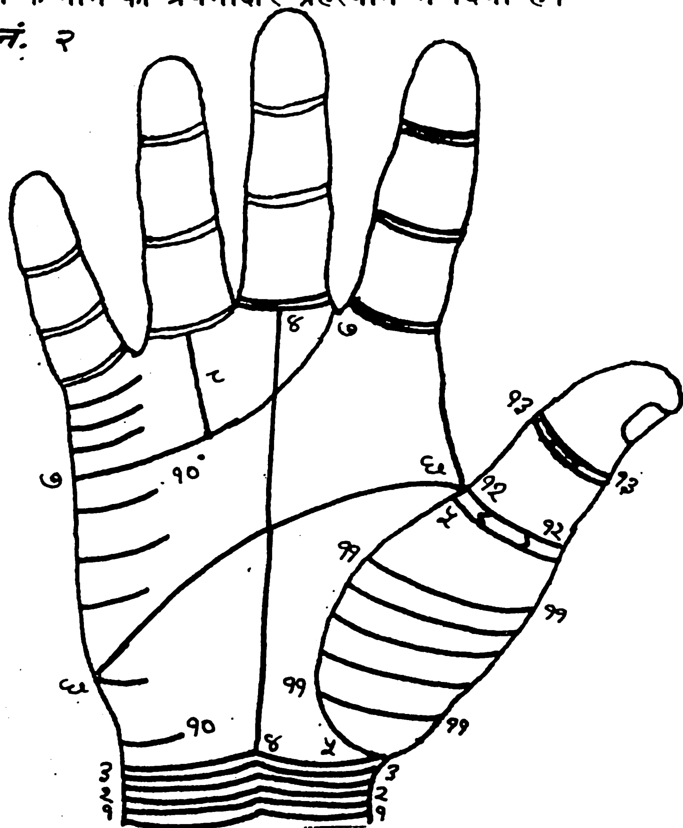
१ चित्रपरिचय—

१. इस अङ्क-स्थान को अंगुष्ठ कहते हैं॥ एवं, २ तर्जनी॥ ३ मध्यमा॥ ४ अनामिका॥ ५ कनिष्ठा॥ ६।७।८ इन स्थानों को मणिबन्ध कहते हैं॥ ९ उर्ध्वरेखा अथवा भाग्य रेखा॥ १० पितृ या

कर्म रेखा मतान्तर से आयु रेखा॥ ११ मातृ या शीर्ष रेखा॥ १२ आयु या स्वान्त रेखा॥ १३ पुण्य या रवि रेखा॥ १४ परिणय या ललना रेखा॥ १५ भ्रातृभगिनी सूचक रेखा॥ आयु रेखा से मणिबन्ध रेखा तक॥ १६ सन्तान सूचक रेखा उच्चस्थान॥ १७ मेष ॥१८ वृष ॥ १९ मिथुन॥ २० कर्क ॥२१॥ सिंह ॥२२ कन्या ॥ २३ तुला॥ २४ वृश्चिक॥ २५ धन॥ २६ मकर॥ २७ कुम्भ॥२८ मीन॥ ये बारहों राशि के स्थान हैं।

ग्रहों के नाम का प्रथमाक्षर ग्रहस्थान में दिया है।

चित्र नं. २



२. चित्राङ्कित रेखाओं के फल—

मणिंबन्ध में प्राय: तीन रेखायें होती है, उनमें—

१ली धन, २ री शास्त्र, ३री भक्ति का जानना। पृष्ठ १५८ श्लोक १। इन तीनों रेखाओं में जो रेखा स्वच्छ, सरल, गम्भीर, स्निग्ध हो और छिन्न-भिन्न न हो तो वह रेखा उस विषय के उत्तम फल को देती है। यदि तीन से अधिक रेखायें हों तो दारिद्र्य और दुर्भाग्य की सूचना देती हैं। पृष्ठ १५८ श्लोक २।

४— ऊर्ध्वरेखा— यदि व्यक्त और अविच्छिन्न हो तो राज्य, मान, प्रतिष्ठा को देती है, पृष्ठ १३५ श्लोक २। यह रेखा मणिबन्ध से लेकर शनि स्थान तक यदि शुद्ध हो तो मनुष्य अत्यन्त सौभाग्यशाली होता है। पृष्ठ १५० श्लोक २।

५— पितृ मतान्तर से आयु रेखा। मातृ-पितृ रेखा यदि परस्पर मिली न हों तो मनुष्य वर्णसङ्कर होता है। दोनों रेखा यदि टेढ़ी, लम्बी, छोटी और छिन्न-भिन्न हों तो मनुष्य को माता-पिता का सुख नहीं होता। पृष्ठ १५४ श्लोक १।

६—मातृ रेखा यदि उत्तम हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, विचार में निपुण, प्रभावशाली और मानसिक बल से युक्त होता है। विपरीत होने से फल विपरीत होता है। पृष्ठ १४६ श्लोक १।

७— आयु रेखा या हृदय रेखा। यदि निर्मल और शुद्ध हो तो मनुष्य शान्तचित्त और दयालु होता है। पृष्ठ १४१ श्लोक १।

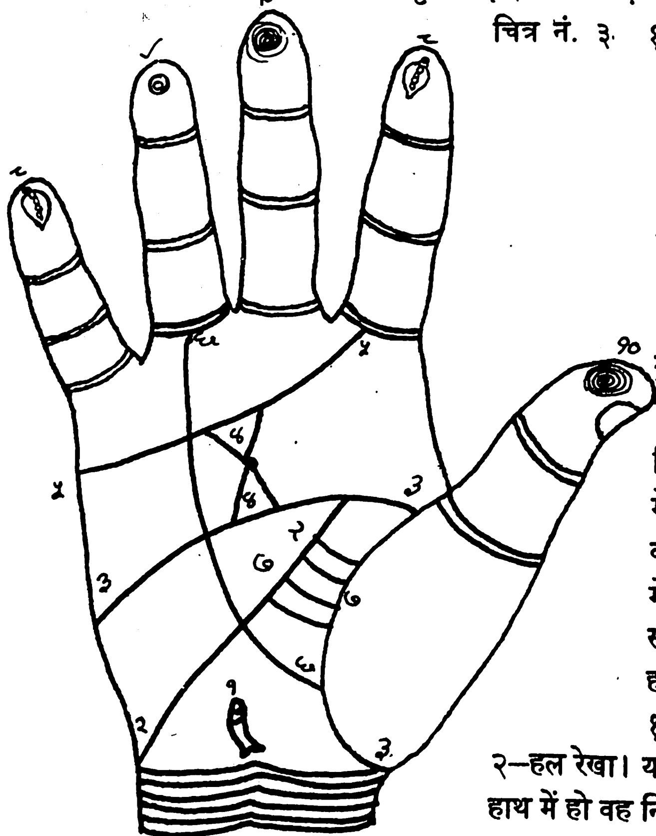
८— सरस्वती या पुण्य रेखा। यह रेखा यदि अपने स्थान पर शुद्ध रूप से हो तो मनुष्य बुद्धिजीवी, धनी, यशस्वी इत्यादि, पृष्ठ १३७-१३८ श्लोक १ में उक्त गुणों से युक्त होता है।

९— ललना रेखा। अन्य मत में— यह रेखा कुशाग्र और मनोहर हो तो मृग पुरुष को एक रेखा से २ और २ से तीन और ३ रेखा से ५ स्त्रियाँ होती हैं, और तुरग पुरुष को १ से दो और दो रेखाओं से १ स्त्री होती है। ग्रन्थान्तरोक्त रीति से सुन्दर जितनी रेखायें हो उतना ही विवाह कहना। पृष्ठ १६३ श्लोक १५-१६।

१०— भ्रातृ-भगिनी, बहिन रेखा। आयुरेखा से नीचे मणिबन्ध रेखा तक मनोहर कर्म-स्थान में जितनी रेखायें हों उतने ही भाई-बहिन कहना। पृष्ठ १६४ श्लोक १७।

११— सन्तान रेखा। उच्च स्थान में मनोहर जितनी रेखायें हों उतने ही लड़की-लड़के होते हैं परन्तु शुद्ध रेखा होने से दीर्घायु और स्वल्प या छिन्न-भिन्न हो तो अल्पायु सन्तान होती है। पृष्ठ १६४ श्लोक १८।

१२— अङ्गुष्ठमूल में यव होने से मनुष्य सन्तान से युक्त होता है। पूर्वार्द्ध पृ.६६ श्लोक २६। वा उत्तरार्द्ध पृष्ठ १६४ श्लोक १८की (टिप्पणी)।



चित्र नं. ३.

१३—अंगुष्ठोदर में यव होने से यशस्वी, अपने कुल का भूषण और विनम्र पुरुष होता है। पृष्ठ १३५ श्लोक ३।

३ चित्राङ्कित रेखाओं के फल

१. मत्स्य रेखा, जिसके करतल में यह रेखा हो वह सब मनुष्यों में श्रेष्ठ और सबका स्वामी होता है। पृष्ठ १३५ श्लोक ४।

२—हल रेखा। यह रेखा जिसके हाथ में हो वह निज कुलानुसार

धनी-मानी और सद्गुणों से युक्त होकर सबका स्वामी होता है। पृष्ठ १३५ श्लोक ५। (इसे भाग्यरेखा भी कहते हैं। क्योंकि भाग्य रेखा ही टेढ़ी होकर हल रेखा हो जाती है।) भाग्यरेखा चन्द्रस्थान से होकर चले तो मनुष्य दूसरे के द्वारा उन्नति प्राप्त करता है। पृष्ठ १५० श्लोक २।

३– पितृ-मातृ ये दोनों रेखायें यदि सुन्दर और स्पष्ट हों तो मनुष्य मातृ-पितृ-सुख से युक्त होता है। ये दोनों जिस वर्ष प्रमाण में कटी हों उस वर्ष में उनके लिये कष्ट कहना। पृष्ठ १५४ श्लोक २।

४– डमरू। इस रेखा से मनुष्य याञ्चा (भिक्षा) वृत्ति से अपना उदर-पोषण करता है। पृष्ठ १६८ श्लोक ३५।

५– यह आयु रेखा यदि गुरुस्थान से बुधस्थान तक जाय तो मनुष्य मानसिक पीड़ा और संदिग्ध चित्तवाला होता है। पृष्ठ १४१ श्लोक २।

६– सरस्वती रेखा। यह पितृ रेखा से मिली हो तो मनुष्य शिल्पसाहित्य में दक्ष (कुशल) होता है और नाटक विषय में प्रतिभाशाली होता है। पृष्ठ १३८ श्लोक २।

७– हिंसा। इस रेखा के द्वारा मनुष्य गो, बालक, स्त्री और धनादि से दुःखी होकर शत्रुओं से युक्त होता है। पृष्ठ १६५ श्लोक २१-२२। हिंसा रेखा कई प्रकार की होती है।

अन्यमत से

(इस ढंग की रेखायें मातृ-पितृ रेखा के बीच में हों तो उस मनुष्य को निकटवर्ती (नगीची) जनों से शत्रुता होती है। यदि बीच में अन्य तिर्छी रेखा से कटी हों तो वह मनुष्य हत्यारा होता है और उसे प्राणदण्ड व देश-निर्वासन का दण्ड मिलता है।

जब हिंसा रेखा कटी हो तथा पुण्य रेखा सुन्दरी हो तो मनुष्य पुण्यात्मा और यदि पुण्य रेखा न हो या छिन्न-भिन्न हो तो मनुष्य पापी होता है। हिंसा रेखा होने पर इसका विचार करना चाहिए, अन्यथा नहीं।

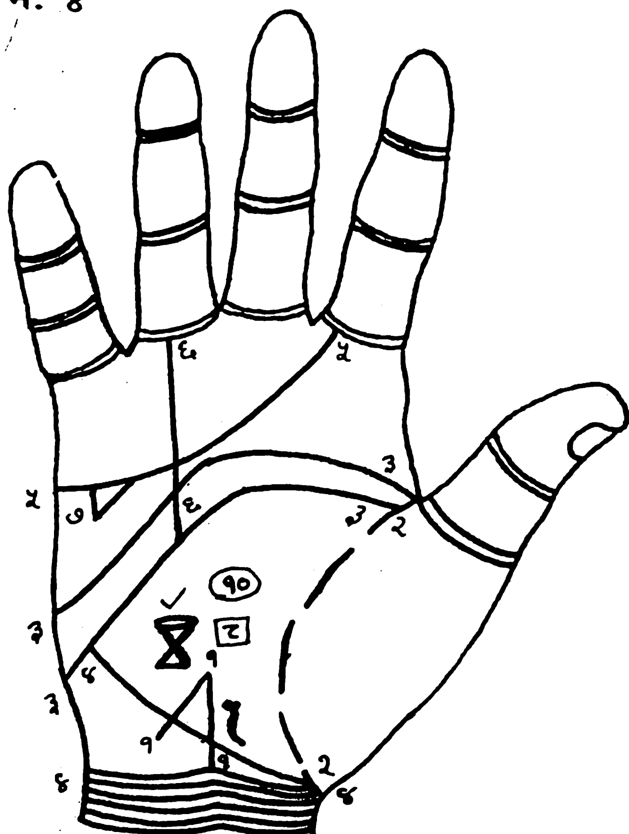
नोट— वड़ी रेखाओं में एक लम्बे यव का मान १० वर्ष के वरावर होता है। (हल, आयु, मातृ, पितृ, उर्ध्वादि रेखाएँ बड़ी कहलाती हैं) पृष्ठ १२८-१२९।

८– शङ्ख- १ से १० शङ्ख तक का फल पृष्ठ १६० श्लोक १-२-३ तक देखिए।

९– चक्र- इसका भी १ से १० तक की फलश्रुति पृष्ठ १६१ श्लोक ४-५-६ में देखिए।

१०– सीप- इसका फल पृष्ठ १६१-१६२ श्लोक ७-८-९ में देखिए।

चित्र नं. ४



४ चित्राङ्कित रेखाओं के फल—

१– केतु या ध्वजा रेखा। जिसके हाथ में यह रेखा हो तो

वह मनुष्य श्रीमान् होता है और हाथी, घोड़े, तथा अन्यान्य वाहनों के सुख का उपभोग करता है। पृष्ठ १३६ श्लोक ६।

२— पितृ रेखा। यह यदि मलिन, छिन्न-भिन्न हो तो मनुष्य मन्द बुद्धि इत्यादि दुर्गुणों से युक्त होकर दुःखमय जीवन व्यतीत करता है। यही जिस वर्ष के मान में कटी हो तो उस वर्ष में सांसारिक महान् कष्ट या मृत्यु होती है। कहीं-कहीं छिन्न और कहीं सूक्ष्म हो तो वह अव्यवस्थित चित्त का पुरुष होता है। पृष्ठ १५५ श्लोक ४-५।

अथवा

(पितृरेखा नं.२, मातृरेखा नं. ३ ये दोनों आपस में मिली न हों और किसी शाखा से युक्त भी न हों तो वह मनुष्य झूठा, लालची, अभिमानी, निर्दय और क्षणिक बुद्धिवाला होता है, तथा उसका जीवन कष्ट से व्यतीत होता है)

३— मातृरेखा। दो हो तो मनुष्य अव्यवस्थित चित्तवाला होता है अर्थात् कभी दयालु, कभी क्रूर। पृष्ठ १४७ श्लोक ३।

४— स्वास्थ्य रेखा। यह रेखा पितृ रेखा से युक्त हो तो मनुष्य चिन्ता और दुःख से युक्त होता है। यह पितृ रेखा से न मिलकर स्वच्छ हो तो मनुष्य दीर्घायु और बलवान् होता है। पृष्ठ १४८ श्लोक १।

५— स्वान्त या आयु रेखा। यह मातृ रेखा युक्त हो तो मनुष्य लोभी, हिंसक और ठग होता है। पृष्ठ १४२ श्लोक ४।

६—सरस्वतीरेखा। यह रेखा यदि भौम स्थान तक गई हो तो मनुष्य अति परिश्रमी और परिश्रम से द्रव्य प्राप्त करनेवाला होता है।पृ.१३७-१३८श्लो.४।

७— त्रिकोण रेखा । यदि आयु रेखा से युक्त हो तो पुरुष अपने पुरुषार्थसे गृह, भूमि और वाटिका आदि अनेक ऐश्वर्य प्राप्त कर सुखी होता है। पृष्ठ १६६ श्लोक २८।

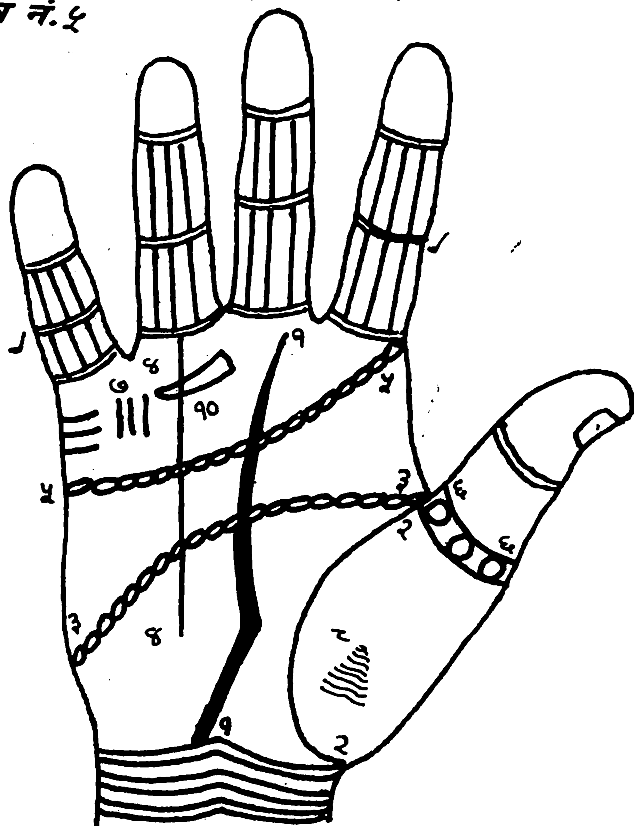
८— चतुष्कोण या पुष्करिणी रेखा। लघुचतुष्कोण होने से वपुरेखा और बृहच्चतुष्कोण होने से पुष्करिणी रेखा कही जाती है। यह जिस प्राणी के हाथ में होती है वह सब पुरुषों में श्रेष्ठ और सबका स्वामी होता है। कुलानुमान से इसका विचार करना उचित है। पृष्ठ १३५ श्लोक ४।

९– आदर्श रेखा। यह किसी बड़ी रेखा से मिले तो डमरू अन्यथा आदर्श जानना चाहिए। जिस पुरुष के कर-कमल में यह रेखा विद्यमान हो तो वह निजकुलानुसार पृथ्वी का स्वामी और सब में श्रेष्ठ होता है। पृष्ठ १३५ श्लोक ५।

१०– आल-बाल. रेखा। करमध्य में यदि यह रेखा हो तो मनुष्य दुःखी और दरिद्री होता है। पृष्ठ १२४ पंक्ति १७ परिभाषा प्रश्न में।

११– अहि रेखा। जिस मनुष्य के हाथ में यह रेखा हो वह शत्रुओं से युक्त होता है। पृष्ठ १६५-१६६ श्लोक २४।

चित्र नं. ५



५. चित्र परिचय—

१— करवाल. रेखा। उर्ध्वरेखा यदि टेढ़ी, मोटी और कुशाग्र हो तो करवाल होता है। जिसके करकमल में यह रेखा सुशोभित हो वह प्राणी कुलानुसार प्रतापी और भाग्यशाली होता है। पृष्ठ १३५ श्लोक ५।

२— पितृ रेखा। यह रेखा लम्बी हो तो मनुष्य प्रतिज्ञाशून्य और चञ्चल होता है। पृष्ठ १५४ श्लोक ३।

(अथवा जिसके हाथ में पितृरेखा तलवार के सदृश टेढ़ी होकर नीचे की ओर झुकी हो तो वह पुरुष प्रतापी, विजयी तथा दीर्घजीवी होता है।

३— मातृरेखा शृङ्खलाकार हो तो मनुष्य प्रतिज्ञाशून्य और चञ्चल होता है। पृष्ठ १४६ श्लोक २।

४— सरस्वती रेखा सूर्य स्थान से चन्द्र स्थान तक जाय और मातृ रेखा भी शुद्ध रूप से चन्द्र स्थान तक जाय तो मनुष्य पद्यरचना में निपुण और कवि होता है। पृष्ठ १३८ श्लोक ३।

५— स्वान्त या आयु रेखा। यह रेखा यदि मलिन और शृङ्खलाकार हो तब मनुष्य धूर्त और ठग होता है। पृष्ठ १४१ श्लोक ३।

६— अंगुष्ठोदर में मकर रेखा के होने से मनुष्य झगड़ालू होता है। पृष्ठ १६८ श्लो. ३६ $\frac{१}{२}$ किसी के मत से धनी भी होता है। पूर्वार्ध पृ.६७ श्लो. ३५।

७— जार रेखा। ललना रेखा के ऊपर तिर्य्यग्गामिनी रेखाओं को जार रेखा कहते हैं। इस रेखा के होने से मनुष्य परस्त्रीगामी होता है। पृष्ठ १६८ श्लोक ३४।

८— कानन * रेखा के उच्च स्थान पर होने से मनुष्य उत्तम प्रकृति का होता है, अन्य मत से समझना।

* *श्लोक*—ग्रामरेखा सनाथो वै पुरुषो बहुद्रव्यवान् ।
काननाङ्कयुतो मर्त्यः लभते प्रकृतिं शुभाम् ।।१।।
पुंसां पाणौ तुला स्याच्चेद् वणिजां वृत्तिधारकाः ।
कृषिकर्मसु निपुणः पुरुषाः वृषभांकिताः ।।२।।

नोट— जिन रेखाओं के मूल श्लोक ग्रन्थ में अवशिष्ट रह गये हैं, उनको यथावकाश टिप्पणी में दिया जायेगा।

९— पर्व रेखा। मनुष्यों को चारों अंगुलियों में ऊर्ध्वगामिनी जितनी रेखाएँ हों संख्यानुसार उनके पृथक् २ फलों को श्लोक १०-११-१२-१३-१४ पृष्ठ १६२ और १६३ में देखना।

१०— कुठार रेखा। इस रेखा से मनुष्य अत्यन्त दुःखी होता है। पृष्ठ १३२ पंक्ति १९।

(इस रेखा के रहने से मनुष्य स्त्री, पुत्र, धन, मान, प्रतिष्ठादि से हीन होकर दुःखमय जीवन व्यतीत करता है)।

चित्र नं. ६

६. *चित्र परिचय—*

१— चाप रेखा। जिसके कर व चरण में यह (धनु) रेखा विराजमान हो वह मनुष्य ऐश्वर्यशाली होता है। पृष्ठ १३६ श्लोक ६।

२— पितृरेखा के लघु वा भग्न होने से मनुष्य की आयु अल्प होती है। पृष्ठ १५५ श्लोक ६।

३— मातृरेखा। जिसके हाथ में यह छोटी २ रेखाओं से छिन्न-भिन्न होती हुई मणिबन्ध तक चली जावे तो वह मनुष्य आत्मघात करता है। पृष्ठ १४७ श्लोक ४।

४— स्वास्थ्य रेखा। जिसके हाथ में यह रेखा मध्य भाग से चले वह मनुष्य बुद्धिमान्, वाचाल और चपल होता है। पृष्ठ १४८ श्लोक २।

५— सरस्वती रेखा। शुद्ध हो तथा मध्यमा और अनामिका दोनों बराबर लम्बी हों तो मनुष्य जुआ और व्यापार में चतुर होता है। पृष्ठ १३९ श्लोक ५।

६— मातृरेखा में त्रिकोण होने से मनुष्य मातृकुल (ननिहाल) की सम्पत्ति को प्राप्त करता है। छोटा कोण हो तो स्वल्प और बड़ा त्रिकोण हो तो अधिक सम्पत्ति का द्योतक होता है। पृष्ठ १६६-१६७ श्लोक २९-३०।

७— तुला रेखा। यह रेखा जिस मनुष्य के हाथ में हो वह व्यापारी और धनी होता है। स्त्री के हाथ में यह रेखा हो तो वह बनिया की स्त्री होती है। पृष्ठ ७५-७६ श्लोक २६ पूर्वार्द्ध।

८— माला रेखा। यह रेखा जिस मनुष्य के पाणि मध्य में विराजमान हो वह ऐश्वर्यशाली तथा मतान्तर से भक्त होता है। पृष्ठ १३५ श्लोक ५।

सूचना— १. मनुष्यों के हाथ में प्रायः दो-तीन वर्षों में नूतन छोटी छोटी रेखायें उदित हुआ करती हैं। ये भावी विशिष्ट शुभाशुभ फलों को दर्शाती हैं।

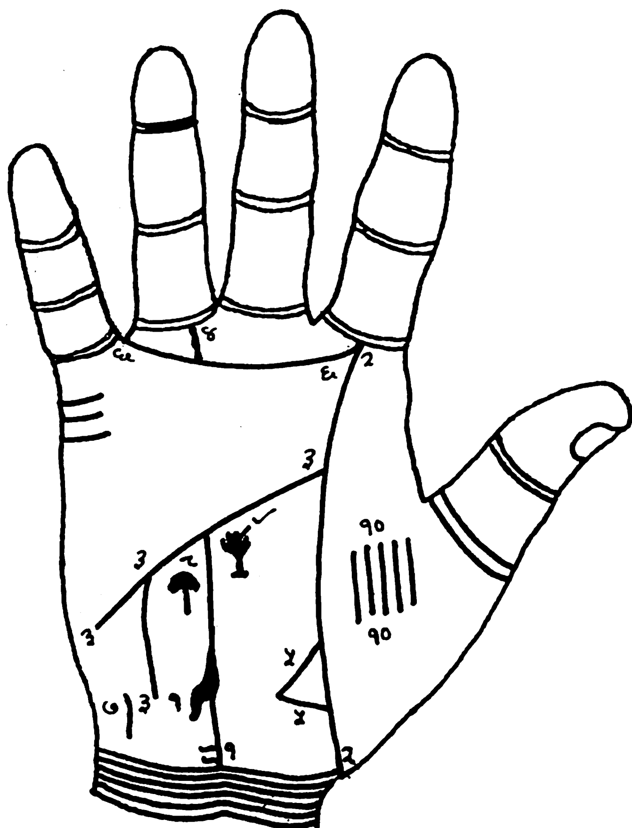
२. समान रेखा से समान रेखा कटी नहीं कही जाती। जैसे ऊर्ध्वरेखा से मातृ और आयु रेखा तथा पुण्य रेखा से आयु मातृरेखा इत्यादि। उदाहरण चित्र ९ नं. २ रेखा से नं. ४। ६ मातृ और हृदय रेखा कटी नहीं कही जा सकती।

९– रथ रेखा। इस रेखा के द्वारा मनुष्य राजसुख का उपभोग करता है। पृष्ठ १३६ श्लोक ६।

१०– ग्राम * रेखा के होने से मनुष्य सम्पत्तिशाली और धनी होता है अन्य मत से।

११– स्वान्त रेखा। शाखाओं से रहित होकर शनिस्थान तक जाय तो मनुष्य अल्पायु होता है। पृष्ठ १४२ श्लोक ५।

चित्र नं. ७



* चित्र ५ की टिप्पणी में देखिए।

७. चित्र परिचय

१– गज रेखा। जिस मनुष्य के हाथ में यह रेखा सुशोभित हो वह सब पुरुषों में श्रेष्ठ और महान् ऐश्वर्यवाला होता है। पृष्ठ १३५ श्लोक ४।

२– पितृ रेखा। मणिबन्ध से उठकर शुद्धरूप से गुरुस्थान तक चली जाय तो मनुष्य उच्चाभिलाषी, दीर्घजीवी और अनेक सत्प्रतिष्ठा प्राप्त कर कृतकृत्य होता है। पृष्ठ १५५-१५६ श्लोक ६-७।

३– मातृ रेखा। दो खण्ड होकर एक शाखा चन्द्रस्थान तक जावे तो मनुष्य के अभीष्ट की सिद्धि होती है– इसी रेखा का शेष भाग टेढ़ा होकर सिन्धु स्थान तक जाय तो मनुष्य कल्पना-शक्ति में दक्ष और गुप्त विद्याओं का ज्ञाता होता है। पृष्ठ १४७ श्लोक ५।

४– पुण्य रेखा। जिस मनुष्य के कर-कमल में यह रेखा स्पष्ट हो, बुध और गुरुस्थान उच्च हो तो उसकी प्रतिष्ठा, भाग्य तथा बुद्धि की वृद्धि होती है। वह शास्त्र परिशीलन में निमग्न रहता है। पृष्ठ १३९ श्लोक ६।

५– पितृ रेखा में त्रिकोण। जिस मनुष्य के पितृ रेखा में त्रिकोण हो वह पैतृक सम्पत्ति का अधिकारी होता है। पृष्ठ १६६ श्लोक २९।

६– आयु या स्वान्त रेखा। यह रेखा अनामिका के मूल से उठे और सूक्ष्म हो तो मनुष्य सदा कष्ट से युक्त और अधिक परिश्रम से द्रव्योपार्जन करता है। पृष्ठ १४२ श्लोक ६।

७– दण्ड रेखा। यह रेखा जिसके करतल में हो वह राज्य-श्री का भोगने वाला और पण्डितों में श्रेष्ठ होता है। पृष्ठ १३६ श्लोक ७।

८– छत्र रेखा। यह रेखा हाथ में हो तो वह सब पुरुषों में श्रेष्ठ और सबका स्वामी होता है। पृष्ठ १३५ श्लोक ४।

***वाह्य सामुद्रिक*—मनुष्यों की आयु का चार भाग कर प्रथम भाग में माता-पिता सम्बन्धी, द्वितीय भाग में स्त्री, पुत्र, विद्या इत्यादि सम्बन्धी, तृतीय भाग में राज्य सम्बन्धी (नौकरी, मान, प्रतिष्ठा इत्यादि), चतुर्थ भाग में पुत्र पौत्रादि सुख, कीर्ति, तीर्थाटनादिका, शुभाशुभ फल, शुभाशुभ रेखाओं के द्वारा वर्णन करना समुचित होगा।**

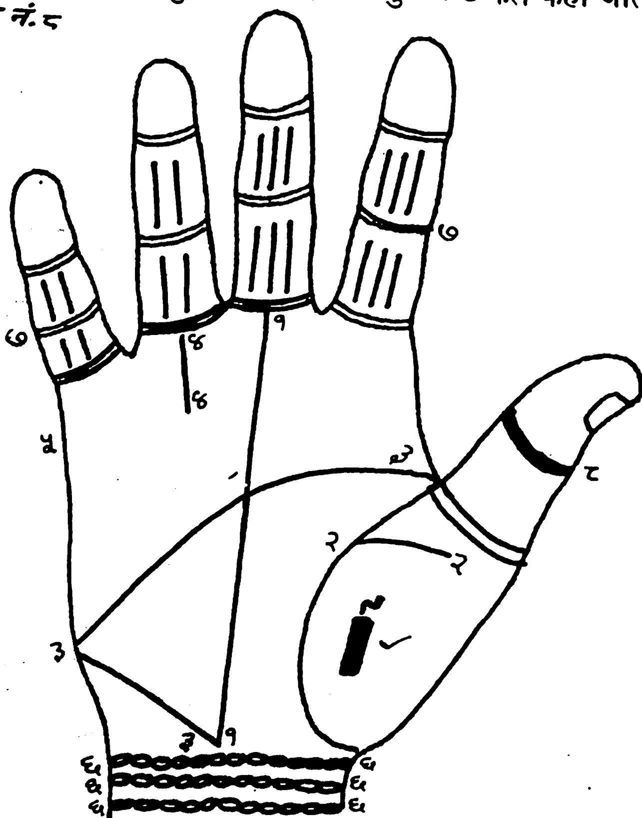
९– तरु रेखा। इस रेखा का फल दण्ड रेखा के समान होता है। पृष्ठ १३६ श्लोक ७।

१०– हिंसा रेखा। इस रेखा के हाथ में रहने से मनुष्य धन, पुत्र, स्त्री से दुःखी रहता है, इसका फल शान्तिपूर्वक कहना चाहिए। यह उच्चस्थान में होने वाली रेखा हिंसा नाम से प्रसिद्ध है। पृष्ठ १६५ श्लोक २०-२१-२२।

अथवा

(हिंसा रेखा अधिक होने से मनुष्य के सामने ही बहुत प्राणियों का वियोग होता है। इस दुष्ट रेखा के द्वारा बहुत नेष्ट फल कहा जाता है।)

चित्र नं. ८



८. *चित्र परिचय*

१— भाग्य रेखा मणिबन्ध से लेकर मध्यमा अङ्गुली के मूलपर्य्यन्त शुद्धरूप से विराजमान हो तो मनुष्य सम्पूर्ण ऐश्वर्य से युक्त होकर भाग्यशाली होता है। पृष्ठ १५० श्लोक २। भाग्यरेखा सरल और शुद्ध हो तो मनुष्य का सम्पूर्ण कष्ट शीघ्र नष्ट होता है। पृष्ठ १५२ श्लोक ६।

२— पितृरेखा से कोई रेखा उठकर शुद्धरूप से शुक्रस्थान तक जाय तो मनुष्य किसी स्त्री का उत्तराधिकारी होकर सम्पत्तिशाली होता है। पृष्ठ १५६ श्लोक ७-८।

३— स्वास्थ्य रेखा मातृरेखा से युक्त होकर त्रिकोण बन जाय तो मनुष्य कीर्तिमान्, गुप्तविद्याओं का ज्ञाता, दैवी बुद्धिवाला तथा प्रभावशाली होता है। पृष्ठ १४६ श्लोक ३।

४— सरस्वती रेखा पुष्ट हो और ग्रहों के स्थान नीच हों तो मनुष्य दूसरे का धन पाता है। पृष्ठ १४०- श्लोक ७।

५— आयु— (स्वान्त) रेखा जिस मनुष्य के हाथ में न हो तो वह प्राणी कपटी और स्वाभाविक दुर्वृत्त होता है। (कुछ लोगों का कथन है कि इस रेखा के न होने से मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। परन्तु प्रायः देखा जाता है कि इसके बिना भी प्राणी जीवित रहते हैं। किन्तु इसके न रहने से वे कपटी और दुराचारी ही होते हैं)। पृष्ठ १४३ श्लोक ७।

६— मणिबन्ध की तीनों रेखायें यदि शृङ्खलाकार हों तो मनुष्य परिश्रम से द्रव्य प्राप्त करता है। पृष्ठ १५८ श्लोक २-३।

७— पर्व रेखा। अङ्गुलियों में पर्व रेखा की संख्याओं का फल ६ से २१ रेखा तक पृथक् २ चित्र ५ नं. ६ के अनुसार समझना। यह रेखा ऐसी भी होती है।

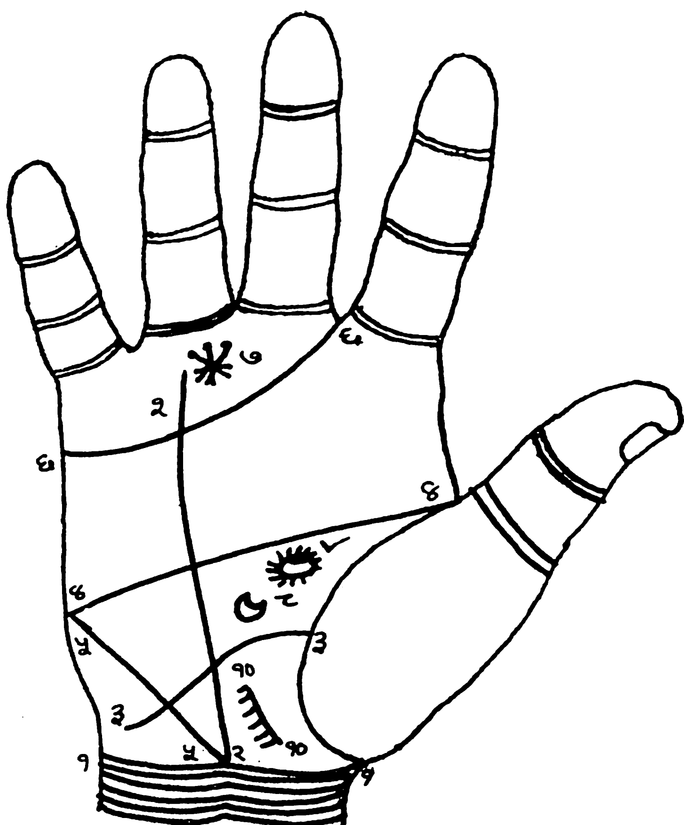
बाह्य सामुद्रिक— दिन तथा रात्रि के समान मनुष्यों के सुख के बाद दुःख, दुःख के बाद सुख का प्रायः ६-७-३-२ वर्षों में परिवर्तन होता है, जो रेखा तथा लक्षण द्वारा जाना जाता है। पूर्वार्द्ध में ४ प्रकार के पुरुष, ४ प्रकार की स्त्रियों के शुभाशुभ वर्षों का निर्णय हो चुका है।

८— जिस मनुष्य का अङ्गुष्ठ यव रेखा से शून्य हो वह मनुष्य यश-हीन होता है। पृष्ठ १६८ श्लोक ३६।

(यदि अंगुष्ठमूल में ताम्रवर्ण यव रेखा हो तो मनुष्य धन से युक्त होताहै, और अंगूली का सम्पूर्ण पर्व लम्बा हो तो मनुष्य पुत्र करके युक्त होता है)।

९— वेदी रेखा। यदि उच्च स्थान (अंगुष्ठमूल) में शोभित हो तो मनुष्य अग्निहोत्री होता है। पूर्वार्द्ध पृष्ठ ६७ श्लोक ३५।

चित्र नं. ६



६. *चित्र परिचय*

१– मणिबन्ध रेखा में यदि त्रिकोण हो तो मनुष्य दूसरे का धन, प्रतिष्ठा और सम्मान प्राप्त करता है। पृष्ठ १५६ श्लोक ४।

(यदि मध्यमा अंगुली अथवा अंगुष्ठ में ताम्रवर्णका पूर्ण यव हो या तर्जनी तथा मध्यमा में चक्रचिह्न हो तो मनुष्य को अनायास दूसरे का धन प्राप्त होता है।)

२– भाग्य रेखा मणिबन्ध से लेकर सूर्यस्थान तक हो तो पुरुष शिल्प (कारीगरी), काव्य तथा नाटक के द्वारा उन्नति प्राप्त करता है। पृष्ठ १५० श्लोक ३।

३– यह आरोग्य रेखा को स्पर्श करती हुई अधोमुखी होकर चन्द्रस्थान तक जाय तो प्राणी मूर्ख हो जड़तावश द्यूत या कलह के द्वारा सम्पूर्ण सम्पत्ति थोड़े काल में नष्ट कर देता है। पृष्ठ १५६-१५७ श्लोक ९-१०।

४– यह आरोग्य रेखा से मिलकर त्रिकोण बनाती है।

५– स्वास्थ्य रेखा, भाग्य तथा मातृरेखा से मिलकर त्रिकोणाकार होने से मनुष्य स्वाभाविक भविष्यवक्ता तथा अलौकिक कार्य करने वाला तत्त्वज्ञानी होता है। पृष्ठ १४६ श्लोक ४।

६– आयुरेखा के गुरु तथा शनिस्थान के बीच में होने से मनुष्य जन्मभर सौभाग्यशाली होता है। पृष्ठ १४३ श्लोक ८।

७– पुण्यरेखा के ऊपर यदि तारक चिह्न हो तो मनुष्य बान्धव के द्वारा अर्थलाभ करता है। पृष्ठ १४० श्लोक ८।

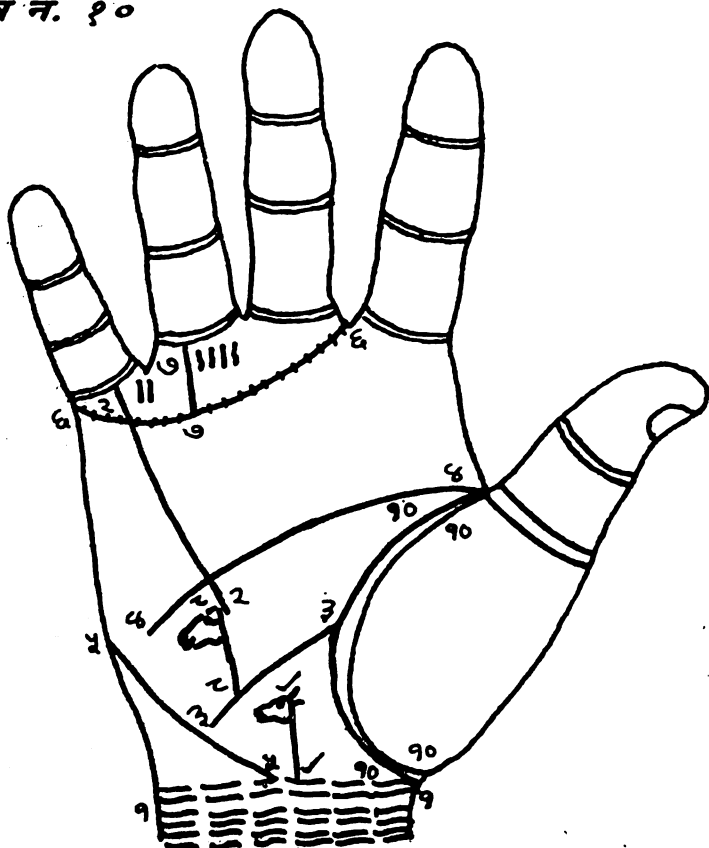
आवश्यक सूचना– १. इस ग्रन्थ में अवान्तर भेद के साथ शशकादि चार प्रकार के पुरुष। पद्मिन्यादि चार प्रकार की स्त्री जाति द्वारा फलनिरूपण- संक्षिप्त नखशिख वर्णन तथा रेखाओं के द्वारा शुभाशुभ फल कहा गया है।

प्रायः एकदेशीय फल यथार्थ नहीं घटते जैसे नखशिख प्रकरण के मसक वर्णन में उक्त 'कपोले बहुपुत्रकः' इसी वाक्य को लेकर फल में बहुत सन्तान वाला न कहना चाहिए किन्तु रेखा के द्वारा भी सन्तानयोग निश्चित कर लेना चाहिए।

८– चन्द्र या ९ सूर्य-रेखा कर मध्य में जिसके हों वही प्राणी-यशस्वी होता है। पृष्ठ १६८ श्लोक ३६।

९– वीणा रेखा जिस प्राणी के हाथ में शोभती हो वह सब पुरुषों में श्रेष्ठ और सब का स्वामी होता है। पृष्ठ १३५ श्लोक ४।

चित्र नं. १०



१० चित्र परिचय

१– मणिबन्ध की तीनों रेखाओं के छिन्न-भिन्न होने से मनुष्य दरिद्र, आलसी और निरुद्योगी होता है। पृष्ठ १५९ श्लोक ४।

२– भाग्यरेखा मध्य भाग से उठकर बुधस्थान तक जाय तो पुरुष शास्त्र और विज्ञान विषय का उपदेश करता है। पृष्ठ १५० श्लोक ३।

३– पितृरेखा से कोई रेखा उठकर अधोमुखी होती हुई चन्द्रस्थान तक जाय तो मनुष्य के शेष जीवन में उसके द्रव्य, स्त्री-पुत्रादि का विनाश जानना। पृष्ठ १५६ श्लोक ८-९।

४– मातृरेखा लम्बी और सूक्ष्म हो तो मनुष्य विश्वासरहित और धूर्त होता है। पृष्ठ १४६ श्लोक २।

५– स्वास्थ्य रेखा यदि किञ्चित् रक्तवर्ण (गुलाबी) हो तो मनुष्य प्रमोदप्रिय और निरोग रहकर सुखादि का अनुभव करता है। पृष्ठ १४८ श्लोक १।

६– आयुरेखा शुद्ध न हो तो मनुष्य अल्पायु होता है और हृदय की पीड़ा से उसकी मृत्यु होती है। यही प्रत्येक स्थान में कटी हो तो मनुष्य स्त्रीद्वेषी, चञ्चल और हृदयरोगी होता है। पृष्ठ १४३ श्लोक ७-८।

७– सरस्वती रेखा बहुत रेखाओं से युक्त हो तो शिल्प-विद्या में निपुण होने पर भी द्रव्य प्राप्ति की चेष्टा मनुष्यों की विफल हो जाती है। पृष्ठ १४० श्लोक ७।

८– यह तुरग रेखा जिसके हाथ में हो वह अखण्ड राजलक्ष्मी का भोगनेवाला और पण्डितों में श्रेष्ठ होता है। पृष्ठ १३६ श्लोक ७।

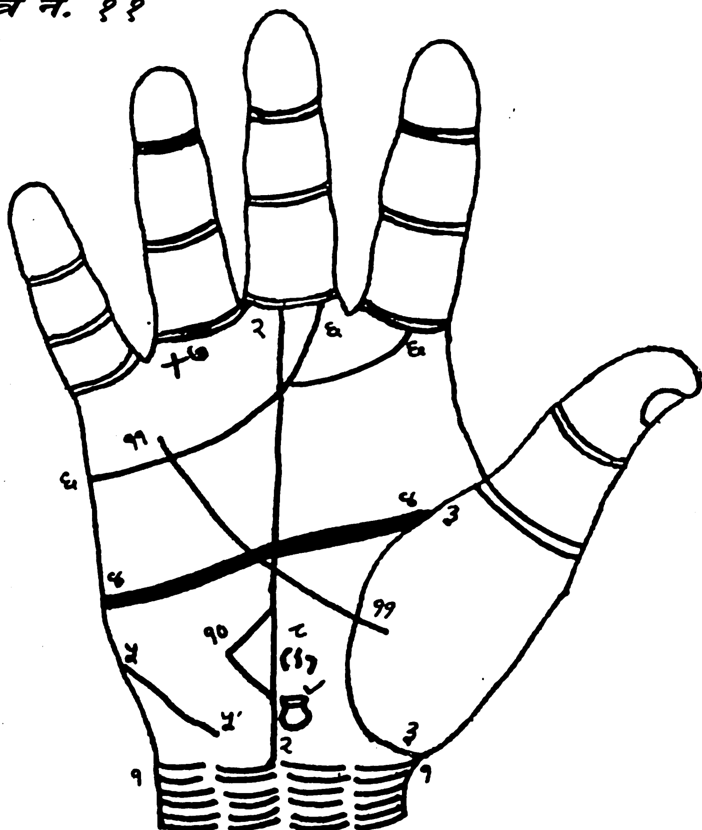
९– यह वृषभ * रेखा जिस स्त्री के हाथ में हो वह वणिक्पत्नी होती है। मनुष्य के हाथ में हो तो कृषि-कर्म में निपुण होता है, पृष्ठ ७५-७६ श्लोक २६।

आवश्यक सूचना—साधारण मृग पुरुषों को पाँच भाई, पाँच पुत्र, दो स्त्री इत्यादि फलों का वर्णन है परन्तु चित्रिणी स्त्री के साथ इनका सम्बन्ध होने से उक्त फल यथार्थ घटते हैं, अन्यथा फल में अन्तर पड़ जाता है। पूर्वार्द्ध पृष्ठ ५७ में मेलापक विचार देखिये। अतः लक्षण तथा रेखा का मिलान करते हुए विचारपूर्वक फल कहना श्रेयस्कर होगा। लक्षण से रेखा प्रधान मानी जाती है।

* चित्र ५ की टिप्पणी में देखिए।

१०– अपरा पितृरेखा होने से मनुष्य दूसरे की सम्पत्ति प्राप्त करता है। पृष्ठ १७१ श्लोक ७।

चित्र नं. ११



११. चित्र परिचय

१– मणिबन्ध की रेखा छिन्न-भिन्न हो और ऊर्ध्वरेखा इससे मिली हो तो मनुष्य पापी, दुष्टात्मा, मिथ्याभाषी और अहंकारी होता है। पृष्ठ १५६ श्लोक ५।

२– भाग्यरेखा तथा अनामिका उत्तम (सरल, सूक्ष्म, सुन्दर) हो

तो मनुष्य शिल्प शास्त्रों में अत्यन्त चतुर होता है। पृष्ठ १५० श्लोक ४।

३– पितृ रेखा।

४– मातृरेखा। यदि इस प्रकार चौड़ी और कृष्णवर्ण हो तो मनुष्य लोभी, उदररोग युक्त और आलसी होता है। पृष्ठ १४६ श्लोक २।

५– स्वास्थ्य रेखा। यह रेखा चन्द्रस्थान तक चली जाय तो मनुष्य अव्यवस्थित चित्त का और प्रमेह रोगवाला होता है। पृष्ठ १४९ श्लोक ४।

६– स्वान्त रेखा। इसकी दो शाखाओं में एक शनि और दूसरी गुरुस्थान तक जाय तो मनुष्य धर्मोन्मादी होता है, और उसका श्रम विफल होता है। पृष्ठ १४३ श्लोक ६।

७– पुण्यरेखा को (+) घातचिह्न स्पर्श करे तो मनुष्य निरन्तर धर्म में श्रद्धा रखता है। पृष्ठ १४० श्लोक ८।

८– कररेखा होने से मनुष्य कल्याण युक्त (सर्व सुख से युक्त) रहता है।

९– घट रेखा। इस रेखा से मनुष्य अखण्ड राजलक्ष्मी का सुख भोगनेवाला और पण्डितों में श्रेष्ठ होता है। पृष्ठ १३६ श्लोक ७।

१०– भाग्यरेखा, त्रिकोणयुक्त हो तो मनुष्य को अनायास धन मिलता है। पृष्ठ १६७ श्लोक ३०।

११– शुक्रस्थान से कोई रेखा उठकर पितृ-मातृ और स्वान्त रेखाओं को भेदन करे तो आत्मीयजन तथा माता-पिता का उसी वर्ष-प्रमाण में वियोग होता है। पृष्ठ १५७ श्लोक १०-११।

चूर्णिका: १– विनाशयुक्ताश्च कुतः फलानि ?।

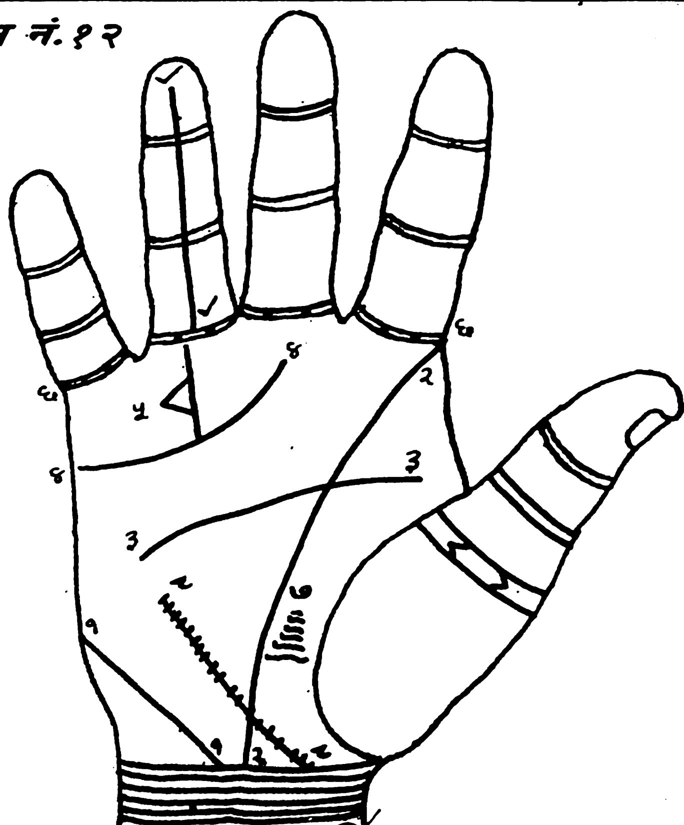
२– कुशाग्ररेखाश्च कुतो दरिद्रता ?।

३– मूलं निहत्याऽत्र कुतः सुखी स्यात्?।

४– विनाशयुक्त अर्थात् छिन्न-भिन्न रेखायें अपने शुभ फल को नहीं देती हैं।

५– कुश के समान अग्र भागवाली सुन्दर रेखाओं के रहने से मनुष्य दरिद्र नहीं होते हैं।

६– मूल (भाग्यादि शुभ) रेखाओं के न होने से मनुष्य सुखी नहीं रहते।



१२ चित्र परिचय

१– मणिबन्ध से यह रेखा चन्द्रस्थान तक जाय तो मनुष्य जल-मार्ग से द्वीपान्तर की यात्रा करे। पृष्ठ १५६ श्लोक ५।

(अथवा यही रेखा ऊर्ध्व रेखा के रूप में होकर दो-तीन की संख्या में हो तो मनुष्य जहाज का काम करनेवाला होता है। यदि ये ही रेखायें हाथ में बहुत दूर तक जाय तो समुद्र में ही उसकी मृत्यु होती है।)

२– भाग्यरेखा गुरु स्थान तक गई हो तो मनुष्य ऊँची अभिलाषा वाला और शान्त प्रकृति का होता है। पृष्ठ १५१ श्लोक ५।

३– मातृरेखा पितृरेखा से युक्त न हो तो मनुष्य अनेक रूप धारण करता है और वक्ता, आत्माभिमानी, क्षणिक बुद्धिवाला, कार्यासक्त, पृथक् विचारवाला होता है। पृष्ठ १४६-१४७ श्लोक २-३।

४– यह रेखा यदि गुरुस्थान तक न गई हो तो मनुष्य द्रव्य से रहित होता है। पृष्ठ १४३ श्लोक ६।

५-- सरस्वती रेखा में यदि त्रिकोण चिह्न हो तो मनुष्य निश्चय ही उत्तम कारीगर होता है। पृष्ठ १६७ श्लोक ३१।

६– सम्पूर्ण अङ्गुलियों के तृतीय पर्व में यवाकार चिह्न हो तो मनुष्य दुराचारी होता है और जल में डूबकर मरता है। पृष्ठ १८० श्लोक २३।

७– शैल*रेखा के होने से मनुष्य कुलानुसार मण्डलाधीश्वर होता है। पृष्ठ १३५ श्लोक ५।

८– स्वास्थ्य रेखा छोटी रेखाओं से युक्त हो तो मनुष्य की अग्नि मन्द रहती है। पृष्ठ १४६ श्लोक ३।

९– अनामिका के प्रथम पर्व से तृतीय पर्वतक एक रेखा शुद्ध रूप से हो तो मनुष्य सर्वश्रेष्ठ पद लाभ करता है। पृष्ठ १७१ श्लोक ६।

---

* "समा बहुबिन्दवः शैलरेखाः"।

एक ही स्थान में छोटी-छोटी बहुत रेखा होने से भी शैलरेखा कही जाती है।

"अब्ज-शैल-हलभाग्यविहीने हाहेति महिलायै"।

कमल, शैल, हल और भाग्य रेखा के न होने से मनुष्य स्त्री के लिये सर्वदा रुदन किया करते हैं।

पृष्ठ १६८ श्लोक ३४ में भी महिलार्थ रोदन योग प्रदर्शित है।

विशेष सूचना

श्लोक– यत्र यत्राङ्किता रेखा प्रयुक्ताः सुन्दराकृतिः।
तत्र तथापि विज्ञेयाः पुत्र-दार-सहोदराः ।।१।।

भाषा– जिन स्थानों में सुन्दर आकृतिवाली रेखाएँ दृष्टिगोचर हों उन रेखाओं से भी स्त्री, पुत्र और भाई इत्यादि का फल कहा जाता है।

चित्र नं. १३

१३. चित्र परिचय

१— मणिबन्ध से उठकर कोई रेखा पितृरेखा का भेदन करे तो मनुष्य द्वीपान्तर यात्रा में मृत्यु पावे। पृष्ठ १५९ श्लोक ६।

२— भाग्यरेखा करमध्य से उठकर मध्यमा के तृतीयपर्व तक जाय तो मनुष्य दुर्भागी और उद्योगहीन होता है। पर्व की गणना ऊपनी हिस्से से करनी चाहिए। पृष्ठ १५१ श्लोक ६।

३— मातृरेखा पितृरेखा से युक्त शुद्ध, गम्भीर, स्वच्छ और शाखाओं से युक्त हो तो मनुष्य साहित्यशास्त्र के गूढ़ विषयों का ज्ञाता,

नवीन रचना और सुन्दर लेख में निपुण होता है। पृष्ठ १४७ श्लोक ४।

४— इस रेखा की शाखा बुधस्थान तक न गई हो तो मनुष्य निश्चय सन्तान-रहित होता है। पृष्ठ १४४ श्लोक १०।

५—ऊर्ध्व रेखा के समीप कोई खण्डित खड़ी रेखा का उदय हो तो मनुष्य पुत्र-पौत्र से रहित होकर पशुवृत्ति में रत रहता है। पृष्ठ १६४ श्लोक १९।

६— आयु मातृ रेखा के बीच में गुणाख्य चिह्न (+) हो अथवा

७— भाग्य रेखा के समीप (+) यही चिह्न हो तो मनुष्य की असामयिक मृत्यु होती है। पृष्ठ १७५ श्लोक १७।

८— भृगुस्थान में जाल चिह्न, तर्जनी के तृतीय पर्व में तारका (*) चिह्न और मध्यमा के तृतीय पर्व में त्रिकोण (V) हो तो मनुष्य व्यभिचारी होता है। पृष्ठ १७९ श्लोक २०।

९— परिणय रेखा स्थूल और कुत्सित हो तो विवाह कष्टप्रद होता है। पृष्ठ १७२-१७३ श्लोक १२।

१०— गुरुस्थान में नक्षत्र चिह्न हो तो पुरुष विवाह से बहुत धन प्राप्त करे। पृष्ठ १७२ श्लोक ११।

११— शुक्रस्थान से छोटी-छोटी रेखा उठ कर पितृ रेखा और

नोट— पञ्चरेखाज्ञानम्

" आयुः कर्म च वित्तं च विद्या निधनमेव च ।
पञ्चैतान्यपि सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिनः ।।१।।"

आयु, कर्म, धन, विद्या और मृत्यु— ये पाँच गर्भ में ही प्राणियों को विधाता रच देते हैं। यह वाक्य निश्चयात्मक है।

इन्हीं बातों को सूचित करने वाली पाँच रेखायें हैं, जैसे—

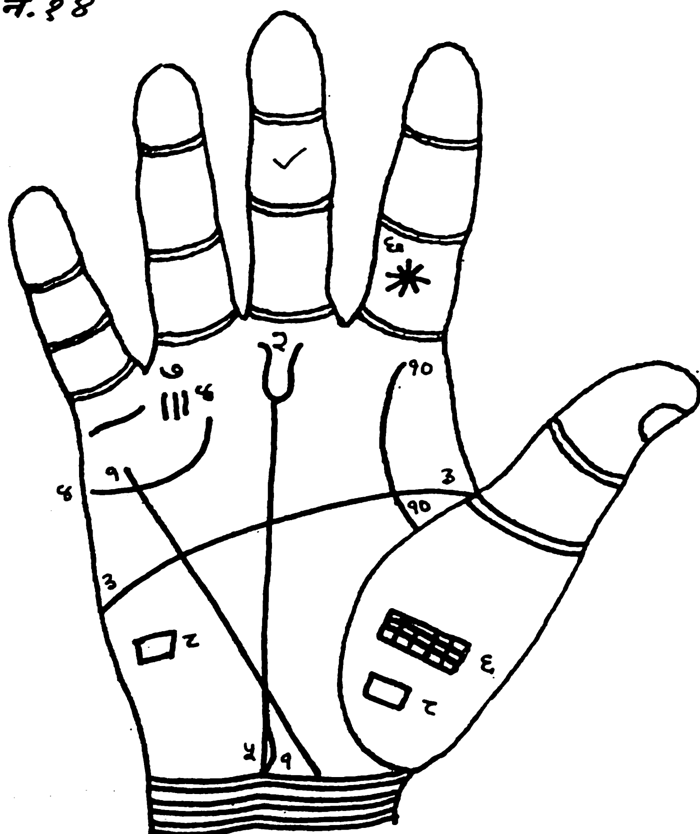
१— सर्वा आयु, २— अविच्छिन्न कर्म (मातृ-पितृ), ३— ऊर्ध्व, ४— सरस्वती, ५— निधनानन्त स्थानीय पद्म।

ऊर्ध्व रेखा ४ प्रकार की होती है।

१— ऊर्ध्व, २— मत्स्य, ३— मन्दिर, ४— हल, इस रेखा पञ्चक के द्वारा प्राणियों का जन्म से मरण पर्यन्त शुभाशुभ निरूपण किया जाता है।

भाग्य रेखा को काटती हुई भौमस्थान तक जाय तो मनुष्य अपने हाथ से द्रव्य समुदाय को नष्ट कर देता है। पृष्ठ १७२ श्लोक १०।

चित्र नं. १४



१४. चित्र परिचय

१– मणिबन्ध से कोई रेखा उठकर बुधस्थान तक जाय तो मनुष्य अनायास धन पावे। पृष्ठ १५६-१६० श्लोक ७।

२– भाग्य रेखा सीधी और शाखाओं से युक्त हो तो दरिद्र मनुष्य भी सम्पत्तिशाली होता है। पृष्ठ १५१ श्लोक ६।

३– मातृरेखा भग्न और शाखाओं से युक्त न हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, प्रभावशाली, विचार में निपुण और मानसिक बल से युक्त होता है। पृष्ठ १४६ श्लोक १।

४– यह रेखा सूर्यस्थान तक जाय और भाग्यरेखा कृश हो तो मनुष्य भाग्यहीन और उद्योग से रहित होता है। पृष्ठ १४४ श्लोक १०।

५– भाग्यरेखा के आदि में यह चिह्न हो तो मनुष्य को थोड़ी अवस्था में माता-पिता का वियोग होता है। पृष्ठ १७६ श्लोक १६।

६– शुक्रस्थान में जाल चिह्न और तर्जनी के तृतीय पर्व में नक्षत्र चिह्न हो तो मनुष्य अनेक स्त्रियों के साथ रमण करता है। पृष्ठ १७३ श्लोक १३।

७– परिणय रेखा के ऊपर ? जार रेखा का चिह्न हो तो मनुष्य का अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध होता है। पृष्ठ १७३ श्लोक १३।

८– शुक्र और भौम स्थान में चतुष्कोण (☐) चिह्न हो अथवा–

९– हाथ की किसी भी अंगुली में चार पर्व हो तो मनुष्य कारागार का सेवन करता है। पृष्ठ १७४ श्लोक १४।

१०– गुरु, बुध और रवि का स्थान उच्च हो, पितृरेखा से उर्ध्वगामिनी कोई रेखा बृहस्पतिस्थान तक शुद्ध रूप से जाय तो मनुष्य विद्या में पारंगत होता है। पृष्ठ १७१ श्लोक ८।

सांकेतिक सामुद्रिक—

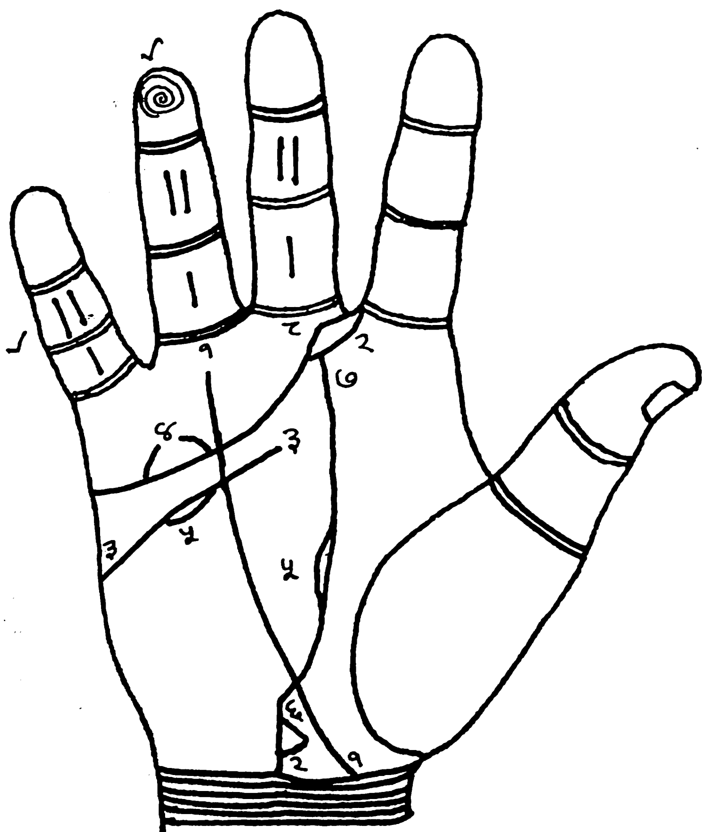
१– हकाराभ्यां ककाराभ्यां कुतो दुःखी च निर्धनः।

२– टकाराभ्यां चकाराभ्यां वृत्तिपायेन जीवति।

१– दो हकार अर्थात् हल और हर (डमरू वा त्रिशूल) तथा दो ककार अर्थात् कमल और करवाल रेखा के द्वारा मनुष्य दुःखी और निर्धन नहीं रहता।

२– दो टकार अर्थात् मोरी (हाथ सभी स्थूला रेखा) और कुठार रेखा तथा दो चकार, अर्थात् दो चक्र रेखा के होने से मनुष्य नौकरी के द्वारा जीविका करता है।

चित्र नं. १५



१५. चित्र परिचय

१– मणिबन्ध से कोई रेखा उठकर रविस्थान तक जाय तो मनुष्य दूसरे की सहायता से द्रव्य प्राप्त कर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करता है। पृष्ठ १५९-१६० श्लोक ७।

२– भाग्य रेखा का प्रथम भाग टेढ़ा, शेषांश सीधा हो तो मनुष्य प्रथम दरिद्र, पीछे धनी होता है। पृष्ठ १५१ श्लोक ७।

३— मातृरेखा छोटी होकर शनिस्थान तक जाय तो अकालमृत्यु होती है। पृष्ठ १४६ श्लोक १।

४— आयुरेखा ऊपर से कटी हो तो मनुष्य को पृष्ठ भाग में कष्ट-प्रद व्रण (फोड़ा) होता है। पृष्ठ १४४ श्लोक १०, १—२।

५— भाग्य रेखा और मातृरेखा में यव चिह्न हो, भाग्य रेखा टेढ़ी भी हो तो मनुष्य का विवाह नहीं होता है। पृष्ठ १५३ श्लोक ११।

(यदि केवल भाग्यरेखा के मध्य भाग में यव का चिह्न हो तो पुरुष के द्वारा स्त्री और स्त्री के द्वारा पुरुष मोहित होते हैं।) पृष्ठ १५३ श्लोक १२।

६— भाग्यरेखा के आदि में त्रिकोण हो तो थोड़ी अवस्था में माता-पिता का वियोग होता है। पृष्ठ १७६ श्लोक १६।

७— भाग्यरेखा मातृरेखा को न काटकर शनिस्थान तक जाय तो मनुष्य अल्पायुवाला होता है। पृष्ठ १७५-१७६ श्लोक १८।

८— आयुरेखा के अन्त में यदि कमल का चिह्न हो तो तीर्थ में मृत्यु होती है या वृहस्पति और चन्द्रस्थान उच्च हो तो भी यही फल जानना। पृष्ठ १७५-१७६ श्लोक १८-१६।

६-तीन अङ्गुलियोंमें नौ रेखायें हो और चक्र रेखा भी शोभती हो तो और रेखाओं के बिना भी मनुष्यों के सब कार्य बिना प्रयास ही सिद्ध होते हैं। पृष्ठ १६२-१६३ श्लोक ११।

१— लकाराभ्यां मकाराभ्यां शीलार्णवनरोत्तमः।

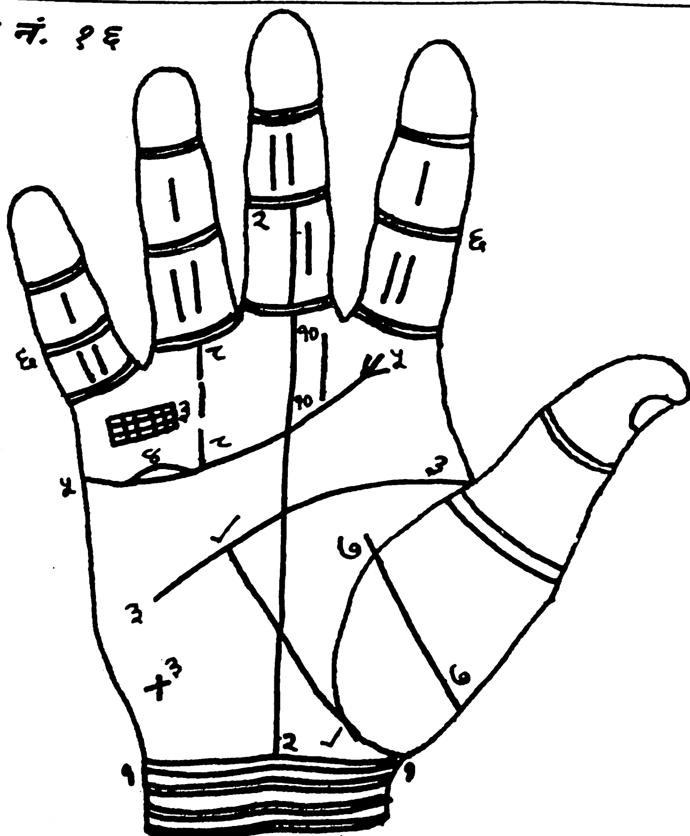
१— दो लकार अर्थात् लक्ष्मी (कमल) और लोहित (रक्त) यथा दो मकार मन्दिर और मत्स्य रेखा के होने से मनुष्य शीलसागर होकर नरों में श्रेष्ठ होता है।

सांकेतिक सामुद्रिक

चक्रहीना राजहीना रूपाहीनाश्च सुन्दरि!।
आत्मानं केवलं ज्ञात्वा बहुपुत्रा बहुस्त्रियः ॥ १ ॥

हे सुन्दरि! चक्ररेखा, राज (भाग्यादि प्रशस्त) रेखा तथा रूप शुभ लक्षणों से रहित मनुष्य एकाकी (दिगम्बर) होकर संसार मात्र को स्त्री-पुत्रमय समझते हैं।

चित्र नं. १६



१६. चित्र परिचय

१– मणिबन्ध में तीन से अधिक रेखायें हों तो मनुष्य दरिद्र और भाग्यहीन होता है। मणिबन्ध में समीपस्थ दो रेखाओं को एक समझना चाहिए। पृष्ठ १५८ श्लोक २।

२– ऊर्ध्वरेखा मणिबन्ध से मध्य के तीसरे पर्व तक जाय तो मनुष्य त्रिकालज्ञ होता है। पृष्ठ १७० श्लोक ४।

३– बुध और चन्द्रस्थान उच्च हो वहीं जाल और गुणाख्य चिह्न हो, मातृ रेखा शाखा विशिष्ट हो तो मनुष्य भक्त होता है। पृष्ठ १६९ श्लोक २।

४— * आयु रेखा के जिस वर्ष-प्रमाण में यव चिह्न हो तो मनुष्य को उस वर्ष में मृत्यु-तुल्य कष्ट होता है। (पूर्वार्ध पृष्ठ ६८ श्लोक ३८ से आयु का वर्षमान जानना) इस कष्टप्रद वर्ष के निकल जाने पर स्त्री, पुत्र और धन से युक्त होता है।

५— आयु रेखा में त्रिपत्राकार कमल रेखा का फल उत्तरार्द्ध पृष्ठ १३६ श्लोक ६ में देखें।

६— इन चार अङ्गुलियों के १२ पर्व रेखाओं से मनुष्य धन-धान्यादि सम्पूर्ण सुखों से युक्त होता है। पृष्ठ १६२ श्लोक १०।

(यदि केवल कनिष्ठा अंगुली के प्रथम पर्व में एक सुन्दर रेखा हो तो मनुष्य बुद्धिमान् होता है। यही रेखा यदि छिन्न-भिन्न तथा स्थूल होकर एक पोर से दूसरी पोर में मिल जाय तो उस मनुष्य की भयङ्कर मृत्यु होती है।)

७— शुक्र स्थान में इस प्रकार की हिंसा रेखा के होने से मनुष्य को स्त्री के द्वारा कष्ट होता है, परनिन्दक और कुत्ते के समान वृत्तिवाला होता है। पृष्ठ १६५ श्लोक २०।

८— पुण्यादि रेखा छिन्न-भिन्न, या रक्त तथा कुत्सित हों तो शत्रु की वृद्धि होती है। पृष्ठ १६५-१६६ श्लोक २४।

९— मातृ-पितृ रेखा छोटी-बड़ी हो तो माता-पिता में एक की स्थिति जानना। पृष्ठ १६६ श्लोक २६।

सांकेतिक सामुद्रिक

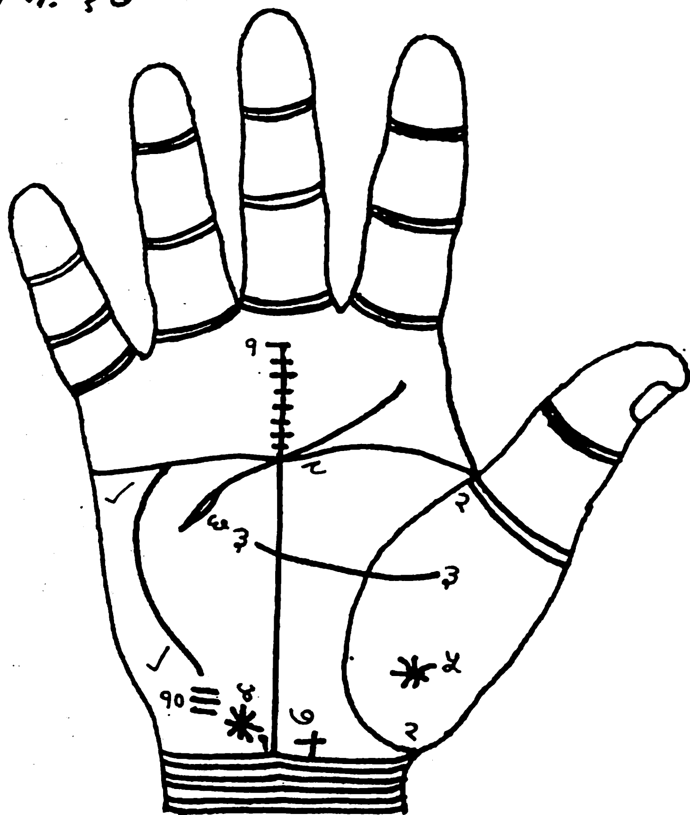
श्लोक— शुभदा हनुमद्रेखा शाखोपरि यदा भवेत् ।
दुर्गा - सरस्वती - काली देवीनामिष्ट - बोधिका ।।१।।

भाषा— शुभप्रदा हनुमत् (कपि) रेखा यदि शाखा के ऊपर अर्थात् मातृ, पितृ, आयु, ऊर्ध्व या सरस्वती रेखा के ऊर्ध्व भाग में त्रिकोण होने से कपि रेखा कही जाती है। इसके द्वारा दुर्गा, सरस्वती, काली इत्यादि देवी सम्बन्धी इष्ट जानना।

* ***श्लोक***— यवाङ्कश्चाऽऽयुरेखायां यस्मिन्माने विराजते ।
तस्मिन्मृत्युसमो दुःखं त्रिधनेनं ततःसुखम् ।। १ ।।

१०— आयु रेखा गुरु स्थान तक और उसकी एक शाखा शनि-स्थान तक गई हो तो मनुष्य शत्रु-रहित और सम्पत्तिशाली हो सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करता है। पृष्ठ १८० श्लोक २४।

चित्र नं. १७



१७. चित्र परिचय

१— भाग्य रेखा शनिस्थान में छोटी-छोटी रेखाओं से कटी हो तो जीवन के शेष भाग में मनुष्य धन द्वारा कष्ट पाता है। पृष्ठ १५२ श्लोक ६।

२— पितृ रेखा।

३– यदि कोई छोटी रेखा शुक्रस्थान से उठकर भाग्य रेखा और पितृरेखा का भेदन करे तो मनुष्य स्त्री वियोगी या स्त्री के द्वारा कष्ट पाता है। पृष्ठ १५२-१५३, श्लोक १०।

(ललना रेखा-चित्र नं.२, रेखा ६– में यव का चिह्न हो तो वह मनुष्य सर्वदा स्त्री से पृथक् रहेगा, स्त्री-पुरुषों में कभी भी प्रेम न होगा।)

४– भाग्य रेखा के प्रारम्भ में तारका चिह्न हो तो माता-पिता के रहते भी मनुष्य दु:खी रहता है। पृष्ठ १५२-१५३, श्लोक १०।

५– शुक्रस्थान में तारका चिह्न उक्त रेखा के साथ हो तो मनुष्य की बाल्यावस्था में ही उसके माता-पिता का विनाश होता है। पृष्ठ १५३, श्लोक ११।

६– मातृ रेखा के निचले भाग में यव का चिह्न हो तो असवर्ण पुरुष से स्त्री और असवर्ण स्त्री से पुरुष मोहित होते हैं। पृष्ठ १५३, श्लोक १२।

७– मणिबन्ध रेखा के ऊपर गुणाख्य (+) चिह्न हो तथा भाग्य रेखा पुष्ट हो तो मनुष्य सौभाग्यशाली होता है। पृष्ठ १८०, श्लोक २२।

नारदोक्तद्वात्रिंशल्लक्षणानि

क्षत्रं तामरसं धनू रथवरो जम्भोऽलि-कूर्मा-ङ्कुशाः
वापी-स्वस्तिक-तोरणानि चमरः पञ्चाननः पादपः।
चक्रं शङ्ख-गजौ समुद्र-कलशौ प्रासाद-ःमत्स्यो यवः
यूप-स्तूप-कमण्डलून्यवनिभृत् सच्चामरो दर्पणः ॥ १ ॥
उक्ष पताका कमलाभिषेकम्।
सुदाम-केकी- धनुपुण्य-भाजाम् ॥ २ ॥

भाषा– १ क्षत्र, २ कमल, ३ धनुष, ४ रथ, ५ वज्र, ६ कूर्म (कछुवा), ७ अङ्कुश, ८ वापी, ९ स्वस्तिक, १० तोरण, ११ चामर, १२ सिंह, १३ वृक्ष, १४ चक्र, १५ शङ्ख, १६ हाथी, १७ समुद्र, १८ कलश, १९ प्रासाद (गृह), २० मीन, २१ यव, २२ यूप, २३ स्तम्भ, २४ कमण्डलू, २५ शैल, २६ चामर, २७ दर्पण, २८ वृषभ, २९ ध्वजा, ३० षट्कोण, ३१ रज्जू, ३२ मयूर। प्रायः इन रेखाओं के रूप, स्थान और फल ग्रन्थ में दिये गये हैं जो अधिक पुण्यशाली मनुष्यों के हाथ में होते हैं।

८– दोनों हाथ की हृदय रेखा शनिस्थान में जाकर मातृरेखा से युक्त हो तो उस पुरुष का सहसा विनाश होता है। पृष्ठ १४५, श्लोक १३।

९– कोई रेखा हृदय रेखा से टेढ़ी होकर चन्द्र स्थान में जाय तो मनुष्य हिंसक होता है। पृष्ठ १४५ श्लोक १५।

१०– चन्द्रस्थान पुष्ट और छोटी-छोटी रेखाओं से कटा हो, चन्द्र और बुधस्थान सुन्दर हो तो मनुष्य भविष्यवक्ता होता है। पृष्ठ १६९-१७०, श्लोक ३।

चित्र नं. १८

१८. चित्र परिचय

१– शनि और गुरु का स्थान ऊँचा हो, रवि रेखा शुद्ध हो तो मनुष्य

योगी होता है। योग रेखा (परस्पर) सब रेखायें मिली हों तो भी फल समझना।

२— शनि स्थान और मध्यमा के तीसरे पर्व में दो नक्षत्र चिह्न हों, या मातृ रेखा शनिस्थान में भग्न हो तो मनुष्य फाँसी पाता है। पृष्ठ १७४ श्लोक १५।

३— भाग्य रेखा के आदि में नक्षत्र चिह्न और द्वितीय मंगल-स्थान में जाल और घात चिह्न हो तो मनुष्य आत्महत्या करता है। पृष्ठ १७५, श्लोक १६।

४— भाग्य रेखा से कई शाखा मणिबन्ध की ओर जाय तथा रवि स्थान में घात चिह्न हो तो मनुष्य दूसरे के धर्म को ग्रहण करता है। पृष्ठ १७६, श्लोक २१।

५— भाग्य रेखा जिस वर्ष-प्रमाण में कटी या टेढ़ी हो तो उस वर्ष में मनुष्य को विपत्ति प्राप्त होती है। पृष्ठ १५२, श्लोक ८। भाग्य रेखा का वर्ष-प्रमाण पृष्ठ १२८, पंक्ति ६ में देखिए।

६— भाग्य रेखा जिस वर्ष में भग्न (कटी) और टेढ़ी हो तो पुरुष को उस वर्ष में विपत्ति प्राप्त होती है। केवल भग्न हो तो लौकिक कष्ट

चक्रवर्तिलक्षणम्

आतपत्रं करे यस्य दण्डेन सहितो भवेत्।
ध्वजो वा द्विचामरयुतं चक्रवर्ती स जायते ॥ १ ॥

भाषा— जिसके हांथ में दण्ड के सहित छत्र हो अथवा ध्वजा या चामर रेखा हो तो मनुष्य चक्रवर्ती होता है॥ १ ॥

धनसंख्याज्ञानम्

शतं सहस्रं लक्षं वा कोटिर्दद्युर्थक्रमम्।
मीनादयः करे स्पष्टा छिन्ना-भिन्नादयोऽल्पदाः ॥ १ ॥
मत्स्ये शतं विजानीयात् मकरे तु सहस्रकम्।
पद्मे लक्षेश्वरश्चेति शङ्खे कोटीश्वरो भवेत् ॥ २ ॥

भाषा— मीन, मकर, कमल और शङ्ख रेखा यदि स्पष्ट हो तो क्रम से सौ, हजार, लक्ष और करोड़ संख्यक धन, छिन्न-भिन्न हो तो अल्प धन देती है।

नोट— ४ और नं. ६ नव की रेखा को रवि स्थान में समझना।

होता है। पृष्ठ १५२, श्लोक ८।

७— भाग्य रेखा-विहीन मनुष्य भाग्य और उद्योग-रहित होता है। पृष्ठ १५३, श्लोक १३।

८— आयु रेखा जिसके हाथ में दो हो या दीर्घ और पुष्ट हो तो मनुष्य भगवदाराधन में तत्पर रहता है। पृष्ठ १६६, श्लोक १।

९— पितृ रेखा से कोई रेखा उठकर शुद्ध रूप से रवि स्थान तक जाय तो मनुष्य सम्मान-पूर्वक प्रतिष्ठा प्राप्त कर सज्जनों से पूजित होता है। पृष्ठ १५७, श्लोक ११।१२।

चित्र नं. १६

स्त्रियों के वाम करतल का चित्र

१— मणिबन्ध छिन्न-भिन्न।
२— पितृ रेखा छिन्न-भिन्न।
३— आयु रेखा शनि स्थान तक छोटी २ रेखाओं से युक्त।
४— मातृरेखा छिन्न-भिन्न।
५— पुण्य रेखा त्रिधा (तीन स्थान से) भग्न।
६— भाग्य रेखा या सौभाग्य रेखा, पति-रेखा।
७— भाग्य रेखा में दण्ड।
८— भाग्य रेखा के समीप छोटी ऊर्ध्व रेखा।
९— हिंसा रेखा।
१०— छिन्न-भिन्न रेखा।

जिन स्त्रियों के हाथ में ऐसी दुष्ट रेखायें हों तो उन्हें पति, पुत्र, भाई, माता, पिता, सास, ससुर आदि का कष्ट कहना चाहिए। पृष्ठ ७१, पंक्ति १ से उत्तरार्ध शुभाशुभ प्रकारण में देखिए। उक्त समस्त फल लक्षण तथा रेखा के तारतम्यानुसार समझकर कहना चाहिए।

नारदोक्तकराऽवलोकनप्रकार —

स्त्रियो वामकरं वामे स्वहस्ते न्यस्य वीक्ष्यते।
यो नरः स्त्रीप्रकृतिकस्तत्करो वीक्ष्यते बुधैः ।। १ ।।
दक्षिणाद् बलवान् वामः पुंसः स्त्रीशीलशालिनः।
नृशीलायाः स्त्रियो वामाद् दक्षिणो बलवान् भवेत् ।। २ ।।

भाषा— विद्वानों को उचित है कि स्त्रियों के तथा स्त्रीस्वभाव वाले पुरुषों के बायें हाथ को अपने बायें हाथ में रखकर रेखावलोकन करें।। १ ।।

(क्योंकि) स्त्री स्वभाव वाले पुरुष का बायाँ हाथ दाहिने हाथ की अपेक्षा बली होता है और पुरुष स्वभाव वाली स्त्रीका दाहिना हाथ बायें हाथ की अपेक्षा अधिक है।। २ ।।

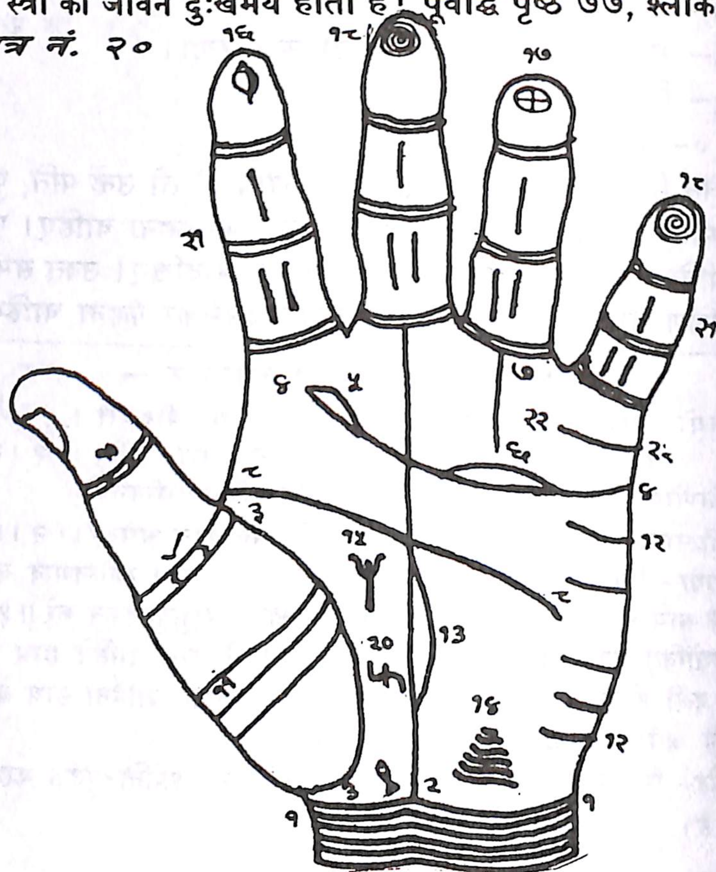
नोट— स्त्रियों के इन दुष्ट फलों को विचारकर शान्ति-पूर्वक कहना उचित है।

११– दो शङ्ख तथा दुष्ट रेखाओं के द्वारा पुंश्चली का भी ज्ञान होता है। पूर्वार्द्ध पृष्ठ ११८, लक्षण पुंश्चली पंक्ति ५।

१२– अङ्गुष्ठमूल से निकलकर कनिष्ठिका-पर्यन्त एक रेखा जाय तो स्त्री पतिघातिनी होती है। पूर्वार्द्ध पृष्ठ ७६, श्लोक २८।

(जिस स्त्री की सब अङ्गुलियाँ टेढ़ी तथा चिपटी हों, रेखायें छिन्न-भिन्न हो तो वह स्त्री विधवा होकर बहुत दुःख भोगती है। यदि अङ्गुलियाँ अत्यन्त छोटी, पतली, टेढ़ी, विरल तथा बहुत पर्वों से युक्त हों तो उस स्त्री का जीवन दुःखमय होता है। पूर्वार्द्ध पृष्ठ ७७, श्लोक ३३।

चित्र नं. २०



सधवा स्त्री करतल चित्र

१. मणिबन्ध शुद्ध रूप से।
२. भाग्य रेखा शुद्ध और सरल मणिबन्ध से शनि स्थान पर्यन्त।
३. पितृ रेखा शुद्ध रूप से।
४. आयुष्य रेखा गुरु स्थान तक।
५. कमलयुक्त आयुष्य रेखा।
६. यवसंयुक्त आयुष्य रेखा।
७. पुण्य रेखा शुद्ध।
८. मातृ रेखा शुद्ध।
९. अंगुष्ठमूल में यव।
१०. अंगुष्ठोदर में यव।
११. उच्चस्थान में सन्तान रेखा संख्यानुसार।
१२. करभप्रदेश में संख्यानुसार भ्रातृभगिनी रेखा।
१३. धनुरेखा।
१४. कानन रेखा।
१५. त्रिशूल।
१६. शंख।
१७. चक्र।
१८. सीप।
१९. मत्स्य।
२०. स्वस्तिक।
२१. जाल।
२२. पति।

उक्त समस्त शुद्ध रेखाओं में से जितनी शुद्ध रेखायें स्त्रियों के हाथ में दीख पड़ें, उनके द्वारा पति, पुत्र, भाई, माता, पिता, सास, ससुर, धन आदि का सम्पूर्ण शुभफल लक्षण तथा रेखा के अनुसार कहना चाहिए। उत्तरार्द्ध पृष्ठ १३३-१३४, शुभाशुभ प्रकरण, पूर्वार्ध पृष्ठ ७१, श्लोक १ से पृष्ठ ७७, श्लोक ३५ तक देखिए।

नोट—इन बीस चित्रों में प्रायः ग्रन्थ के सभी रेखाओं का समावेश यथावकाश करके उनके परिचय भी सर्व-साधारण के लाभार्थ दिये हैं।

इस ग्रन्थ को अहंकार तथा पक्षपात-रहित होकर जो विचारपूर्वक आद्यन्त पढ़ेंगे उनको परमेश्वर के अद्भुत सृष्टिक्रम तथा मनुष्यों के जीवन चरित्र का यथार्थ ज्ञान प्राप्त होगा। किमधिकम्। इति शम्।

ग्रह-प्रकरणम्

अथ नर-नारीणां शुभाऽशुभवर्षाविबोधकं चक्रम्

वर्ग.	*ध्रुवा*	*ग्रह.*	*वर्ष*	*अशुभ*	*शुभ*
अ.	८	सूर्य.	१	व्यथा, ऋणादि, क्लेश	प्रयाण, लाभ, आरोग्य
क.	५	चन्द्र.	२	अपमान, लाञ्छन, द्वन्द्व, क्लेश	मानाप्ति, सुख
च.	६	मंगल.	३	सुत व्रण व्यथा, धनादि कष्ट	त्रिधन, सुख
ट	४	बुध.	४	द्वन्द्व, ऋण, क्लेश, चिन्तादि भय	महासुख लाभ
त.	७	गुरु.	५	महाक्लेश, वृत्ति नाश	विद्या, सुत, धन, दारा सुख
प.	१	शुक्र.	६	स्त्री-पुत्र-धन-कष्ट	श्रेष्ठ सुख लाभ
य.	३	शनि.	७	महाक्लेश, हाहेति क्रन्दन	राज्याप्ति सर्वोन्नति
श.	२	राहु.	८	उदरपीड़ा, दाम्पत्य क्लेश	दम्पति सुख

रेखाओं के द्वारा प्रथम शुभाशुभ निर्णय कर इस चक्र से मनुष्यों के शेष सुख-दुःख की अवधि का विचार करना।

प्रकार।

बड़ी २ मुख्य रेखाओं की, वयोवर्ष की, प्रसिद्ध नाम के वर्गध्रुवा की संख्याओं का योग कर ८ से भाग देवे, अवशिष्ट ग्रह-संख्या

सम्बन्धी शुभाशुभ वर्ष की आधे से अधिक संख्या गत और उससे न्यून वर्ष शेष समझना चाहिए।

उदाहरण

किसी के हाथ में पुण्य रेखा, आयुरेखा, मातृरेखा, पितृरेखा, भाग्य-रेखा– ये पाँच बड़ी रेखायें हैं और वयोवर्ष २५ है। प्रसिद्ध नाम देवदत्त है। रेखा ५, वयोवर्ष २५, नाम का ध्रुवावर्ग ७, इनका योग ३७ होता है, ८ का भाग दिया तो ५ शेष बचता है। यह गुरु का वर्ष है, इसका आधा २।। होता है, आधे से अधिक ३ गत अर्थात् बीत चुका है। शेष २ न्यून वर्ष है, इतने दिन दुःख की अवधि जानना।

जैसे प्रथम रेखाओं से छिन्न-भिन्न होने से दुःख प्रतीत हुआ, अब इसकी अवधि हमको जाननी है कि दुःख कब तक रहेगा। उपरोक्त हिसाब करने से २ शेष न्यून बचता है। गुरु के अशुभ में महाक्लेश, वृत्तिनाश है तो जानना चाहिए कि यह कष्ट २ वर्ष और रहेगा। इसी प्रकार शुभ का ज्ञान करना हो तो गुरु के शुभ में विद्या, सुत, धन और दारा सुख लिखा है अतः दो वर्ष इन बातों का विशेष सुख रहेगा, शेष ईश्वरेच्छा। इति शम्।

शुभं भूयात्।

ग्रहों के द्वारा मनुष्यों के शुभाशुभ का संक्षिप्त विचार कर चित्रों में जो ग्रहों के स्थान दिये गये हैं वे उन ग्रहों के क्षेत्र कहे जाते हैं, जो ग्रह जिस प्रकार बलवान् होते हैं उसी के अनुकूल उनके वे सब क्षेत्र भी मनोहर, उच्च, कोमल, कान्तिमान् तथा शुभ रेखाओं से युक्त होते हैं और ग्रह निर्बल होते हैं उनके स्थान भी उसी प्रकार विपरीत होते हैं।

१– सूर्य के द्वारा राज, मान, प्रतिष्ठा, कलाकौशल, विद्या, बुद्धि, धर्म, कीर्ति और तीर्थ इत्यादि।

२– चन्द्र के द्वारा आन्तरिक पीड़ा, मन सम्बन्धी समस्त विचार, मातृ-सुख, कृषि, धन-धान्यादि।

३– भौम ग्रह द्वारा बल, पराक्रम, अग्निमांद्य, फोड़ा-फुंसी, रुधीर विकार और विवाद में जय इत्यादि।

४– बुध के द्वारा विद्या, बुद्धि, वाणिज्य, काव्य, शिल्प तथा सौभाग्यादि अनेक शुभफल।

५– गुरु के द्वारा मान, प्रतिष्ठा, धर्म, विवाह, पुत्र, धन-धान्यादि समस्त शुभफल।

६– शुक्र के द्वारा विवाह, स्नेह, प्रताप, सौन्दर्य, स्त्रीसुख, काव्यकला, प्रमोद इत्यादि ज्ञान।

७– शनि के द्वारा क्लेश, सुख, अनेक पीड़ा, व्यसन, द्यूत पराभव, मृत्यु इत्यादि विविध कष्टों का विचार होता है।

ये सब ग्रह इन बातों के योगकारक कहे जाते हैं। अतः इन ग्रहों के बलाबल के अनुकूल सुख-दुःख का विचार किया जाता है। जिसका मनन करने से अनुभव प्राप्त होता है, इन्हीं ग्रहों के द्वारा जन्मकाल के वर्ष, मास, पक्ष, तिथि, वार और समय का ज्ञान होता है। इस विषय की बहुत सी बातें "सामुद्रिक कुञ्जिका" नामक ग्रन्थ में जो मुद्रित है, प्रकाशित की गई है। यह पुस्तक सामुद्रिक शास्त्र के गूढ़ विषयों की कुञ्जी है। "सामुद्रिक सोपान", "सामुद्रिक दर्पण" तथा "सामुद्रिक-रहस्य" या अन्यान्य सामुद्रिक शास्त्र के जो ग्रंथ उपलब्ध होते हैं वे सब अँगूठी हैं और यह उनका बहुमूल्य नगीना (मणि) है। यदि पाठक चाहें तो मेरे यहाँ से मँगाकर लाभ उठा सकते हैं। बाजार में भी यह पुस्तक मिल सकती है। किमधिकम्।

ललाटसम्बन्धीविचार

ललाटे लिखितं धात्रा रेखा चिह्नं शुभाऽशुभम् ।
यद् ज्ञात्वा पुरुषो लोके त्रिकालज्ञो भवेद् ध्रुवम् ॥१॥

१– ललाट में स्वच्छ, सरल, गम्भीर, पूर्ण तथा स्पष्ट रेखा होने से मनुष्य सुखी और दीर्घायु होता है। छिन्न-भिन्न रेखा से दुःखी और अल्पायु होता है।

२– ललाट में ऊर्ध्वरेखा, त्रिशूल, पट्टिश, स्वस्तिक आदि शुभ रेखाओं से धन, पुत्र, स्त्रीयुक्त होकर मनुष्य सुखमय जीवन व्यतीत

करता है। अनेक रेखा से फल भी पृथक् अनेक होते हैं, जो स्थानाभाव से दिखलाये नहीं जा सके।

३— भाल रेखा द्वारा भी आयु का निर्णय होता है। जिस ग्रह की रेखा पूर्ण और मनोहर होती है वह अपना पूर्ण फल देती है। जिस ग्रह की रेखा छिन्न-भिन्न हो वह अनिष्ट फल देती है।

४— जिसके माथे में रेखा नहीं होती वह पुरुष धनी, दीर्घजीवी और सुखी होता है। प्रायः पूर्ण एक रेखा का मान २० वर्ष होता है। इसी अनुपात से अनुभव द्वारा आगे के आयु का निश्चय करना चाहिए।

५— जिनके ललाट गहरे हों वे प्राणी वध और बन्दी गृह के भोगी, कठोर कर्म करनेवाले और दुःखी रहते हैं। जिनके ललाट संकीर्ण हों वे कृपण और दुर्जन होते हैं।

ताम्र वर्ण और उन्नत ललाट सुखी मनुष्य का होता है, ऊँचे ललाट वाले राजा या योगी होते हैं। यदि ललाट में सीधी गम्भीर केश पर्यन्त बराबरी में ३ रेखायें हों तो १०० वर्ष एवं ४ रेखाओं से पूर्णायु होती है। परन्तु ये छिन्न-भिन्न न हों तो। रेखा-सहित ललाट दीर्घायु-सूचक होता है।

जो रेखा केशपर्यन्त न हो ऐसी प्रायः १ रेखा का मान २० वर्ष का होता है। इसी अनुपात से अनुभव द्वारा आगे के आयु का निश्चय करना चाहिए।

जिस रमणी का ललाट उन्नत शिरा और रोमरहित नेत्र, नील कमल के समान नासिका से कर्ण-पर्यन्त भौं द्वितीया के चन्द्र तुल्य टेढ़ी और चौड़ी तथा परस्पर मिली न हो तो स्त्री के लिये सुख और सौभाग्यवर्धक है।

इसका विशेष विवरण ग्रन्थान्तरों में देखिये। इति शम्।

संक्षिप्त-पुरुष ललाट-तिल बर्णन

१— शनि रेखा के नीचे ललाट १ आदि, २ मध्य या ३ अन्त में काला तिल हो तो क्रमशः १ कृषि सम्बन्धी लाभ, २ विलास

से दुर्भाग्य और ३ कारागारप्रद होता है। यदि यह तिल लाल हो तो सब प्रकार के अनिष्ट की निवृत्ति और विशेष शुभप्रद होता है।

२— गुरु रेखा के नीचे उक्त क्रम से तिल हों तो क्रमशः १ विवाह से भाग्योदय, २ उद्दण्ड, कठोर हृदय, भ्रान्ति, चिन्ताकारक, ३ से विलासी और अपव्ययी होता है। लाल होने से शुभ।

३— मङ्गल रेखा के नीचे तिल हों तो क्रमशः १ लड़ाई से भाग्योदय, २ हिंसक और ३ झगड़ालू होता है। लाल हो तो स्त्रियों के कारण अशान्ति प्राप्त हो।

४— एवं रवि रेखा के नीचे हों तो क्रमशः १ उत्तराधिकारी, २ विलासी और ३ इन्द्रियलोलुप और दुर्भाग्यसूचक होता है। पूर्वोक्त दो स्थानों में लाल तिल शुभ, किन्तु अन्त में अशुभ है।

५— एवं शुक्र रेखा के नीचे क्रमशः १ विवाह से भाग्योदय, २ कष्टसाध्य रोगी, ३ स्त्री द्वारा कष्ट। यहाँ लाल तिल शुभ और अन्तिम दो स्थानों में अशुभ है।

६— एवं बुध रेखा के नीचे क्रमशः १ उद्योग से भाग्योदय, २ अधिक दुःखी, ३ मुकदमेबाजी। लाल तिल शुभ है।

७— एवं चन्द्र रेखा के नीचे क्रमशः १ व्यापार से उन्नति, २ व्यभिचारी, ३ दुःखी होता है। लाल तिल हो तो श्रेष्ठ है।

नोट— परन्तु रेखासे इनका स्पर्श न होना चाहिए। कपोलमें तिल होने से शोभा-युक्त, अधरोष्ठ में लोभी, कण्ठ में भक्तिसूचक है, अन्य ग्रन्थों में तिल तथा इल्ला, मसा का बहुत विस्तार किया गया है।

स्त्री-ललाट-तिलादि वर्णन

१— शनि रेखा के नीचे १ आदि, २ मध्य या ३ अन्त में तिल हो तो क्रमशः १ उत्तराधिकारिणी, २ गर्वयुक्ता विलासिनी, ३ दो पति से युक्त और विदेशगमन करनेवाली होती है।

२— गुरु रेखा के नीचे क्रमशः १ भाग्यशालिनी, २ मूर्खा, कर्कशा, आलस्ययुक्त और ३ व्यभिचारिणी, निर्लज्ज, हठीली होती है।

३— मंगल रेखा के नीचे क्रमशः १ भाग्यशालिनी, २ गर्वयुक्त, कठोर हृदय और ३ कर्कशा तथा कुलटा होती है।

४— रवि रेखा के नीचे क्रमशः १ उत्तराधिकारिणी पति की आज्ञा माननेवाली, २ विलासिनी, व्यभिचारिणी, ३ दरिद्रा और दुःखभोगिनी होती है।

५— शुक्र रेखा के नीचे क्रमशः १ भाग्यशालिनी, २ रोगयुंक्ता, ३ विषयशीला और दुर्भाग्यवाली होती है।

६— बुध रेखा के नीचे क्रमशः १ चतुर, दीर्घायुवाली, २ पितृघातिनी और ३ कुलटा होती है।

७— चन्द्र रेखा के नीचे क्रमशः १ चिरकाल तक पति विदेश-गमन करे, २ हठ स्वभाव की और नीच, ३ प्रसवकाल में दुःख प्राप्त होता है।

८— जिस स्त्री की नासिका के अग्र भाग में लाल मसा हो तो वह पटरानी होती है। काला हो तो व्यभिचारिणी होती है। कान, कपोल और कण्ठ में, वाम भाग में मसा या तिल का चिह्न हो तो प्रथम गर्भ में पुत्र होता है। ओंठ पर मसा हो तो सर्वस्व नष्ट करनेवाली तथा एक सन्तान वाली होती है। प्रायः काला तिल या मसा अशुभ और लाल शुभप्रद होता है। इति शम्।

चित्र परिचय -१

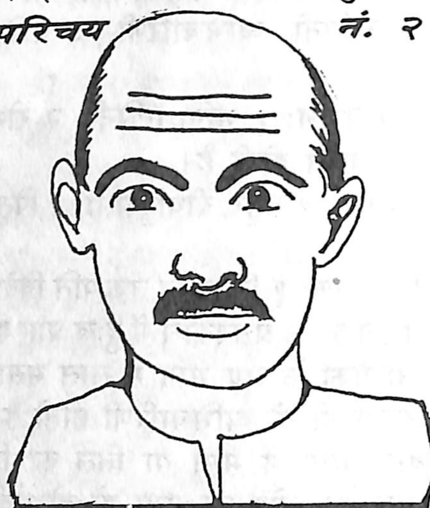


नं. १

१ शनि रेखा।
२ गुरु रेखा।
३ मङ्गलरेखा।
४ सूर्य रेखा।
५ शुक्र रेखा।
६ बुध रेखा।
७ चन्द्र रेखा।
८ सूर्य स्थान।
९ चन्द्र-स्थान।

१० शुक्र स्थान। ११ बुधस्थान। १२ गुरुस्थान। १३ शनि स्थान। १४ मंगल स्थान। प्रत्येक मनुष्य के इन स्थानों में ग्रहों का निवास रहता है। इसी के द्वारा समस्त शभाशुभ फल कहा जाता है।

चित्र परिचय नं. २



जिस पुरुष के भाल में ३ रेखायें स्पष्ट, सुन्दर, बिना कटी एक छोर से दूसरी छोर तक इस ढंग की हों तो वह मनुष्य भाग्यवान्, भक्त, विद्या, धन, पुत्र, स्त्री से युक्त होकर सुखी होता है और उसकी आयु ६० वर्ष की या किसी के मतसे १०० वर्ष की होती है।

चित्र परिचय - ३



चित्र नं. ३ जिसके मस्तक में इस प्रकार की रेखायें पाई जायँ तो वह पुरुष हत्या करने वाला, भयङ्कर, कठोर हृदय यथा क्रूर स्वभाव का होता है। उसे देश-निर्वासन अथवा फाँसी का दण्ड मिलता है।

चित्र परिचय-४



चित्र नं. ४

जिस पुरुष के ललाट में इस तरह की रेखा स्पष्ट दीख पड़े तो वह भाग्यशाली, प्रतापी, धनी और मध्यम आयु को भोगने वाला होकर सुख-पूर्वक जीवन व्यतीत करता है।

चित्र परिचय-५



चित्र नं. ५ जिसके माथे में इस प्रकार चिह्न पाये जायँ तो उस मनुष्य को जल में डूबने का भय होता है। यदि ये रेखायें गहरी और स्पष्ट दीख पड़े तो वह जल में डूबकर मर जाता है।

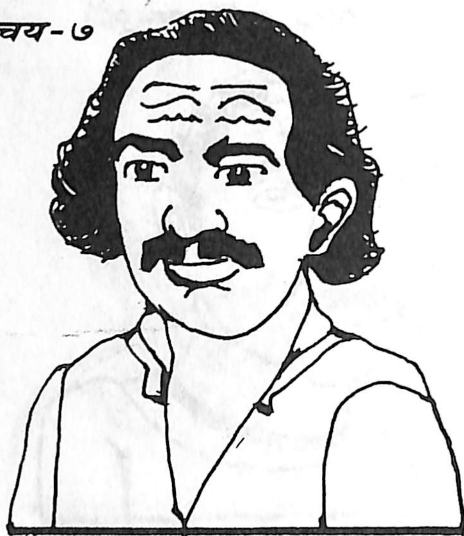
चित्र परिचय-६



चित्र नं. ६

जिसके उन्नत मस्तक में ऐसी रेखायें हों वह पुरुष बुद्धिमान्, विद्वान्, चतुर, शान्त प्रकृति, प्रत्युत्पन्न मतिवाला, अनेक गुणों से युक्त, धन-हीन और मध्यायु भोगवे वाला होता है।

चित्र परिचय-७



चित्र नं. ७ जिसके कपाल में इस प्रकार की रेखा दिखायी पड़ें वह जुआड़ी, चोर, वेश्यागामी, कठोर हृदय, उद्दण्ड स्वभाव का और मनस्वी होता है तथा उसकी मृत्यु एकाएक होती है।

चित्र परिचय-८



चित्र नं. ८

जिस मनुष्य के विशाल भाल में ऐसी रेखाएँ स्पष्ट रूप से दीख पड़ें तो वह प्राणी सद्गुणों से युक्त, विद्वान्, धनी, भक्त, स्त्री, पुत्र से युक्त, प्रतापी और दीर्घायु होकर सुखमय जीवन व्यतीत करता है।

चित्र परिचय-९



चित्र नं. ९

जिस स्त्री के माथे में छिन्न-भिन्न रेखायें हों तथा नासिका के अग्र भाग में तिल या काला मसा हो तो वह स्त्री निश्चय ही विधवा होती है।

चित्र परिचय-१०



चित्र नं. १०

जिस रमणी के माथे में रेखायें स्पष्ट, मनोहर और गम्भीर हों तथा वाम कपोल पर दाल के बराबर लाल तिल हो तो वह सौभाग्यवती, धन, पुत्र से सम्पन्न होकर आनन्दमय जीवन व्यतीत करती है। इत्यादि।

* * *

श्रीमङ्गलमूर्त्तये नमः



सामुद्रिकरहस्यम्

हिन्दीटीका-सहितम्

पूर्वार्धं प्रारभ्यते

बालार्काभतनुं द्विपेन्द्रवदनं विघ्नेश - पञ्चाननम्
गुञ्जत्षट्पद-पुञ्ज-मेदुरमद-श्रीमत्कटोद्भासितम् ।
राजद्व्याल - विभूषणं सुरतरुं भक्तार्थदाने सदा
वन्दे तं हिमवत्सुताङ्गजनुषं देवं गणेशं मुहुः ॥१॥

बाल सूर्य के समान कान्ति वाले, गजराज के समान मुख वाले, विघ्नरूपी हस्ती के लिए सिंह समान, गूँजते हुए भौंरों के समूह से घिरे, मद की कान्ति से युक्त, गण्डस्थल से सुशोभित, दीप्तिमान्, सर्पों के आभूषण को धारण करनेवाले तथा भक्तों के अभीष्ट को देने में निरन्तर कल्पतरु के समान, पार्वती जी के पुत्र प्रसिद्ध गणेशजी को बारम्बार प्रणाम करता हूँ॥१॥

श्री १०८ कामाख्यायै नमः

कामाक्षीं कामरूपे कनकमणिमये सिद्धपीठे वसन्तीम्
वाक्सिद्धिं चारुबुद्धिं स्मरणमुपगता या प्रयच्छत्यजस्रम् ।
या मन्त्रं व्याहृतीद्धं निजहृदि सततं ध्यायतां सिद्धिदात्री
ब्रह्मोपेन्द्रेशमुख्यैर्मुहुरमरगणैः सेवितां तां भजामः ॥२॥

जो केवल स्मरणमात्र से निरन्तर जनों को वाक्‌सिद्धि और सुन्दर बुद्धि देती है, तथा सप्त व्याहृतियों से युक्त मन्त्र को अपने हृदय में निरन्तर जप करनेवालों को सम्पूर्ण सिद्धियाँ देती है, ऐसे कामरूप देश में सुवर्ण के मणिमय सिद्धपीठ पर रहनेवाली, ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि सम्पूर्ण देवताओं से सेवित उस प्रसिद्ध कामाक्षी भगवती को हम अनेक बार भजते हैं॥ २॥

केशवर्णनम्—

महाकुन्तलयुक्तो वै पण्डितो गुणवान् भवेत् ।
केशहीनश्च यो देवि ! दरिद्रो वाऽथ भूपतिः ॥ १ ॥

हे देवि ! अधिक केशों वाला मनुष्य पण्डित और गुणी होता है। केशहीन प्राणी दरिद्री अथवा राजा होता है॥ १ ॥

दीर्घलोमश्रवा यस्तु दीर्घ-कर्णश्च यो भवेत् ।
वक्ता हि निर्दयश्चैव दीर्घायुर्नृपसेवकः ॥ २ ॥

बड़े-बड़े रोम जिसके कानों में हों और कान भी बड़े-बड़े हों तो वह वक्ता, निर्दयी, दीर्घायु और राजसेवक होता है॥२॥

ललाटवर्णनम्—

गम्भीरभालाः वध - बन्ध -भागिनः
क्रूरे रताः कर्मणि कृच्छ्रभोगिनः ।
वाऽप्युच्च-भालाः क्षितिपाश्च योगिनः
सङ्कीर्ण - भालाः कृपणाश्च दुर्जनाः ॥ ३ ॥

जिसके ललाट गहरे हों वे प्राणी वध और कारागार के भागी होकर कठोर कर्म करते हैं और दुःख भोगते हैं। ऊँचे ललाट वाले राजा अथवा योगी होते हैं। जिनके ललाट संकीर्ण हों वे कृपण अथवा दुर्जन होते हैं॥ ३ ॥

भ्रूवर्णनम्—

भ्रूयोगैक्यै तु दारिद्र्यं भ्रूहीनेऽपि च भामिनि।
वक्रभ्रूश्च नृपा मर्त्यः रसिका पण्डितोऽथवा॥४॥

मनुष्य की दोनों भौंहें यदि मिल कर एक हो जाँय अथवा भौहें न हों तो वह दरिद्र होता है। और भौहें टेढ़ी हों तो मनुष्य राजा, पण्डित अथवा रसिक होता है॥४॥

नेत्रवर्णनम्—

अंसिते धनवान् नेत्रे पीते पितृविनाशनः।
पाटले ह्रासवृद्धी च चित्रे तु तस्करो भवेत्॥५॥

मनुष्य के नेत्र यदि काले हों तो धनी, पीले हों तो माता-पिता के नाशक, पाटल (श्वेत रक्त) हों तो कभी हानि और कभी लाभ को देनेवाला, चित्र (रङ्ग-विरंगे) हों तो चोर होता है॥५॥

उलूकाक्षाश्च काकाक्षाः मण्डूकाक्षाश्च ये नराः।
अल्प - रोम - कपोलाश्च ते सर्वे पापबुद्धयः॥६॥

उल्लू, काक और मण्डूक (मेघा) के समान नेत्रवाले तथा जिनके कपोल में रोम कम हों तो वे मनुष्य पाप बुद्धिवाले होते हैं॥६॥

नासिकावर्णनम्—

शुकनासा नरो राजा पङ्कनासाश्च निर्धनः।
पत्रात्मिका यदा नासा ऋद्धि-सिद्धि-प्रदा सदा॥७॥

यदि मनुष्य की नासिका तोते के समान हो तो वह राजा और पङ्क के समान हो तो दरिद्र, सुडौल और पतली नासिका हो तो ऋद्धि और सिद्धि को देती है॥७॥

पुम्मसूरिका—

नासायां कुटिलश्चैव कपोले बहुपुत्रकः।
नासापार्श्वे च मशकः वंशकष्टकरः सदा॥८॥

जिस पुरुष की नाक पर मसा का चिह्न हो तो वह कुटिल, गालपर हो तो अधिक सन्तान पैदा करनेवाला और नाक के अत्यन्त समीप हो तो सन्तान के द्वारा कष्ट होता है॥ ८॥

स्त्रीमसूरिका—

नासायां कुटिला दीना कपोले दुःखभागिनी।
अधरे शंखिनी चैव सर्वनाशकरी सदा॥ ९॥
एकवंशा भवेज्ज्ञातु मानिनी ऋषिणोच्यते।
सर्वत्र शुभदो शोणः कृष्णोऽशुभफलप्रदः॥१०॥

जिस स्त्री की नाक पर मसा हो तो वह कुटिला, गाल पर हो तो दुःख भोगनेवाली और ओठ पर यदि मसा हो तो सर्वस्व नष्ट करनेवाली होती है, कदाचित् एक सन्तानवाली भी होती है, मसा यदि रक्त हो तो शुभ और काला हो तो अशुभ फल को देनेवाली होती है, यह महर्षि का वचन है॥९-१०॥

आननवर्णनम्—

यदा भालाऽऽनने स्यातामिन्दुवत्सुषमायुते।
धर्मात्मोत्पलवक्त्रश्च धन-धान्यादिभाग् भवेत्॥११॥

जिस मनुष्य का ललाट और मुख यदि चन्द्रमा के समान अत्यन्त शोभायुक्त हो तो वह धर्मात्मा और कमल के समान कोमल मुख हो तो धन-धान्यादि से युक्त होता है॥११॥

अहास्यवदनो मर्त्यः दुःख-दारिद्र्यवान् सदा।
मृगाऽऽखुवदनश्चापि हीनभाग्यो भवेद्ध्रुवम्॥१२॥

जिसका मुख प्रसन्न न हो तो वह दुःख और दारिद्र्य से व्याप्त होता है। मृग अथवा मूस के समान मुख हो तो वह मनुष्य निश्चय ही भाग्य-रहित होता है॥१२॥

ओष्ठवर्णनम्—

स्थूलाऽधरो नरो यस्तु गर्वी चैवाऽतिनिर्धनः।
ऋजुबिम्बोपमोष्ठाभ्यां भूपो भवति निश्चितम् ॥१३॥

जिसके नीचे का ओष्ठ मोटा हो तो वह अभिमानी और धनरहित होता है। सीधे और पके हुए कुन्दरू के समान दोनों ओष्ठ हों तो वह निश्चय राजा होता है॥१३॥

दन्तवर्णनम्—

विषमैर्धनहीनाश्च दन्ताः स्निग्धा घनाः शुभाः।
तीक्ष्णा दन्ताः समाः श्रेष्ठा जिह्वा रक्ता समा शुभा॥१४॥
श्लक्ष्णा दीर्घा च विज्ञेया तालुः श्वेतो धनक्षयः।
कराला विषमा दन्ताः क्लेशाय च भयाय च ॥१५॥
पीताः श्यामाश्च दशनाः स्थूला दीर्घा द्विपङ्क्तयः।
शुक्त्याकाराश्च विरला दुःख-दौर्भाग्य-कारणम् ॥१६॥
अधस्तादधिकैर्दन्तैर्मातरं भक्षयेत् स्फुटम्।
पतिहीना च विकटैः कुलटा विरलैर्भवेत् ॥१७॥
विरला दन्ता द्विमहिलाः।

जिसके दाँत बराबर न हों वह धन से रहित होता है। चिक्कन, घने, तीक्ष्ण और समान दाँत हों तो श्रेष्ठ और शुभ जानना, जिह्वा लाल, सम, पतली और लम्बी हो तो शुभप्रद होती है। तालु यदि सफेद हो तो धन का नाश होता है। भयङ्कर और छोटे-बड़े दाँत क्लेश और भय को देते हैं॥१४-१५॥ पीले, काले, मोटे, लम्बे, दो पंक्तिवाले, शुक्ति (सीप) के समान और बीड़र दाँत, दुःख और दौर्भाग्य को देते हैं॥१६॥ नीच के दाँत अधिक हों तो माता की मृत्यु हो, विकट दाँतवाली स्त्री विधवा और बीड़र दाँत वाली वेश्या होती है॥१७॥ विरल दाँतवाले पुरुष दो स्त्रियों से युक्त होते हैं।

स्वरवर्णनम्—

करि-वृष-रथौघ-मेरी-मृदङ्ग-सिंहाब्द-निःस्वनाः भूपाः।
गर्दभ - जर्जर - रुक्षस्वराश्च धनसौख्यसन्त्यक्ता।१८।

हस्ती, बैल, रथों के समूह, नगाड़ा, मृदङ्ग, सिंह और मेघ के समान शब्दवाले मनुष्य राजा होते हैं। गदहा के समान स्वर वाले जर्जर (फटा हुआ) शब्द अथवा रूखे स्वरवाले धन और सुख से रहित होते हैं।।१८।।

ग्रीवालक्षणम्—

स्तम्भग्रीवो यदा देवि ! कम्बुकण्ठश्च यो नरः।
सर्वसंस्कारसम्पन्नो मन्त्रज्ञो विजयी भवेत्।।१९।।

हे देवि ! जिसकी ग्रीवा लम्बी, शङ्ख के समान तीन रेखाओं से युक्त हो तो वह सम्पूर्ण संस्कार से युक्त, मन्त्रशास्त्र का जानने वाला और विजयी होता है।।१९।।

कृकाटिका-स्कन्ध-हृदयवर्णनम्—

कृकाटिका सलोमा स्यात् पापी चैवाऽतिदुःखितः।
स्कन्धलोमाऽसुखी मर्त्यः लक्षणज्ञाः वदन्ति वै।।२०।।
ऋक्षोदरश्चाऽल्पवंशः हृल्लोमा करुणायुतः।
लोमहीनश्च चाण्डालो दीर्घाकारस्तथैव च।।२१।।

जिसकी घाटी में रोम हो वह मनुष्य पापी और अत्यन्त दुःखी होता है। कन्धे पर रोम होने से दुःखी होता है, ऐसा लक्षणिकों का कथन है। जिसका पेट भालू के समान हो वह अल्प सन्तान वाला होता है। हृदय में रोमवाला दयालु होता है और रोम से रहित और दीर्घाकार हृदय अथवा पेट हो तो मनुष्य चाण्डाल होता है।।२०-२१।।

बाहुवर्णनम्—

समांसौ चैव भुग्नाल्पौ श्लिष्टौ च विपुलौ शुभौ।
आजानुलम्बितौ बाहू वृत्तौ पीनौ नृपेश्वरे।।२२।।

निर्मांसौ रोमशौ ह्रस्वौ भुजौ दारिद्र्यदायकौ।
अलोमशौ तु सुखिनौ श्रेष्ठौ करिकरप्रभौ ॥२३॥

जिसके बाहु पुष्ट, कुछ टेढ़े, सुडौल और विशाल हों तो शुभदायक होते हैं और जानुपर्यन्त लम्बे, गोल और मोटे हों तो मनुष्य सम्राट् होता है। मांसरहित और लोम सहित छोटे बाहु दरिद्रों के होते हैं। रोम से रहित हाथी के सूँड़ के सदृश हों तो मनुष्य सुखी और श्रेष्ठ होता है॥२२-२३॥

हस्ताङ्गुलिलक्षणम्—

हस्ताङ्गुलयो दीर्घाश्चिरायुषामवलिताश्च सुभगानाम्।
मेधाविनां च सूक्ष्माश्चिपिटाः परकर्मनिरतानाम्॥२४॥

जिन मनुष्यों के हाथ की अंगुलियाँ लम्बी हों वे दीर्घजीवी होते हैं, जिनकी अँगुलियाँ सीधी हों वे सौभाग्यशाली होते हैं, सूक्ष्म अँगुलीवाले मनुष्य बुद्धिमान् और चिपटी अंगुली वाले प्राणी परकार्य करनेवाले होते हैं॥२४॥

स्थूलाभिर्धनरहिता बहिर्नताभिश्च शस्त्रनिर्याणाः।
कपि-सदृशकरा धनिनो व्याघ्रोपम-पाणयः पापाः ॥२५॥

मोटी अँगुली वाले मनुष्य दरिद्र होते हैं, पृष्ठ भाग की ओर झुकी अँगुलीवाले शस्त्र के द्वारा मृत्यु पाते हैं। बन्दर के समान हाथ वाले धनी और व्याघ्र के समान हाथ वाले पापी होते हैं॥२५॥

मणिबन्धनैर्निगूढैर्दृढैश्च सुश्लिष्ट-सन्धिभिर्भूपाः।
हीनैर्हस्तच्छेदः श्लथैः सशब्दश्च निर्द्रव्याः ॥२६॥

जिन मनुष्यों के मणिबन्ध पुष्ट (मांस से छिपे), सुदृढ़ और जोड़ों से सुघटित हों वे राजा होते हैं। यदि प्रमाण से न्यून हों तो हाथ काटे जाते हैं, ढीले और शब्दसहित हों तो मनुष्य दरिद्र होते हैं॥२६॥

पितृवित्तेन विहीना भवन्ति निम्नेन करतलेन नराः।
संवृतनिम्नैर्धनिनः प्रोत्तानकराश्च दातारः।२७।

गहरे करतलवाले मनुष्य पैतृक सम्पत्ति से रहित, गोल और गहरे करलतवाले धनी, उन्नत करतल वाले दाता होते हैं।।२७।।

नखवर्णनम्—

तुषसदृशनखाः क्लीबाश्चिपिटैः स्फुटितैश्च वित्तसन्त्यक्ताः।
कुनखविवर्णैः परतर्ककाश्च ताम्रैश्च भूपतयः।।२८।।

भूसी के समान नखवाले नपुंसक, चिपटे और फटे नखवाले द्रव्य से हीन, विवर्ण और कुत्सित नखवाले परछिद्रान्वेषी और ताम्र नख वाले राजा होते हैं।।२८।।

अंगुष्ठाङ्गुलिलक्षणम्—

अङ्गुष्ठयवैराढ्याः सुतवन्तोऽङ्गुष्ठमूलगैश्च यवैः।
दीर्घाङ्गुलिपर्वाणः सुभगो दीर्घायुषश्चैव ।।२९।।

धनी मनुष्यों के अँगुष्ठ में यव चिह्न हो तो वे धनी होते हैं, और अँगुष्ठ मूल में यव हो तो पुत्रवान् होते हैं, अँगुलियों के पर्व लम्बे हों तो मनुष्य भाग्यशाली और दीर्घायु होते हैं।।२९।।

स्निग्धा निम्ना रेखा धनिनां व्यत्ययेन निःस्वानाम्।
विरलाङ्गुलयो निःस्वा धनसञ्चयिनो घनाङ्गुलयः।।३०।।

धनी मनुष्यों के हाथ की रेखायें चिकनी और गहरी होती हैं, दरिद्रों की इससे विपरीत होती हैं। बीड़र अंगुलीवाले प्राणी धन-हीन और घनी अँगुलीवाले प्राणी धनसंचय करते हैं।।३०।।

तिस्रो रेखा मणिबन्धनोत्थिता करतलोपगा नृपतेः।
मीनयुगाङ्कितपाणिः नित्यं सर्वप्रदा भवति।।३१।।

तीन रेखायें मणिबन्ध से उठकर हाथ के समीप पहुँची

हों तो मनुष्य राजा होता है। दो मत्स्य रेखायें जिनके हाथ में हों वह सर्वदा अन्न, वस्त्रादि का दाता होता है॥३१॥

वज्राकारा धनिनां विद्याभाजां तु मीनपुच्छनिभा।
शङ्खाऽऽतपत्र-शिबिका गजाऽश्व-पद्मोपमा नृपतेः॥३२॥

वज्ररेखा जिनके हाथ में हो वे धनी और मछली के पुँछ-सी रेखा हो तो विद्वान्, शङ्ख, छत्र, पालकी, हाथी, घोड़ा और कमल के चिह्न जिनके हाथ में हों वे मनुष्य राजा होते हैं॥३२॥

कलश-मृणाल-पताकाऽङ्कुशोपमाभिर्भवन्ति निधिपालाः।
दामनिभाभिश्चाढ्याः स्वस्तिकरूपाभिरैश्वर्य्यम्॥३३॥

हाथ में कलश, कमलनाल, पताका और अङ्कुश का चिह्न हो तो मनुष्य द्रव्य के स्वामी होते हैं। दाम (रस्सी अथवा माला) का चिह्न हो तो वे धनी होते हैं और स्वस्तिक का चिह्न हो तो मनुष्य ऐश्वर्य पाते हैं॥३३॥

चक्राऽसि-परशु-तोमर-शक्ति-धनुः-कुन्तसन्निभा रेखाः।
कुर्वन्ति चमूनाथं यज्वानमुलूखलाकाराः॥३४॥

हाथ में चक्र, तलवार, फरसा, तोमर, शक्ति, धनुष और भाले की सदृश रेखायें हों तो मनुष्य सेनापति होते हैं। ओखरी के समान रेखा हो तो मनुष्य विधिपूर्वक यज्ञ करनेवाले होते हैं॥३४॥

मकर-ध्वज-कोष्ठागार-सन्निभाभिर्महाधनोपेताः।
वेदीनिभेन चैवाग्निहोत्रिणो ब्रह्मतीर्थम्॥३५॥

हाथ में मकर, ध्वजा, कोष्ठ और मन्दिर के चिह्न-विशेष की रेखाये हों तो मनुष्य महाधनी और ब्रह्मतीर्थ (अंगुष्ठमूल) में वेदी समान चिह्न हो तो अग्निहोत्री होते हैं॥३५॥

वापी-देवगृहाद्यैर्धर्मं कुर्वन्ति च त्रिकोणाभिः।
अङ्गुष्ठमूलरेखाः पुत्राः स्युर्दारिकाः सूक्ष्माः॥३६॥

यदि वापी (बावली), देवमन्दिर अथवा त्रिकोण का चिह्न दिख पड़े तो मनुष्य धर्मात्मा होते हैं और अङ्गुष्ठ के मूल में मोटी जितनी रेखायें हो उतने ही पुत्र और सूक्ष्म जितनी रेखायें हों उतनी ही कन्यायें पैदा होती हैं॥ ३६॥

आयुरेखावर्णनम्—

रेखाः प्रदेशिनीगाः शतायुषां कल्पनीयमूनाभिः ।
छिन्नाभिर्द्रुमपतनं बहुरेखारेखिनो निःस्वाः ॥३७॥

आयुरेखा यदि तर्जनी पर्यन्त गई हो तो मनुष्य सौ वर्ष तक जीता है। यदि कम हों तो उसकी कल्पना शास्त्रोक्त रीति से करना उचित है। और छिन्न-भिन्न (कटी-कुटी) हो तो प्राणी पेड़ या उच्च स्थान से गिरते हैं। बहुत रेखावाले दरिद्र होते हैं॥३७॥

एकवर्षेऽपि त्रिंशत्स्याद् द्विवर्षे द्विगुणं भवेत् ।
त्रिवर्षे चैव नवतिस्तूर्यवर्षे शताधिकम् ॥३८॥

एक वर्ष का मान ३०, दूसरे का ६०, तीसरे का ९० और चौथे का १००, सौ से १२० वर्ष तक होता है। प्रत्येक दो अङ्गुलियों के मध्य की वर्ष संज्ञा है। शतायु मानने वालों के मत से २५ पचीस के ४ खण्डों में विभक्त करने से १०० वर्ष पूरा होगा। इस मत से १ वर्ष का मान २५ होगा॥३८॥

यहाँ प्रसङ्गवश कुछ रेखाओं का वर्णन कर दिया गया है, इनका विस्तार यथासाध्य रेखा प्रकरण में किया जायेगा।

वलिलक्षणम्—

शास्त्रान्तं स्त्रीभोगिनमाचार्य्यः बहुसुतं यथासंख्यम् ।
एकद्वित्रिचतुर्भिर्वलिभिर्विद्यान्नृपं त्ववलितम् ॥३९॥

जिस मनुष्य के पेट में एक वलि हो वह शास्त्र का पारङ्गत हो, दो वलि हो तो स्त्री का उपभोग करनेवाला, तीन वलि होने से आचार्य, चार-वलि हो तो अधिक पुत्रवाला होता है। राजा वलि से रहित होते हैं॥३९॥

नाभिलक्षणम्—

नाभिः स्याद्दक्षिणावर्ता शुभदा त्वपराऽशुभा।
गम्भीरा सुखभोगाढ्या पूँगीनाभिस्तु मातृहा ॥४०॥

दक्षिणावर्त नाभि शुभ है और वामावर्त अशुभ होती है। गहरी नाभि सुख और भोग से युक्त करती है और ऊँची नाभि माता का विनाश करती है॥४०॥

पृष्ठलक्षणम्—

पृष्ठरोमा नरो राजा द्विभार्यः कोऽपि जायते।
बहुलोम्नि शिराले च भुग्नपृष्ठे दरिद्रराट् ॥४१॥

पीठ में यदि रोम हों तो मनुष्य राजा होता है। कदाचित् किसी-किसी का दो विवाह भी होता है, यदि नसों से युक्त टेढ़ी अथवा बहुरोमयुक्त हो तो प्राणी महादरिद्र होता है॥४१॥

कटिलक्षणम्—

कटिस्थूला सतिलका नृणां दारिद्र्यदुःखदा।
कटिक्षीणो महाभोगी शोभनोऽथ विचक्षणः ॥४२॥

जिनकी कमर मोटी और तिल युक्त हो, वे मनुष्य दरिद्र और दुःखी होते हैं। क्षीण कमरवाले पुरुष बड़े भोगी, सुन्दर और बुद्धिमान् होते हैं॥४२॥

लिङ्गलक्षणम्—

कर्कशे कठिने पीने जारा अन्ये दरिद्रिणः।
ह्रस्वलिङ्गे धनाढ्याः स्युः सूक्ष्मे सन्ततिवर्जिताः ॥४३॥

जिनके लिङ्ग कर्कश, कठिन और मोटे हों वे मनुष्य परस्त्री-गामी और इससे विपरीत हों तो दरिद्र होते हैं। छोटे लिङ्ग वाले धनी और सूक्ष्म लिङ्ग वाले प्राणी सन्ततिरहित होते हैं॥४३॥

स्फिक्लक्षणम्—

मण्डूकस्फिङ्नरो राजा दरिद्रः स्थूलस्फिग् भवेत्।
स्फिग्धीनस्तु महादुःखी परद्वेषरतः सदा॥४४॥

जिस मनुष्य की कुल्ही (चूतड़ का पिछला भाग) मेढक के समान हो तो वह राजा, जिसका मोटा हो वह दरिद्र जिसे कुल्ही न हो वह अत्यन्त दुःखी और दूसरों के साथ निरन्तर द्वेष करता है॥४४॥

ऊरूवर्णनम्—

रम्भोरू रोमहीनौ चेत् सर्पाकारौ सुशोभनौ।
महत्सौख्ययुतो मर्त्यः सुखी भवति निश्चितम्॥४५॥
रोमत्रये दरिद्रः स्याद्रोगी निर्म्मांसजानुकः।
महद्दारिद्र्यजं दुःखं भुङ्क्ते रोमचतुर्थके॥४६॥

जिसकी जंघा केले के खम्भे के समान, रोमरहित, सर्पा-कार और सुन्दर हो तो मनुष्य अत्यन्त शौकीन और निश्चय सुखी होता है। जिसकी जंघा के एक रोमकूप में तीन रोवें हों वे प्राणी दरिद्र, चार रोवें हों तो अति दारिद्र्यजन्य दुःख भोगनेवाला और मांस-रहित जानु हो तो मनुष्य रोगी होता है॥४५-४६॥

पदलक्षणम्—

सूर्पाकारौ विरुक्षौ च वक्रौ पादौ शिरालकौ।
संशुष्कौ पाण्डुरनखौ निःस्वस्य विरलाङ्गुली॥४७॥
अस्वेदितौ मृदुतलौ कमलोदरसन्निभौ।
श्लिष्टांगुली ताम्रनखौ पादावुष्णौ शिरोज्झितौ।
कूर्मोन्नतौ गूढगुल्फौ सुपार्ष्णी नृपतेः स्मृतौ॥४८॥

जिस मनुष्य के पैर सूप के समान, अत्यन्त रूखे, टेढ़े नसयुक्त अत्यन्त सूखे हों, पीले नख तथा अंगुलियाँ बीड़र हों तो वह निर्धन होता है। जिसके पैर के तलवे पसीने से रहित, कोमल कमलोदर के समान हों, अंगुलियाँ सटी, नख लाल, पैर ऊष्ण, नखों से रहित कछुये के समान उन्नत हो, गुल्फ (गुट्टियाँ) छिपी हों और एड़ी सुन्दर हो तो वह मनुष्य राजा होता है॥४७-४८॥

इति नखशिखवर्णनम्।

प्रमदालक्षणविशेषमाह—

पूर्णचन्द्रमुखी या च बालसूर्य - समप्रभा।
विशालनेत्रा विम्बोष्ठी सा कन्या लभते सुखम् ॥१॥

जिस कन्या का मुख पूर्णचन्द्र के समान, शरीर की कान्ति उदय-कालिक सूर्य के समान, नेत्र कर्णपर्यन्त लम्बे और ओष्ठ कुन्दरू के समान लाल हों तो वह कन्या सुख भोगने वाली होती है॥ १ ॥

या च काञ्चनवर्णाभा रक्तपुष्पसरोरुहा।
सहस्राणां तु नारीणां भवेत् साऽपि पतिव्रता ॥२॥

जिस स्त्री के शरीर की कान्ति सुवर्ण के समान हो और हाथ कमल के समान रक्त हों तो वह हजारों पतिव्रताओं में प्रधान होती है॥ २ ॥

वक्रकेशा च या कन्या मण्डलाक्षी च या भवेत्।
भर्ता च म्रियते तस्या नियतं दुःखभागिनी ॥३॥

जिसके बाल टेढ़े और नेत्र गोल हों तो वह कन्या विधवा और निरन्तर दुःख भोगने वाली होती है॥ ३ ॥

नीलोत्पलनिभं चक्षुर्नासालग्नं शुभावहम्।
केकरे पिङ्गले नेत्रे श्यामे लोलेक्षणेऽसती ॥४॥

जिसके नेत्र नील कमल के समान सुन्दर और नासिका से मिले हों तो वह स्त्री सुलक्षणा होती है। कञ्जे, पिङ्गल, काले और चञ्चल नेत्र वाली स्त्री पुँश्चली होती है॥ ४ ॥

ललनालोचने शस्ते रक्तान्ते कृष्णतारके।
गोक्षीरवर्णविशदे सुस्निग्धे कृष्णपक्ष्मणी ॥५॥

जिसके दोनों नेत्र-प्रान्त रक्तवर्ण, पुतली काली, चारों ओर गोदुग्ध

के समान स्वच्छ और सरस हों तथा बरौनी काली हो तो वह स्त्री सुलक्षणा होती है॥५॥

उन्नताक्षी न दीर्घायुः वृत्ताक्षी कुलटा भवेत्।
मेषाक्षी महिषाक्षी च केकराक्षा न शोभना ॥६॥

ऊँचे नेत्र वाली स्त्री अल्पायु और गोल नेत्र वाली पुंश्चली होती है, भेंड़ा, भैंसा के समान तथा कञ्जे नेत्रवाली दुष्टा होती है॥६॥

कामिनीनां तु नितरां गोपिङ्गाक्षी सुदुर्मदा।
पारावताक्षी दुःशीला रक्ताक्षी भर्तृघातिनी ॥७॥

गौ के समान पिंगल नेत्र वाली स्त्री सब स्त्रियों में अत्यन्त दर्पवाली होती है, कबूतर के समान नेत्रवाली दुःशीला और लाल नेत्र वाली पतिघातिनी होती है॥७॥

कोटराननयना दुष्टा गजनेत्रा न शोभना।
पुंश्चली वामकाणाक्षी बन्ध्या दक्षिणकाणिका ॥८॥

खोढ़रे के समान नेत्र वाली दुष्टा और हाथी के समान नेत्र वाली अशोभना होती है, जिसका वाम नेत्र काना हो तो वह पुंश्चली और दाहिना नेत्र काना हो तो वह स्त्री वन्ध्या होती है॥८॥

मधुपिंगाक्षी रमणी धनधान्यसमृद्धिभाक्।
प्रलम्बमणिकं यस्याः देवरं हन्ति सा ध्रुवम् ॥९॥

शहद के समान पिङ्गल नयन वाली स्त्री धन-धान्य से पूर्ण होती है, और जिसके नेत्र की पुतली लम्बी हो वह स्त्री निश्चय देवर को मारने वाली होती है॥९॥

कृष्णा कपिलकेशी च मिलिताभ्रुकुटिस्तथा।
गमनं सत्त्वरं चैव त्यक्तव्या स्यात् सदा बुधैः ॥१०॥

जो स्त्री श्यामवर्ण हो, केश जिसके कपिल हों, दोनों भौंहें मिली

हों और शीघ्र चलनेवाली हो तो वह स्त्री पण्डितों से त्याज्य है।१०।

विरलां दशना यस्याः कृष्णौष्ठी कृष्णजिह्विका ।
भर्तारं प्रथमं हन्ति द्वितीयं चैव विन्दति ॥११॥

जिसके दाँत विरल (बीड़र) हों, ओष्ठ और जिह्वा कृष्ण वर्ण हो तो वह स्त्री विवाहित पति को मार कर द्वितीय पति प्राप्त करती है॥११॥

त्रीणि यस्याः प्रलम्बानि ललाटमुदरं भगम् ।
त्रीणि सा भक्षयेन्नारी श्वशुरं देवरं पतिम् ॥१२॥

जिसके ललाट, उदर और भग ये तीनों लम्बे हों वह स्त्री क्रमशः श्वसुर, देवर, पति इन तीनों को खा जाती है॥१२॥

कनिष्ठाऽनामिका यस्याः यदि मध्यमिका तथा ।
भूमिं न स्पृशते सा स्त्री विज्ञेया व्यभिचारिणी ॥१३॥

चलते समय जिस स्त्री के पैर की कनिष्ठिका, अनामिका और मध्यमा भूमि को स्पर्श न करे तो वह व्यभिचारिणी होती है॥१३॥

पादे प्रदेशिनी यस्याः अङ्गुष्ठं समतिक्रमेत् ।
न सा भर्तृगृहे तिष्ठेत् स्वच्छन्दा कामचारिणी ॥१४॥

जिस स्त्री के पैर की प्रदेशिनी अँगुली अंगुष्ठ से बड़ी हो वह स्त्री पतिगृह को त्यागकर स्वछन्दचारिणी होती है॥१४॥

यस्याः गमनमात्रेण भूमौ कम्पः प्रजायते ।
बह्वाशिनीं प्रलोभाञ्च तां नारीं परिवर्जयेत् ॥१५॥

जिसके गमन काल में पृथ्वी कम्पायमान हो तथा अधिक भोजन करनेवाली और लोभ से युक्त हो तो उस स्त्री को त्याग देवे॥१५॥

राजहंसगतिर्वाऽपि मत्तमातङ्गगामिनि ।
सिंहशार्दूलमध्या च सा भवेत् सुखभागिनी ॥१६॥

जो स्त्री राजहंस तथा मतवाले हाथी के समान चलने-वाली हो और जिसकी कमर सिंह अथवा व्याघ्र के समान पतली हो तो वह स्त्री सुख भोगने वाली होती है॥१६॥

गौराङ्गी वा तथा कृष्णा स्निग्धमङ्गं मुखं तथा।
दन्ता स्तनं शिरो यस्याः सा कन्या लभते सुखम् ॥१७॥

जो स्त्री गौर अथवा कृष्णवर्ण हो, अङ्ग, मुख, दन्त, स्तन और शिरो भाग स्निग्ध हो तो वह सुखभागिनी होती है॥१७॥

मृदङ्गी मृगनेत्राऽपि मृगजानु मृगोदरी।
दासीजाताऽपि सा कन्या राजानं पतिमाप्नुयात् ॥१८॥

जिस नारी के अङ्ग कोमल तथा नेत्र, जानु और उदर मृग के समान हों तो वह स्त्री दासी के गर्भ से उत्पन्न होकर भी राजा के समान पति को प्राप्त करती है॥१८॥

प्रमदाकरांगुष्ठरेखादिलक्षणविशेषमाह—

अम्भोजः मुकुलाकारमङ्गुष्ठांगुलि - सम्मुखम्।
हस्तद्वयं मृगाक्षीणां बहुभोगाय जायते ॥१९॥
मृदु मध्योन्नतं रक्तं तलं पाण्योररन्ध्रकम्।
प्रशस्तं शस्तरेखाढ्यमल्परेखं शुभश्रियम् ॥२०॥

जिन मृगनेत्रा रमणियों के दोनों हाथ, अङ्गुष्ठ और अंगुलियाँ सामने होकर कमल कलिका के समान सुन्दर हों तो उनके बहुभोग को उत्पन्न करती हैं। जिसके करतल कोमल, रक्तवर्ण, छिद्ररहित, मध्य भाग उन्नत, अच्छी रेखाओं से युक्त होकर थोड़ी रेखाओं से विभूषित हो वह स्त्री सौभाग्य और लक्ष्मी से युक्त होती है॥१९-२०॥

विधवा बहुरेखेण विरेखेण दरिद्रिणी।
भिक्षुकी सुशिराढ्येन नारी कतंर लेन वै ॥२१॥

जिस स्त्री का करतल बहुत रेखाओं से युक्त हो तो वह स्त्री विधवा, रेखारहित हो तो दरिद्रिणी और अधिक नसों से युक्त हो तो भिक्षुकी होती है॥२१॥

विरोमं विशिरं शस्तं पाणिपृष्ठं समुन्नतम् ।
वैधव्यहेतुरोमाढ्यं निर्मांसं स्नायुमत्यजेत् ॥२२॥

जिस रमणी का करपृष्ठ उन्नत होकर रोम और नसों से रहित हो तो शुभ है। रोमयुक्त होकर मांस रहित नसों से युक्त हो तो वैधव्य का कारण है। अतः उसको त्याग देवे॥२२॥

रक्ता व्यक्ता गभीरा च स्निग्धा पूर्णा च वर्तुला।
कररेखाङ्गनायाः स्याच्छुभा भाग्यानुसारतः ॥२३॥

जिस ललना के हाथ की रेखा लाल, स्पष्ट, गहरी, चिकनी, पूर्ण और गोलाकार हो तो उसके भाग्यानुसार शुभ होता है॥२३॥

मत्स्येन सुभगा नारी स्वस्तिकेन वसुप्रदा ।
पद्मेन भूषते पत्नी जनयेद् भूपतिं सुतम् ॥२४॥

जिस अङ्गना के करतल में मत्स्य का चिह्न हो तो वह सुन्दर भाग्यवाली और स्वस्तिक का चिह्न हो तो धन देनेवाली होती है। कमल का चिह्न हो तो राजपत्नी होकर भूमि का पालन करनेवाला पुत्र पैदा करती है॥२४॥

चक्रवर्तिस्त्रियाः पाणौ नद्यावर्तः प्रदक्षिणः।
शङ्खातपत्रकमठा नृपमातृत्वसूचकाः ॥२५॥

जिस रमणी के पाणितल में दक्षिणावर्त मण्डल का चिह्न हो तो वह मानिनी, चक्रवर्ती राजा की पटरानी होती है। शङ्ख, छत्र और कच्छप का चिह्न हो तो वह स्त्री राजमाता होती है॥२५॥

तुलामानाकृती रेखा वणिक्पत्नित्वहेतुका ।
गजवाजिवृषाकारा करे वामे मृगीदृशा ॥२६॥

जिन मृगनयनी स्त्रियों के वाम कर में तराजू, हाथी, घोड़े, और बैल के चिह्न-विशेष हों तो वे बनिये की स्त्री होती है॥२६॥

रेखा प्रासादवज्राभा सूते तीर्थकरं सुतम्।
कृषीबलस्य पत्नी स्याच्छकटेन मृगेण वा॥२७॥

जिसके हाथ में वज्र और प्रासाद (कोठी) का चिह्न हो तो वह स्त्री तीर्थ करनेवाले पुत्र को पैदा करती है। शकट और मृग का चिह्न हो तो खेतिहर (किसान) की स्त्री होती है॥२७॥

चामरांकुश-कोदण्डैः राजपत्नी भवेद् ध्रुवम्।
अंगुष्ठमूलान्निर्गत्य रेखा याति कनिष्ठिकाम्॥२८॥
यदि सा पतिहन्त्री स्याद् दूरतस्तां त्यजेद्बुधः।

जिस कामिनी के करतल में चमर, अङ्कुश और धनुष के समान रेखा हो तो वह निश्चय राजपत्नी होती है। यदि अङ्गुष्ठ मूल से निकलकर कनिष्ठा पर्यन्त रेखा जाय तो वह स्त्री पति-घातिनी होती है। अतः पण्डित उसका परित्याग कर देवें॥२८॥

त्रिशूलाऽसगदाशक्ति - दुन्दुभ्याकृतिरेखया॥२९॥
नितम्बिनी कीर्तिमती त्यागेन पृथिवीतले।

जिस प्रशस्त नितम्बवाली रमणी के करतल में त्रिशूल, तलवार, गदा, शक्ति और नगाड़े के आकार की रेखा हो तो वह दान के द्वारा कीर्ति प्राप्त करती है॥२९॥

कङ्क-जम्बूक - मण्डूक - वृक - वृश्चिकभोगिनः॥३०॥
रासभोष्ट्रविडालाः स्युः करस्था दुःखदाः स्त्रियः।
शुभदः सरलोऽङ्गुष्ठो वृत्तो वृत्तनखो मृदुः॥३१॥

जिन स्त्रियों के हाथ में सफेद चिह्न, शृगाल, मण्डूक, भेड़िया, बिच्छू, सर्प, गदहा, ऊँट और बिडाल के चिह्न-विशेष हों तो वे दुःखकारी होती हैं। जिन सुन्दरियों के अंगुष्ठ सीधे, गोल तथा नख गोल और कोमल हो तो शुभप्रद है॥३०-३१॥

अङ्गुल्यश्च सुपर्वाणो दीर्घा वृत्ताः शुभाः कृशा ।
चिपिटाः स्थपुटा रूक्षा पृष्ठरोमयुजोऽशुभाः ॥३२॥

जिन सुन्दरियों की अंगुलियाँ लम्बी, गोल, सुन्दर पर्वों से विभूषित और क्रमशः पलती हों तो शुभफल को देती हैं। चिपटी, छोटी और रूखी तथा पृष्ठ भाग में रोम हों तो अशुभ है॥३२॥

अतिह्रस्वाः कृशा वक्रा विरला रोगहेतुकाः ।
दुःखायाऽङ्गुलयः स्त्रीणां बहुपर्वसमन्विताः ॥३३॥

स्त्रियों के हाथ की अँगुलियाँ यदि बहुत छोटी, पतली, टेढ़ी और विरल हों तो रोगों का कारण होती है। और अधिक पर्वों से युक्त हों तो दुःखप्रद होती हैं॥३३॥

अरुणाः सशिखास्तुङ्गाः करजाः सुदृशां शुभाः ।
निम्ना विवर्णा शुक्त्याभा पीता दारिद्र्यसूचकाः ॥३४॥
नखेषु विन्दवः श्वेताः प्रायः स्युः स्वैरिणीस्त्रियः ।
पुरुषा अपि जायन्ते दुःखिनः पुष्पितैर्नखैः ॥३५॥

सुन्दर नेत्रवाली स्त्रियों के नख यदि लाल, शिखायुक्त और ऊँचे हों तो शुभ, गहिरे, विवर्ण, शुक्ति (सीप) के समान और पीले-पीले हों तो दारिद्र्य को सूचित करते हैं। नखों में यदि श्वेत बिन्दु हों तो स्त्रियाँ प्रायः पुँश्चली होती हैं। पुरुष भी पुष्पयुक्त नखों से दुःखी होते हैं॥३४-३५॥

शरीरमानम्—

अष्टशतं षण्णवतिः परिमाणं चतुरशीतिरिति पुंसाम्।
उत्तमसमहीनानामङ्गुलसंख्या स्वमानेन॥३६॥

अपने अंगुल-प्रमाण से १०८ अङ्गुल पर्यन्त ऊँचे मनुष्य उत्तम, ९६ अँगुल पर्यन्त ऊँचे मध्यम और ८४ अँगुल प्रमाण ऊँचे अधम होते हैं॥३६॥

विशेषाङ्गशुभवर्णनम्—

विशेषाङ्गान्यनिष्टानि शिरः पदकरोदरे ।
नितम्बकटिगुह्याख्यैर्लिङ्गेऽप्यष्टानि तानि च ।।३७।।

मनुष्यों के शिर, पैर, हाथ और उदर में यदि कोई विशेष अङ्ग हो तो अत्यन्त हानि और नितम्ब, कमर, भग तथा लिङ्ग में विशेषाङ्ग हो तो लाभप्रद है।।३७।।

कराङ्गुष्ठमूलेऽङ्गुली घोरपापी भवेत्पूर्वपर्वे प्रभुः स्यान्नराणाम्।
यदाऽङ्गुष्ठमध्ये नरो वंशघाती तथाऽन्यत्र देशे भवेच्छोधकोऽसौ।३८।

यदि अङ्गुष्ठमूल में अँगुली हो तो मनुष्य महापापी, अँगुष्ठ के प्रथम पर्व में हो तो राजा, अँगुष्ठ के मध्य में होने से वंश का नाशक तथा इसके अतिरिक्त और कहीं हो तो मनुष्य स्त्री-पुत्रादि से रहित होता है।।३८।।

दरिद्रोऽद्भुतस्तर्जनीमूलदेशोऽङ्गुली स्याद्यदा यस्य मध्येऽल्पमायुः।
अनामांगुलावंगुलीत्राणकर्ता कनिष्ठाङ्गुलीमूलदेशे नृपालः।३९।

तर्जनी के मूल में यदि कोई अँगुली हो तो अद्भुत दरिद्र, तर्जनी के मध्य में कोई अँगुली हो तो अल्पायु, अनामिका में कोई अँगुली हो तो मनुष्यों का पालन करनेवाला और कनिष्ठिका के मूल में अँगुली होने से मनुष्य राजा होता है।।३९।।

तिलवर्णनम्—

अङ्गुष्ठेऽङ्गुष्ठपार्श्वे च बहुगन्ता नरस्तिले ।
द्वेषी स्यात्तर्जनीपार्श्वे धनी चाऽत्र न संशयः ।।४०।।
मध्यमापार्श्वभागे तु जनः शान्तिप्रियः सुखी ।
तिलस्त्वनामिका देशे रमा विद्यानिधिर्भवेत् ।।४१।।

यदि हाथ के अँगूठे के बगल में तिल हो तो मनुष्य अधिक चलने वाला, तर्जनी अँगुली के बगल में तिल हो तो द्वेष करने वाला और धनी होता है, इसमें कोई सन्देह नहीं। मध्यमा के बगल में तिल हो तो शान्त और सुखी, अनामिका में तिल हो तो मनुष्य लक्ष्मी और विद्या से युक्त होता है।।४०-४१।।

तथा कनिष्ठिकापार्श्वे सुतवित्तसमन्वितः।
तिलं करतले यस्य सततञ्च धनागमः।।४२।।
लालाटिको ललाटे च नेत्रे जारः प्रचक्षते।
श्रवणे सर्वसिद्धिः स्यान्नासा दुष्टः प्रकीर्तितः।।४३।।

यदि कनिष्ठिका के बगल में तिल हो तो मनुष्य धन, पुत्र से युक्त और करतल में तिल हो तो निरन्तर द्रव्य की प्राप्ति होती है। जिसके ललाट में तिल हो वह मनुष्य लालाटिक (स्वामी के कार्य में असमर्थ होकर उसके मुख का भाव देखने वाला) होता है। नेत्र में तिल हो तो परस्त्रीगामी, कानों में तिल हो तो सम्पूर्ण सिद्धियों को देनेवाला, नाक में तिल हो तो मनुष्य दुष्ट होता है।।४२-४३।।

कपोले सुषमायुक्तः लोभी स्यादधरे तिलः।
कण्ठे भक्तो मनुष्यः स्याद् हृदि सौभाग्यकारणम्।।४४।।

कपोल में तिल होने से प्राणी सुषमा (अत्यन्त शोभा) से युक्त, अधरोष्ठ में तिल हो तो लोभी, कण्ठ में तिल हो तो भक्त और हृदय में तिल हो तो सौभाग्य का कारण होता है।।४४।।

बाहौ धनं विजानीयाल्लिङ्गे तु प्रमदारतः।
जङ्घयो रसिको मर्त्यः पादे नृपतिवाहनम्।।४५।।

बाहु में तिल हो तो धनी, लिंग में हो तो स्त्री में आसक्त, जघा में होने से रसिक और पैर में तिल हो तो राजा की सवारी प्राप्त होती है।।४५।।

पृष्ठे कटौ नितम्बे च गुह्ये व्यर्थतिलो भवेत् ।
वामाङ्गे च शुभः स्त्रीणां प्रायः पुंसाञ्च दक्षिणे ।।४६।।

पीठ, कमर, नितम्ब और गुप्त इन्द्रियों में तिल हो तो व्यर्थ होता है। प्रायः स्त्रियों के वाम और पुरुषों के दक्षिण अंग में तिलादिक शुभ होते हैं।।४६।।

इति नखशिखवर्ण्णनम्।

* * *

श्री १०८ कामाख्यायै नमः

गिरिजा-शङ्करौ वन्दे कृष्णं विष्णुं सदा गुरुम् ।
गणेशं शारदां दुर्गां शावरीञ्चाऽर्थकारिणीम् ।।१।।

गिरिजा, शङ्कर, कृष्ण, विष्णु, गुरु, गणेश, सरस्वती, दुर्गा और मनोरथ सिद्ध करनेवाली शावरी मन्त्र शक्ति को निरन्तर प्रणाम करता हूँ।।१।।

अथ शशकादितुर्यपुरुषाणां जीवनचरित्राणि-

तत्राऽऽदौ शशकस्य—

भवन्ति खलु प्रायः कमलकुन्तलविपुलेक्षणशान्तशान्तशासन-निरतसूक्ष्मशरीरावयवाऽतिपवित्रपूर्णेन्दुवदनस्निग्धसमाल्पदशनाः, कराङ्घ्रि-जानुजघनग्रीवोरुषु श्यामतां बिभ्राणाः, सुरभिमदनस्पन्दाः सकृदतिविरता अदर्शनेऽपि योजनव्यादासुरभयो युगाद्यन्तप्रभवाष्ट-त्रिंशद्वर्षावच्छिन्नावयवा अल्पात्मजप्रभावशालिनो देवपुरुषाः शशकाः।

शशक, मृग, तुरग और वृषभ जाति के पुरुषों के जीवन चरित्र।

प्रथम शशक का वर्णन करते हैं, प्रायः इस जाति के पुरुषों के केश कोमल, नेत्र विशाल होते हैं, ये शान्त और शान्तिपूर्वक शासन में

तत्पर रहते हैं, इनके शरीर के अंग सूक्ष्म, स्वयं अत्यन्त पवित्र और मुख पूर्ण चन्द्रमा के समान आनन्ददायक, दाँत चिकनें, बराबर और थोड़े होते हैं। इनके हाथ, पैर, जानु, पेडू, ग्रीवा तथा जंघा में कुछ श्यामता होती है। वीर्य में सुगन्धि होती है। ये थोड़ा विषय करनेवाले होते हैं, एक स्थान में रहने पर भी चार कोश तक इनकी सुगन्धि फैली रहती है। ये युग के आदि और अन्त में पैदा होते हैं और ३८ वर्ष तक जीते और प्रभावशाली होते हैं, सन्तान इन्हें थोड़ी होती है। कोई-कोई इन्हें देवपुरुष भी कहते हैं।

साधारणमृगलक्षणम्—

मृदुल-स्निग्ध-रक्ताधर-महासमान-विहार-विहसिताला-पाह्वान-समकाल एव दृष्टिपातागमनोत्सुकाः, खण्डा-खण्ड-त्रिकोणोपलक्षितपाणि तलप्रदेशाः, मञ्जुलेक्षणोत्पलशोभन-वदनारविन्द-मृदुपाणि-पादाऽनतिस्थूलकृशा, लघुशरीरास्ति-लाङ्कित-हृदयसुग्रीव-मध्यांशकाश्चञ्चलतमा अपि धीरबुद्धयो लज्जानताननाा अनवरतनृत्यगानवादना-दिप्रमोदे रताश्चित्ता-कर्षकमोहनमूर्तयः कुरङ्गजातयः पुरुषा भवन्ति।

अन्यदपि—

प्रसन्नमूर्तिः समुदारचेताः वंशाभिमानी शुभवाग्विलासः।
अनीतिभीरुर्गुरुसाधुनम्रः साम्राज्यलक्ष्मीं लभते मनुष्यः।१।

अपरञ्च—

सदा विहारवार्तां वै वार्तान्ते रसमुत्तमम्।
पशुं पक्षिणमालोक्य मृगो मोदं लभेत च ॥ २॥

मृगजातीनां फलानि—

आयुष्यरेखाकनिष्ठाङ्गुल्योर्मध्ये समुल्लसन्त्या ललनारेखया भवदी-याधर्मज्ञा महिला सुखान्यनुभूय भवतः पूर्वमेवाऽमरलोकं गमिष्यति,

द्वितीयाप्येवम्। श्रीमता पञ्चपुत्राः सङ्कलने नवैकादश वेति तेष्वेक-स्यात्मजस्य नृपलाञ्छनलाञ्छितत्वेन नृपालयोगः, पूर्वप्रतिपादितपुत्रेषु दुहितरश्चाधिकगुणोपपन्नाः भविष्यन्ति। तास्वेका पूर्णचन्द्रानना बाल-सूर्यप्रभा विशालनेत्रा अभयकुलानन्ददायिनी कटिदरिद्रा हंसगमना चारुभाषिणी साक्षाद्रमैव सर्वगुणालंकृता भविष्यति। स्थास्यति च सूनुरेकः, द्वे कन्ये च स्थास्यतः। पञ्चभ्रातरः सङ्कलने नवैकादश वेति एको भ्रातैका भगिनी च स्थास्यति। एकत्रिंशद्धायनेऽथवा बाल्ये मातृहा पितृहा वेति सूचयति। एकोनविंशदुपरि विद्याद्युन्नतिः। एकद्वित्रितूर्य-पञ्चनववयःसु सुतवित्तभवनारामभूप्रतिष्ठादिभिर्भाग्योदयः। त्रिपञ्चा-शत्त्रिषष्टित्रिसप्ततित्र्यशीतिवर्षेषु कष्टादि शरीरपतनञ्च निश्चेयम्। पित्रोरेकस्य स्थितौ द्वौ वासी स्वकीयोद्योगेन राजगृहाद्धनाद्याप्तिः भविष्यन्ति। महामारसंकेतिन्यो बह्व्यः स्त्रियः। भुजङ्गरूपा बह्वरयः श्रीमतोऽशितुं समागमिष्यन्ति, तत्र भवन्तो वैनतेयाः सर्वाञ्छ-त्रून्नाशयिष्यन्ति। चित्रिते प्रासादे चिरं निष्कण्टकं राज्यं करिष्यन्ति भवन्तः। तुरगगजाद्यलंकृतं भवन्तं प्रतिस्पर्धिनोऽपि परिचर्यामाच-रिष्यन्ति। वसन्तसङ्केतिन्या काननोद्भवया अरविन्दरेखया पूर्वोक्त-कष्टादिहायनेषूत्तरायणे सरित्तटेऽल्पक्लेशेनापवर्गाप्तिश्च। तुरगवृष-भेतराणां दुर्लभं जन्मेति।

मृगजाति वाले पुरुषों के अधरोष्ठ कोमल, चिकने और लाल होते हैं। इस जाति के पुरुष श्रेष्ठ विहार शील, हँसकर बोलने वाले, पुकारते ही लौट कर देखते और आगमनोत्सुक होते हैं। उनका करतल खण्ड वा पूर्ण त्रिकोण से युक्त होता है। सुन्दर कमल के समान नेत्रों से मुखारविन्द अति मनोहर और हाथ-पैर कोमल होते हैं। उनका शरीर न बहुत मोटा और न पतला तथा छोटा भी नहीं होता। हृदय तिल से अंकित, ग्रीवा सुन्दर, कन्धे मध्यम होते हैं। वे चञ्चल होकर भी धीर बुद्धिवाले होते हैं। उनका मुख लज्जा से नम्र होता है। वे निरन्तर नाच, गाना, बजाना आदि आनन्द

में मग्न, मोहन मूर्ति और चित्त अपनी ओर खींचने वाले होते हैं।

और प्रसन्नता की मूर्ति, उदार चित्त, अपने कुल का अभिमान करनेवाले, उत्तम और प्रिय बोलते, अनीति से डरते, गुरु और साधु से नम्र होकर साम्राज्यलक्ष्मी (ऐश्वर्य) को प्राप्त करते हैं। मृग पुरुष सदा विहारविषयक वार्ता करते और उसके अन्त में उत्तम रस पाते और पशु-पक्षियों को देखकर शीघ्र प्रसन्न होते हैं।

मृग जातिवालों के फल—

हाथ में आयु रेखा और कनिष्ठिका अङ्गुली के बीच में शोभने वाली स्त्री-रेखा से विदित होता है कि आपकी धर्मपत्नी आपके पहिले ही सम्पूर्ण सुखों का अनुभव कर स्वर्गवासिनी होगी; इसी प्रकार दूसरी भी। आपको पाँच पुत्र होंगे, कन्या पुत्र मिलकर नौ या ग्यारह होंगे। उनमें से एक पुत्र को राजयोग पाया जाता है। लड़कों के साथ कही हुई लड़कियाँ भी अधिक गुणवती होंगी। उनमें से एक पूर्ण चन्द्रमुखी, जिसकी शरीर-कान्ति उदयकालिक सूर्य के समान, आँखें बड़ी, कमर पतली, चाल हंस की-सी और बोली मनोहर होगी, वह दोनों कुल को आनन्द देनेवाली, साक्षात् लक्ष्मी के समान, सब गुणों से अलङ्कृत होगी और रहेगी। एक पुत्र, दो कन्यायें ठहरेंगी। एवं पाँच भाई, सब (भाई-बहिन) मिलकर संख्या में नव या ग्यारह होंगे, उनमें एक भाई-बहिन रहेगी। ३१ वर्ष अथवा, बाल्यावस्था में माता-पिता में से एक का जीवित रहना (रेखानुसार) सूचित करता है। १६ वर्ष के बाद विद्या आदि की उन्नति ९-१८-२७-३६ और ४५ इन वर्षों में यथावकाश धन, पुत्र, गृह, वाटिका, भूमि और प्रतिष्ठादिक से भाग्योदय, ५३-६३-७३ और ८३ इन वर्षों में शरीर को कष्ट और मरणादि का निश्चय करना, माता-पिता में से एक के न रहने या दो स्थानों में रहना। अपने उद्योग द्वारा राजगृह से धनादि की प्राप्ति होती है। आपकी काम-कला में प्रवीण बहुत-सी स्त्रियाँ होंगी। सर्पतुल्य

बहुत से शत्रु आपका अपकार करने आवेंगे किन्तु गरुड़ के समान आप सबका विनाश करेंगे। चित्रों से सुसज्जित महल में बहुत काल तक अकण्टक सुख का अनुभव आप करेंगे। हाथी, घोड़े, इत्यादि वाहनों से युक्त होंगे, आपके शत्रु भी आपकी सेवा करेंगे। करतल में वसन्त काल का संकेत करनेवाली कमल रेखा से सूचित होता है कि पूर्वोक्त ५३ आदि कष्टप्रद वर्षों में सूर्य के उत्तरायण होने पर नदी के समीप अल्प क्लेश से शरीर का पात होगा। तुरग और वृषभ के अतिरिक्त संसार में मृग पुरुषों का जन्म दुर्लभ होता है।

* * *

विशिष्टमृगभेदेषु प्रथमो भेदः

भवति पूर्वोक्तमृगलक्ष्मविशिष्टः सुशीलोऽतिमनोहरो बहुरूपधरो विचक्षणः प्रभावशाली च प्रथमो मृगपुरुषः।

फलानि—

निवसति सरित्तटे दुर्गाभक्तिपरायणोऽतिधनी रूपवाञ्छोभनोऽतिमनीषी शुद्धो युक्तश्च दानधर्मक्रियादिभिर्महाकुलसमुद्भूतः सर्वविद्यारतो विहसितवदनश्च भवति। न भवत्यस्य पित्र्युपार्जितधनगृहसौख्यादिकमधिकम्। किन्त्वनुभवति सर्वस्वोपार्जितरम्यवाटिकागृहभूम्यादिसुखम्। प्रत्यक्षगोचराः कारणं विनापि बहुशत्रवोऽस्य कलहायन्ते। भवति प्रायो मानसी पीड़ा रोगग्रस्तश्च। बहुभार्योऽल्पपुत्रः कन्याभिः समन्वितश्च, प्रथमद्वितीयाष्टद्वादशवर्षेषु प्रबलारिष्टभयं विज्ञेयम्, निवृत्तेषु बालारिष्टभयेषु पञ्चदशवर्षे समधिकं सौख्यम्, स्वल्पं च पितृसुखम्, विंशतिवर्षात्त्रिंशद्वर्षपर्यन्तं धनमानप्रतिष्ठादिभिर्महता सौख्येन कालं यापयति। त्रयस्त्रिंशद्धायनादारभ्य चत्वारिंशद्वर्षं यावद्बहुक्लेशादिभिर्युक्तो हाहेति कृत्वा रोदिति चिन्तयति च। अत ऊर्ध्वं पूर्वोक्तक्लेशादिभिर्निवृत्तः सुखं

प्राप्स्यति, त्रिचत्वारिंशत्त्रिपञ्चाशत्त्रिषष्टिवर्षेषु विशेषारिष्टभयम्, विशेषधर्माद्यनुष्ठानेन द्विसप्तत्यायुस्तीर्थे मृत्युश्चं। अरिष्टवर्षाणि विहाया-वशेषवर्षेषु धन-मान-यश-ग्राम-वाहनादिविविधसुख-साधनोपायैर्महत् सौख्यम् लोकपूजितो भूत्वा मेदिनीं वशमानेष्यतीति।

मृग के विशेष ४ भेदों में से प्रथम मृगलक्षण—

मृग के पूर्वोक्त लक्षणों से युक्त होकर सुशील, अत्यन्त सुन्दर, अनेक रूप धारण करनेवाला, विद्वान् और प्रभावशाली प्रथम मृगजाति का पुरुष होता है।

इस जाति का मनुष्य श्रीभगवती दुर्गा के चरण-कमल का भक्त, अत्यन्त धनाढ्य, सुन्दर, रूपवान्, बड़ा बुद्धिमान्, शुद्धाचरण वाला, दानधर्मादि क्रियाओं से युक्त, श्रेष्ठ कुल में जन्म, सम्पूर्ण विद्याओं में निरत और हँसमुख होता है। इसको पिता का उपार्जित धन, गृह, सौख्यादि अल्प होता है किन्तु स्वयं उपार्जन की हुई रमणीय वाटिका, गृह-भूमि इत्यादि से सुख का अनुभव करता है। बिना कारण प्रत्यक्ष बहुत से शत्रु झगड़ा करने को तैयार रहते और करते हैं। मानसिक पीड़ा और रोग से ग्रस्त रहता है। इसे स्त्रियाँ अधिक, पुत्र थोड़े, कन्यायें बहुत होती हैं। पहले, दूसरे, आठवें और बारहवें वर्षों में भयंकर बालारिष्ट का भय होता है। इसके निकल जाने पर पन्द्रहवें वर्ष में अधिक सुख होता है। पिता का सुख थोड़ा होता है। बीस से तीस वर्ष पर्यन्त धन, मान, प्रतिष्ठादिकों से विपुल सुख होता है। ३३ वर्ष से लेकर ४० वर्ष तक अनेक प्रकार के क्लेशों से युक्त होता और हाहाकार कर रोता और चिन्ता करता है। इसके बाद पूर्वोक्त क्लेशा-दिकों से निवृत्त होकर सुख पावेगा। ४३-५३-६३ वर्षों में विशेष अरिष्ट का भय होता है। अतः विशेष धर्मादि अनुष्ठान के द्वारा अरिष्ट निवृत्त होकर ७२ वर्ष की आयु और तीर्थ में मृत्यु होती है। अरिष्ट वर्ष के निकल जाने पर शेष वर्षों में धन, मान, यश, ग्राम, वाहनादि

सुख-साधन के अनेक उपायों से विपुल सुख और लोक में पूजनीय होकर पृथ्वी को वश में करेगा। इति।

* * *

द्वितीयमृगलक्षणम्

द्वितीयमृगस्त्वेलामसकतिललोमाधिकगात्रोऽकारुणिकः परद्रव्यापहारी लम्बोदरो विवादी कृपणश्च भवति।

भवति च श्रेष्ठकुलप्रसूतोऽधिकभ्रातृमान् किन्त्वनुभवत्वेकभ्रातृभगिनी-सुखमधिकम्, निरतो बहुगोष्ठ्यां स्नेहवाँल्लोकपूजितश्च, यमालयं गतानां सुन्दरवीरपुत्राणामेकस्तिष्ठत्यन्ते कन्याश्चाऽधिकाः। द्विभार्योऽतिमनीषी क्षित्यादिसुयुक्तश्च। चतुरेकादशत्रयोविंशतिवर्षाण्यस्याऽत्र शरीरे रोगादिकं मृत्युसमकष्टप्रदं भविष्यति, एकविंशत्यब्दादारभ्यैकोनपञ्चाशद्वर्षावधिसम्मानधनसंचयादियोगः। पञ्चाशद्वर्षे राजभयमनंन्तरं राजयोगभोगादिसुखं च भविष्यति। प्रायोऽस्य रोगादिना शरीरकष्टं कुटुम्बसपत्नाभ्यां मानसीं व्यथाञ्चाऽनुभवति। क्वचित्तीर्थसेवी। सत्कर्माद्यनुष्ठानद्वारा सप्ततिवर्षे तीर्थे निधनं भविष्यति।

द्वितीय मृगपुरुष के लक्षण—

द्वितीय मृग पुरुष के शरीर में इल्ला, मसा, तिल और रोम अधिक होते हैं। यह बड़ा निर्दयी, दूसरों के द्रव्य को हरनेवाला, लम्बोदर विवादी और कृपण होता है।

इस जाति का मनुष्य उत्तम कुल में उत्पन्न होता है। इसे भाई अधिक होते हैं परन्तु एक भाई और बहन से अधिक सुख होता है। वह अधिक गोष्ठी (समिति) में लवलीन, स्नेह करनेवाला और संसार में पूजनीय होता है। इसके कई सुन्दर और वीर पुत्र मर जाते हैं, अन्त में एक पुत्र तथा बहुत-सी-कन्यायें रह जाती हैं।

इसे दो स्त्रियाँ होती हैं। यह बड़ा बुद्धिमान्, पृथ्वी और धनादिकों से युक्त होता है। ४-११-१३-२३ वर्ष इसको अरिष्टप्रद होंगे। २१ वर्ष से लेकर ४९ वर्ष तक सम्मान और धन-संचयादि का अच्छा योग है। ५० वर्ष में राजभय और इसके बाद राजयोग भोगादि का सुख होगा। प्रायः इसको रोगादि से शरीर कष्ट, कुटुम्ब और शत्रु के द्वारा मानसिक चिन्ता होगी। कभी-कभी तीर्थ करने वाला होगा। सत्कर्मादिक अनुष्ठान के द्वारा ७० वर्ष में तीर्थ-स्थान में मृत्यु होगी॥ इति।

तृतीयमृगलक्षणम्

साधारणमृगन्यूनलक्ष्मोपलक्षितः शाखामृगस्वभावोऽतिरुचिरालापी तृतीयो मृगः।

फलानि—

एतज्जातिविशिष्टो मर्त्यः धर्मात्माऽतिपवित्रो विद्वानाढ्यो दक्षः सुशीलभूषणो वैश्यकार्यरतश्च, भवन्त्यस्य तीर्थप्रयाणसमये बहुविघ्नानि। नाऽयं कस्यचिन्मित्रं द्वेषी वा। तिस्रो भार्याः समकन्यकाः पञ्चपुत्राश्चास्य किन्त्वेकस्मात्पुत्रात् समधिकं सुखम्। पृथङ् निवासिनौ द्वौ भ्रातरावेकस्त्वनुचरो विद्यया नृपगृहाद्धनाप्तिः। मुहुर्मुहुः शरीरात्मनोः पीडा समुद्भवतीत्युद्विजते किं करोमि क्व गच्छामीति, पित्रोर्मातृसुखमधिकं त्रिंशद्वर्षात्पञ्चाशद्वर्षपर्यन्तं राजयोगं, भवने द्रव्यसञ्चयंञ्च स्वयमर्जयति भूगृहबहुमानादिकमन्ते सत्कर्मदेवपूजनयजनाद्यनुष्ठानद्वाराऽशीतिवर्षे पुण्यप्रदेशे मृत्युरिति।

अब तृतीय मृग लक्षण कहते हैं—

साधारण मृग के कुछ लक्षणों से युक्त चञ्चल और मनोहर वाणी बोलने वाला तृतीय मृग पुरुष होता है।

फल—

इस जाति का मनुष्य धर्मात्मा, अत्यन्त पवित्र, विद्वान्, धनी, चतुर, शीलवान् और व्यापारी होता है। इसे तीर्थयात्रा के समय

अनेक विघ्न होते हैं। यह किसी का मित्र अथवा द्वेषी नहीं होता। इसे तीन स्त्रियाँ, कन्यायें सम और पाँच पुत्र होते हैं परन्तु एक पुत्र से अधिक सुख होता है। इसके दो भाई अलग रहते हैं, एक उसका सेवक होता है। विद्या के द्वारा राजगृह से द्रव्य की प्राप्ति होती है। इसके शरीर और आत्मा को बारम्बार कष्ट हुआ करता है, इस कारण क्या करूँ, कहाँ जाऊँ? इस प्रकार बहुत घबड़ाया करता है। पिता की अपेक्षा माता का सुख अधिक होता है। तीस से ५० वर्ष पर्यन्त राजयोग और घर में द्रव्यसंचय होता है। पृथ्वी, गृह, अनेक प्रकार की मान-प्रतिष्ठा स्वयं उत्पन्न करता है। देवता की पूजा और यज्ञादि सत्कर्म के द्वारा ८० वर्ष पर्यन्त जीवित रहकर तीर्थ में मृत्यु पाता है।

* * *

चतुर्थमृगलक्षणम्

स्वल्पसाधारणमृगलक्षणाञ्चितोऽतिदुर्बलो रूपहीनो बहुसौख्य-धनाम्बराद्यालस्ययुक्तः सर्वविद्यारतश्चतुर्थमृगः।

भवत्ययं सत्कुलप्रसूतो भाग्यवानलसगात्रोऽध्ययनाध्यापना-दिकार्यपरवशाद्विशेषदेवार्चनाद्यनुष्ठानाद्विरहितः सम्पन्निधानो बहुपुत्रभ्रातृयुतो रतश्च गोष्ठ्यां वाटिकादिकार्येष्वैक्यकर्मणि एकावलीयोगविशिष्टो मध्यमायुरिति।

प्रथमादिचतुर्थान्तमृगलक्ष्मणां विशेषलक्ष्मफलान्युक्तानि, शेषं साधारणमृगलक्ष्मवज्ज्ञेयम्। इति।।

अब चतुर्थमृगलक्षण कहते हैं—

साधारण मृग थोड़े लक्षणों से युक्त बहुत दुर्बल, कुरूप किन्तु सौकीन, धन-वस्त्रादि तथा आलस्य से युक्त सम्पूर्ण विद्या में रत चतुर्थ मृग होता है।

चतुर्थ मृग जाति का पुरुष कुलीन, भाग्यवान्, आलसी, पठन-

पाठन आदि कार्य में लीन होने के कारण विशेष देवपूजन और अनुष्ठानादिसे रहित, अधिक सम्पत्ति, बहुत पुत्र और भाइयों से युक्त, गोष्ठी वाटिकादि तथा एकता प्रतिपादक (ऐक्य-स्थापन) कार्यों में लीन होता है। यह एकावली योग से युक्त और मध्यमा-युवाला होता है।

प्रथम से लेकर चतुर्थ मृग तक विशेष लक्षण और फल कहे गये हैं। शेष साधारण मृग के समान जानना चाहिए।

तुरग-वृषभ-प्रकृतिलक्षणचिह्नानि

शुचिस्निग्धशीलगुणरागविहाररहितौ मृगद्वेषस्त्र्यर्थरूपबहु-शोकसम्पादितौ तुरगवृषभौ जगद्बहुलौ स्तः।

तत्रादौ तुरगसामान्यभेदः

भवन्ति ते दर्पवदतिविवादिकुटिलपितृप्रतिकूलधर्मविरहित-हिंसकाकारुणिकनिम्नोन्नतकलेवरपरिश्रमिलोलुपनिर्भयाः कामुक-हठशीलमल-दूषित-स्वभावकायपोषकाधारपालविकटकबहुप्रजा-युक्ताः किञ्च सूकरपालिताः काकशृगालसारमेयाननाः गृध्री-कण्ठसोत्कण्ठचञ्चलां दीर्घ-स्थूलदन्त-रङ्गविरङ्गाश्चोपलभन्ते। तुरग-वृषभपुरुषाः बाल्ये मातृहाः भविष्यन्त्येषां प्रायः षट् पालकाः जननीजनकोदारकहारिकः भ्रातृ-भगिनीसवलिताः संकलनेन षोडश-सहजशावकाः। किन्तु जातवेदसि यजनहूतकायास्तेषामे-कस्यावसाने स्थितिरिति।

अपरञ्च—

धनवसुकृता सर्वे तुरंगा रूपसंस्थिताः।
सम्मानादरसंयुक्ता द्वाभ्यामेकस्य संस्थितिः ॥१॥

वसुयुक्ते त्वेकपञ्चाशज्जनन्याः वसुहीने त्वेकपञ्चाशद्वर्षे जनकस्य वियोगोऽथवा द्विर्द्वादश-द्वाविंशति-द्वात्रिंशद्द्विचत्वारिंशद्धायने पितुः।

त्रित्रयोदश-त्रयोविंशति-त्रयस्त्रिंशत्त्रिचत्वारिंशच्छरस्तु यथासंभवम् भाग्योदय इति। षोडश-षट्विंशति-षट्त्रिंशत्-षट्चत्वारिंशत्-षट्पञ्चाशत्-षटषष्टिवर्षेषु पत्नीवियोगोच्चतरुवाहनपतनकारागारवास-राजशत्रुचौरभयहिंसाद्यनेकदुर्योगरोगशोकधननाशशरीरपरिवर्तनादीनां प्राप्तिः संस्कारवशादिति।

तुरग वृषभ के प्रतिलक्षण और चिह्न—

इस संसार में तुरग और वृषभ जाति के पुरुष अधिक होते हैं। ये पवित्रता, स्नेह, शील, गुण, राग और विहार से रहित, मृग से द्वेष और स्त्रियों के लिए अनेक रूप धारण करनेवाले तथा बहुत शोक से युक्त होते हैं।

तुरग का सामान्य भेद—

तुरग जाति के पुरुष घमण्डी, झगड़ालू, कुटिल, माता-पिता के प्रतिकूल, धर्म से रहित, हिंसक, निर्दयी, ऊँची नीची (बेडौल) शरीर वाले, परिश्रमी, लोभी, निडर, कामी, हठी, मलिन-स्वभाव, अपने शरीर का पालन करनेवाले, आश्रय के रक्षक, विकंटक, अधिक सन्तान से युक्त, किन्तु सूकर के समान कण्ठवाले, उत्साह युक्त, चंचल, लम्बे और मोटे दाँतों से युक्त और रंग-विरंग के होते हैं। इनकी मातायें बाल्यकाल में मर जाती हैं, इनके रक्षक माता-पिता, लड़के-लड़कियाँ, भाई-बहिन प्रायः छः-छः होते हैं। सङ्कलन से सब मिलकर१६ भाई-बहिन और लड़के होते हैं। इनके पुत्रादि प्रायः मर जाते हैं या किसी प्रकार उनसे अरुचि हो जाती है। अतः एक भाई-बहिन और पुत्र से सुख होता है।

तुरग जाति के पुरुष प्रायः धनादि सम्पत्ति से युक्त, रूपवान्, सम्मान और आदर से युक्त और पत्नीवियोगी होते हैं।

द्रव्य-युक्त होने पर ५१ वर्ष में माता, द्रव्य-हीन होने पर ५१ वर्ष में पिता का वियोग या २-१२-२२-३२-४२ वर्षों में पिता का

वियोग होगा। ३-१३-३३-४३ वर्षो में यथासम्भव भाग्योदय होता है। १६-१६-३६-४६-५६-६६ वर्षों में स्त्रीवियोगजन्य रुदन, ऊँचे वृक्ष और वाहन से गिरना, कारागार, राजशत्रु या चौरकर्म से भय, संस्कारवश हिंसा आदि अनेक दुष्टयोग, रोग, शोक, धन-नाश और मरण होंगे।

वृषभसामान्यभेदः-

बृहन्मौलिसाधारणेन निम्नभालप्रदेश-स्थूलकेशक्लिष्टप्रतिकाया-यासिसद्यःप्रतिकार्यप्रवृत्ताः विगतजात्यभिमानातिभोगाभिलाषुक-श्रवणलोभविशालवक्षस्थलक्षपितदन्तस्थूलकररेखाङ्घ्रयो गौरवर्णाश्च वृषभाः। उपार्जयन्ति, कुटुम्बाभरणाय सदसदुपायैवसूनि। निड्दिन-वसुचिन्तानिमग्नाः वञ्चकोच्चप्रभवाद्यधिकोदरदाम्पत्ययुतस्थूलमहिला-स्वकायाः बहुप्रजसश्च संकलने षट्द्वादशषोडशार्भका सुखन्तु ज्ञानिनापितृ-भक्तेनैकेन सुतेन। भवत्येषां पितृवद्बहुपालकाः अशीत्यधिकमायुश्चेति।

वृषभ का सामान्य भेद— वृषभ जातिवाले पुरुषों के मस्तक बड़े, नेत्र साधारण, माथा गम्भीर, बाल मोटे, प्रकृति कठोर होती है। ये शारीरिक परिश्रम करनेवाले, प्रत्येक कार्य में तुरन्त तैयार, जाति के अभिमान से रहित, अधिक भोग की इच्छावाले होते हैं। इनके कानों में बाल, छाती चौड़ी, दाँत छोटे, हाथ की रेखायें और पैर स्थूल, शरीर गौर होता है। कुटुम्ब के पालनार्थ ये उचित-अनुचित सब प्रकार के कर्मों से द्रव्योपार्जन कर लेते हैं। रात-दिन द्रव्य की चिन्ता में डूबे रहते हैं। ये वञ्चक (ऊपरी मेल करनेवाले), उच्च स्वर से बोलने और बड़े पेटवाले; सदा स्त्री से युक्त होते हैं। इनकी स्त्रियाँ और ये प्रायः मोटे होते हैं, इनकी सन्तानें ६,१२ या १६ होती हैं किन्तु ज्ञानी, पंडित, पितृभक्त एक पुत्र से सुख होता है। पिता के समान के रक्षक इन्हें कई एक होते हैं। ८० वर्ष से अधिक आयु होती है। शेष इष्टानिष्ट तुरग के समान जानना।

प्रथमतुरगभेदः—

प्रथमतुरगास्त्वाढ्यकुलोत्पन्न-पूर्वजन्मे देवार्चन-विरहितत्वाद्भूरि-क्लेशश्चित्ताः कुष्ठादिव्याधियुताश्च भविष्यन्ति। नाऽधिका मतिरेषां धर्मेषु दाम्पत्य-स्नेहविहीनाश्च। प्रथम-तृतीय-नवम-द्वादश-षोडशवर्षाण्यरिष्टकराण्येषामेषु भौतिकक्लेशाग्निभयोर्ध्वपतनप्लि-हिकाव्रणाद्यनेकव्याधयो मृत्यु-समकष्टकराः भविष्यन्ति। पित्रोरेकस्य स्थितिश्च। द्वाविंशतिवर्षे तु बन्धनमपमानं वा निश्चितम्, त्रिशद्व-र्षाच्चत्वारिंशद्वर्षपर्यन्तमृगपुत्रार्थ-दारनिवासक्षितिकलहादिभिर्दुःखं भविष्यत्यत ऊर्ध्वं पुरुषार्थे प्रवृत्तिश्च। यमालयप्रस्थितां बहुपुत्रदारकाणां द्वयोः पुत्रयोरेकात्मजायाश्च स्थितिः। त्रिचत्वारिंशद्धायने नैरुज्य-बलपुष्टिपुत्रदारजनादिसर्वसौख्यानि च। एभ्यः पूर्वमेवैषां गृहिण्यो-ऽमरलोकं प्रयास्यन्ति। द्वौ भ्रातरावेषां तयोरेकः सुखान्वितोऽपरस्तु प्रायः क्लेशाकुलितः। प्रथमतुरगाणां परमायुः सप्ततिवर्षाणि। शेषं सामान्यतुरगवदिति।

तुरग का प्रथमभेद—

प्रथम तुरग जाति का मनुष्य धनी कुल में उत्पन्न, पूर्व जन्म से देवार्चनादि न करने के कारण बहुत क्लेशित और कुष्ठादि अनेक व्याधियों से युक्त होते हैं। इनकी मति धर्म में अधिक नहीं होती और ये दाम्पत्य-प्रेम से रहित होते हैं। १-३-९-१२-१६ वर्ष इनके प्रायः अनिष्ट करनेवाले होते हैं। इन वर्षों में भौतिक कष्ट, अग्निभय, उच्च-स्थान से पतन, पिलही और व्रण इत्यादि अनेक व्याधियाँ मृत्यु समान कष्टदायक होती हैं। इनके माता और पिता में से एक का वियोग बाल्यावस्था में ही होता है। २२ वर्ष में बन्धन या अपमान अवश्य होता है। ३० से ४० वर्ष पर्यन्त ऋण, पुत्र, द्रव्य, स्त्री, वासस्थान, पृथ्वी और कलह आदि द्वारा दुःख होगा। अनन्तर पुरुषार्थ में प्रवृत्ति होगी। इनके बहुत पुत्र तथा

कन्यायें मर जायेंगी, किन्तु दो पुत्र और एक कन्या जीवित रहेगी। ४३ वें वर्ष में आरोग्य, बल, पुष्टि, पुत्र, स्त्री, धनादिकों से सुख होगा। इससे पहले ही इनकी स्त्रियाँ मर जाती हैं। इनके दो भाई होते हैं, उनमें एक सुखी और दूसरा दुःखी होता है। प्रथम तुरग पुरुषों की परमायु ७० वर्ष तक होती है। शेष सामान्य तुरग के समान जानना।

तुरगद्वितीयभेदः—

भवन्ति धनाढ्याहङ्कारिविवादिनः स्वदातितोऽनादृताः परतोऽपमानिताश्च, द्वितीयतुरगजातयः पुरुषाः। रजकान्तिके वासिनस्तत्संसर्गिणश्चात एव न गच्छन्ति, केचिदपि तदङ्गणे न भाषन्ते च। लाभस्तु नैषां दृश्यन्ते किन्तु यत्र तत्र धनक्षतिरेव। स्वजनैः सह कलहातिरेकात् पलायनमिच्छन्ति किं कुर्मः, क्व गच्छाम इति व्यथन्ते च। त्रिषट्द्वादशविंशतिपञ्चविंशतिषट्विंशतिवर्षेषु शीतलानेत्रार्तिज्वरमहाक्लेशाङ्गनाक्लेशादयो भविष्यन्ति। सप्तविंशतिवर्षे सुखसन्तानादियोगः द्विचत्वारिंशद्धायने पुत्रद्वारा धनमानाद्याप्तिश्च। चत्वारः पुत्राः कन्याः वा सुशीला महिला करिष्यन्ति च द्वित्रिस्थाने तीर्थे वा वासः भवन्ति सम्पत्तियुक्ताः। त्रिपञ्चाशद्वर्षे दण्डधरो भूत्वा देशान्तरे व्रजन्तीति केचित्। सामान्यतुरगोक्तारिष्टवर्षेषु वातच्छर्दिकासरोगादयो भविष्यन्ति। एकोनाशीतिवर्षे स-सुखं मृत्युरिति। शेषं सामान्यतुरगवत्।

तुरग का द्वितीय भेद—

द्वितीय तुरग जाति के पुरुष धनी, अहङ्कारी, झगड़ालू, अपने जातिवालों से अनादर पाते और दूसरों से अपमानित होते हैं। ये प्रायः धोबी के निकट बसते और उनके संसर्गी होते हैं। अतः उनके अङ्गने में न कोई जाते, न उनसे बात करते हैं। इनको लाभ बहुत कम, किन्तु धन की हानि इतस्ततः होती है। ये अपने कुटुम्ब

के लोगों से झगड़ा होने पर भागने की इच्छा करते हैं और क्या करें? कहाँ जायें? इस प्रकार की चिन्ता करते हैं। ३-६-१२-२०-२५-२६ वर्षों में शीतला, नेत्रपीड़ा, ज्वरादि भारी क्लेश, स्त्रीक्लेशादि की पीड़ा होगी। २७ वर्ष में सुख और सन्तान आदि का योग होगा। ४२ वर्ष में पुत्र द्वारा धन, मान की प्राप्ति होगी। इन्हें चार पुत्र वा कन्यायें होंगी। पत्नी सुशीला होगी। इस जाति के पुरुष दो-तीन स्थान अथवा तीर्थ में वास करते हैं और सम्पत्ति युक्त भी होते हैं। कोई व्यक्ति ५३ वर्ष में दण्ड धारण कर देशान्तर गमन करते हैं। सामान्य तुरग के कहे हुए अरिष्ट वर्षों में वायु, सर्दी और कास-रोगादि होंगे। ७६ वर्ष में सुखपूर्वक मृत्यु होगी। शेष सामान्य तुरग के समान जानना।

तुरगतृतीयभेदः

भवन्ति श्रेष्ठकुलोत्पन्नधनाढ्य-सुन्दरपुण्यक्षेत्रान्तिकनिवासि-राजसेवकाः द्यूतदौत्यबन्धकीगृह-मद्यपानरतास्तृतीयतुरगपुरुषाः बन्धकीभ्यो पित्रर्जितधनवसनाभरणादीनि प्रदायान्ते वराटकाः महादुःखप्रभोक्तारो हाहेति रुदन्तः सर्वतस्तिरस्कृताः स्वैरिणीसङ्ग-दोषणव्रणार्तिवातकिनः पुत्रदारादितः क्लेशिताश्च। बहुनाशात् किं कुर्मः क्व गच्छाम इति मुहुर्मुहुश्चिन्तयन्ति। त्रिवासरतूर्यवासी वा पित्रोरेकस्य चिरकालस्थितिः, पञ्चपुत्राणाञ्च तत्तुल्याः भ्रातृभगिन्यः। बहुभार्याः दीर्घायुषोऽवसाने देवपदपद्मरतास्तीर्थे निधनं लप्स्यन्ते। शेषं सामान्यतुरगवत्।

तुरंग का तृतीय भेद

तृतीय तुरग जाति के पुरुष अच्छे कुल में उत्पन्न, धनी, सुन्दर, पुण्य क्षेत्र के समीप रहनेवाले, राजसेवक, द्यूत (जूआ), दूत के कर्म तथा वेश्याओं के घर में मदिरा-पान करने में निरत होते हैं। पिता के पैदा किये हुए धन, वस्त्र और आभूषणों को वेश्याओं को देकर

अन्त में दरिद्र होकर अत्यन्त दुःख भोगने से हाहाकार कर रोते और सबसे तिरस्कृत होते हैं। पुंश्चली स्त्रियों के संसर्ग दोष से व्रण तथा वात रोगी और स्त्री-पुत्रादिकों से पीड़ित होते हैं। अधिक नाश होने से क्या करें? कहाँ जायँ ? इस प्रकार बारम्बार चिन्ता करते हैं। ये तीन-चार स्थानों में रहते हैं। इनके पिता और माता में से एक बहुत काल तक जीते हैं और पाँच पुत्रों में से एक चिरञ्जीवी होता है। संख्या में पुत्र के बराबर भाई और बहिन होते हैं। इन्हें स्त्रियाँ अधिक होती हैं। ये दीर्घायु होते और अन्त में देवभक्त होकर तीर्थ में मरते हैं। शेष सामान्य तुरग के समान जानना।

तुरग चतुर्थ भेदः—

जायन्ते सरित्तटनिवासिनो ज्ञानकीर्तिमन्तोऽतिलोभिनः सत्कुलप्रसूताश्च चतुर्थतुरगाः। नापितसखित्वादुचितानुचित-कर्मकरा बहूद्योगलब्धधना एकावलीयोगयुक्ताश्च।(यथैक-दारक-दारिका-दारभ्रातृ-भगिनीसहितः,क्वचिदेकाकी चेत्ये-कावलियोगः) शेषं सामान्यतुरगवत्।

एवं सन्धिवशात् प्रथमद्वितीयचतुर्थवृषभपुरुषाणामपि तुरगवत्फलानि ज्ञेयानीति।

तुरग का चतुर्थ भेद—

चतुर्थ तुरग जाति के पुरुष नदी तट के निवासी, ज्ञानी, कीर्तिमान्, लोभी और सत्कुल में उत्पन्न होते हैं। नापित के साथ मैत्री होने से उचित-अनुचित कर्म करते और बहुत उद्योग से द्रव्योपार्जन करते हैं। एकावली योग से युक्त होते हैं। (एक पुत्र, कन्या, स्त्री, भाई, बहिन अथवा अकेले रहने को भी एकावली योग कहते हैं)।

इसी प्रकार प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ वृषभ पुरुषों के भी लक्षण और फल जानना।

पद्मिन्यादितुर्यमहिलानां जीवनचरित्राणि

तत्राऽऽदौ पद्मिन्याः

विभ्राजतेऽतिसुशीला धर्मपरायणा पितृसेविनी सुन्दर-सुवृत्तारविन्दसुरभितायतशरीरा कोमलकुन्तला मधुर-भाषिणी द्रुतमाकर्षिणी देवरूपा विशालनयना परिपूर्ण-चन्द्रानना पतिभक्तिपरायणा सूक्ष्मनासाकर्णाधरोष्ठकरा-ङ्गुलिशालिनी कम्बुकण्ठी प्रसन्नानना सत्यप्रियेश्वराराधन-तत्परा स्वल्पभोगेच्छावती लज्जावती मानिनी श्यामा प्रतिक्षणं कायतत्परा हंसवधूगमना पद्मिनीति।

ग्रन्थान्तरे च—

निद्रा चाऽल्पसुबुद्धिचन्द्रवदना छन्नामरालश्वना।
तन्वी हंसवधूगतिः सुललितं वेषं सदा बिभ्रती॥
मध्यञ्चापि बलित्रयाङ्कितमसौ रक्ताम्बराकांक्षिणी।
सुग्रीवा शुभनासिकेति गदिता नार्युत्तमा पद्मिनी॥१॥

क्रमात् पश्यतीयमधिकसमाल्पवयस्कान् पितृभ्रातृपुत्रवत्। भवति च देवता-गन्धर्व-नर-मोहिनी सधवाल्पात्मजा साध्वी सुपुत्रजननी कनकपालिका रक्ताम्बराकांक्षिणी नरलोकेऽपि लीलया सुरभिदानार्थमेवागता युगाद्यन्नप्रभवा पद्मिनी दुर्लभैकैवाल्पस्थितिमती भवतीति।

अब पद्मिनी इत्यादि चार प्रकार की स्त्रियों का जीवन चरित्र कहते है।

प्रथम पद्मिनी का—

पद्मिनी जाति की स्त्री बड़ी सुशील, धर्मपरायणा, पितां, माता की सेवा करनेवाली, अति सुन्दरी होती है। इसके साँचे से ढले सुडौल शरीर से कमल के समान सुगन्धि निकलती है। यह लम्बे कद की और कोमल केशवाली होती है। इसका भाषण अति मधुर होता है, दृष्टि पड़ते ही चित्त आकर्षित कर लेती और देवता के समान होती है। इसकी बड़ी-बड़ी आँखें और मुख पूर्णिमा के चन्द्रमा-सा होता है, अपने पति में अत्यन्त भक्ति रखती है। इसके नाक, कान, अधरोष्ठ और हाथ की अङ्गुलियाँ सूक्ष्म होती हैं, ग्रीवा शङ्ख-सा और मुख सर्वदा प्रसन्न रहता है। इसे सत्य प्रिय और ईश्वर में प्रेम होता है। अतएव भोग की इच्छा, काम, लज्जा और मान अधिक होता है। यह श्यामा (सर्वदा उन्नत यौवनवाली,) निरन्तर कार्य में लवलीन रहती है। इसकी चाल हंसाङ्गना के समान शोभायमान होती है। प्रथम श्लोक का भाव स्पष्ट और गतार्थ हो चुका है। पद्मिनी प्रत्येक बड़े मनुष्य को पितातुल्य, समवयस्कों को भाई तथा छोटों को पुत्र के समान समझती है, यह देवता, गन्धर्व, मनुष्य सबको मोह लेती है, यह सदा सौभाग्यवती और थोड़ी सन्तानवाली, पतिव्रताओं में श्रेष्ठ, अच्छे पुत्र को पैदा करती और आश्रितों का पालन करनेवाली होती है। लालवस्त्र इसे अधिक प्रिय होता है। यह मृत्यु लोक में अपनी लीला से सुगन्धित देने के लिए युग के आदि तथा अन्त में अकेले उत्पन्न होकर थोड़े काल तक रहनेवाली पद्मिनी दुर्लभ होती है।

चित्रिणी-सामान्यभेदः—

जायन्ते हि पतिव्रताः प्रणयवत्यो भोजने शीघ्रकारिण्यो-ऽल्पभोगेच्छावत्यो हावभावादि-शृङ्गाराङ्गेषु निमग्नाः, क्षिप्रं कार्यकारिण्योऽल्पश्रमवत्यो बुद्धिमत्यो विदुष्या संगीते चित्र-

कर्मणि च रताः शृङ्गारानवसरे तीर्थव्रतसाधुसेविन्योऽपि सुरूपवृत्तभालवत्यस्तन्वंग्यश्चपलेक्षणाः नातिदीर्घह्रस्वांगाः गजगामिन्यो मयूरस्वनाः पीनश्रोणि-पयोधराः भृङ्गीश्यामल-कुन्तलाचारुकृशजङ्घान्विताः बहुरूपभारिण्यस्त्रपान्विताः सुकुमारांग्यश्चित्रिणी-सीमन्तिन्यः।

यथोक्तं ग्रन्थान्तरे—

तन्वंगी गजगामिनी चपलदृक् संगीत-शिल्पान्विता
नो ह्रस्वा न पृथूत्तरा च सुकृशा मध्ये मयूरस्वरा।
पीनश्रोणिपयोधरे सुललिते जंघे वहन्ती कृशे
कामाम्भोमधुगन्ध्यथौष्ठमपि सा तुच्छोन्नतं वत्सला।।१।।

फलानि—

चित्रचित्रकारिण्यश्चित्रिण्यः षड्रसस्वादुः स्वजनपदकार्यज्ञाः शुचिशुचिस्मिताः बालिकाः साधुसधवाल्पतराः जगद्दुर्लभाः भवन्ति च सुगूढकूटवार्ताविज्ञाननिरताः अजातप्रसवेच्छाः स्तनमण्डलगोपिकाः पतिस्वजनस्नेहाधिकाः नृत्योत्सवादि-दर्शनेच्छावत्यो वराटकसंस्त्यायेऽपि खलु महिष्यो भवेयुः। बहुसंख्यायुक्तानां शावकानां त्रयस्तिष्ठन्त्येकस्य च नृपाल-योगः। सन्ततिसमाः सोदराः न जीवन्ति प्रायश्चित्रयुक्ताश्चि-त्रिण्यो जीवन्ति चेत्तदाऽष्टचत्वारिंशद्वर्षपरमायुः। अष्टौ षोडषचतुर्विंशतिद्वात्रिंशच्चत्वारिंशद्वर्षेष्वग्निव्यथा व्रणज्वर-शोकाष्टभयम्। सप्तचतुर्दशैकविंशतिवर्षेषु भ्रातृभर्तृपुत्रवसु-पतिलब्धप्रतिष्ठाद्यनेकराजतुल्यसुखानि च भवन्तीति।

चित्रिणी

चित्रिणी जाति की स्त्रियाँ पतिव्रता, स्वजनों पर स्नेह करने वाली होती हैं। ये भोजन में शीघ्रता करती हैं। भोग की इच्छा इनमें कम होती है। हाव-भाव शृङ्गारादि में इनका मन अधिक लगता है। प्रत्येक कार्य को शीघ्र कर लेती है। अधिक श्रम इनसे नहीं हो सकता, परन्तु बुद्धिमती और विदुषी होती हैं, गाना बजाना और चित्रकर्म इन्हें अधिक प्रिय है। ये तीर्थ, व्रत और साधु-सेवा करती हैं किन्तु शृंगार-समय में इनकी चिन्ता भी नहीं करती और बड़ी सुन्दर होती हैं, इनका मस्तक गोलाकार, अंग कृश और नेत्र चञ्चल होते हैं। चाल मतवाली, हाथी और स्वर मयूर के समान होता है, कमर और स्तन भी पीन (मोटे) होते हैं। बाल भौंरों-सा काला, जंघे सुन्दर और कृश होते हैं। ये अनेक रूप को धारण करनेवाली कोमलाङ्गी और लज्ञा से युक्त होती हैं, श्लोकार्थ गतार्थ हो चुका है।

फल—

अद्भुत चित्रों का निर्माण करनेवाली चित्रिणी स्त्रियाँ मधुरादि षड्रसों के स्वाद का अनुभव करनेवाली तथा अपने देश की रीति जानने वाली साध्वी और सौभाग्यवती बालिका संसार में दुर्लभ, थोड़ी मिलती हैं। ये गूढ़ और कूट वार्ता, विलास तथा विज्ञान में निपुण होती हैं। अपने स्तन-मण्डल की रक्षा भली प्रकार करती हैं, अतएव प्रायः इनको प्रसव की इच्छा कम होती है। अपने पति और सेवकों पर अधिक स्नेह करती हैं। इन्हें नृत्य और उत्सवादि देखने की इच्छा बहुत होती है। ये दरिद्र के घर में उत्पन्न होकर भी पटरानी होती हैं, अधिक सन्तति होने पर भी प्रायः तीन सन्तान जीवित रहती हैं, उनमें एक को राजयोग होता है, संख्या में सन्तान के बराबर भाई भी होते हैं। चित्रिणी जाति की

स्त्रियाँ प्रायः जीवित नहीं रहतीं। यदि जीती हैं तो ४८ वर्ष तक इनकी परमायु है। ८-१६-२४-३२-४० इन वर्षों में अग्नि भय, व्रण, ज्वर, शोकादि अनेक कष्ट होते हैं। ७,१४,२१ और २८ वर्षों में भाई, पति, पुत्र और धन की प्राप्ति होती हैं तथा पति को प्रतिष्ठा-प्राप्ति इत्यादि अनेक राज्यतुल्य सुख होता है। इति।

प्रथमा चित्रिणी—

पूर्वोक्ताऽखिलसामान्यचित्रिणीलक्षणाङ्किताः सुशीलाः अतिमनोहराः प्रभाववत्यो विचक्षणा अनेकरूपधराः प्रथम-चित्रिणी-सीमन्तिन्यः। सत्कुलोत्पन्ना इमाः सामान्यपितृगृहाच्छ्रेष्ठपतिगृहमाप्नुवन्ति। एवं पित्रोरेकस्य घातिन्योऽत एव परतः पोषिताः विवाहिताश्च भवन्त्यासाम्पतयः सौन्दर्यप्रणयविद्यादिसद्गुणविशिष्टाः भाग्यवन्तः। कन्याद्वयैकपुत्रस्य च सुखमासाम्। विवाहोत्तरं प्रति सप्तवर्षे पत्युर्भाग्योदयः। प्रत्यष्टवर्षेषु पतिशरीरकष्टधनरिपुकष्टादिभयञ्च भवति। सद्धर्मानुष्ठानेनाऽरिष्टशान्तिः। अष्टचत्वारिंशत्षष्टिवर्षं वा यावत् परमायुः। सुतीर्थे पत्युः पुरतो मृत्युश्चेति।

प्रथम चित्रिणी—

पूर्वोक्त सामान्य चित्रिणी के सम्पूर्ण लक्षणों से युक्त सुन्दर शीलवाली सुन्दरी, प्रभावशालिनी, विदुषी, अनेकरूप धारण करनेवाली प्रथम चित्रिणी जाति की स्त्रियाँ होती हैं।

ये अच्छे कुल में उत्पन्न होती हैं, सामान्य पितृगृह से श्रेष्ठ पतिगृह में जाती हैं, इनकी बाल्यावस्था में ही माता-पिता में से एक की मृत्यु हो जाती है। इसलिए दूसरों (सम्बन्धियों) के द्वारा इनका पालन-पोषण और विवाहादि किया जाता है। इनके पति सुन्दरता, प्रेम, विद्या इत्यादि अच्छे गुणों से युक्त और भाग्यवान् होते हैं, इनको दो कन्या और एक पुत्र से सुख होता है। विवाह के

बाद हर सातवें वर्षों में पति का भाग्योदय और हर आठवें वर्षों में पति को शारीरिक कष्ट होता है तथा धन और शत्रुओं के द्वारा कष्ट होता है। इनकी शान्ति के लिए उत्तमोत्तम धर्मादि अनुष्ठान करना उचित है। ४८ या ६० वर्ष तक इनकी परमायु है। पति के सामने किसी अच्छे तीर्थ में इनकी मृत्यु होती है।

द्वितीया चित्रिणी

द्वितीयाश्चित्रिण्यश्चैलामसकतिलादियुक्ताः यत्किञ्चित्सामान्यचित्रिणीलक्षणाञ्चिताः दानव्रतशीलाः सुशीलास्तीर्थकारिण्यः देव-भक्तिरताः दाम्पत्यप्रेमयुक्ताः सधवाश्चाढ्याः सत्स्वर्णाभूषणाः सद्धर्मपरायणाः कीर्तिमत्यः स्वश्रुस्वसुराल्पसुखज्ञाः भवन्ति, गच्छति पितृगृहापेक्षया विशिष्टपतिभवनेषु, भवन्ति च पित्रोः प्रियाः सभ्रातृभगिन्यः प्राग्जन्मनि देवार्चनादि सद्धर्मविरहितत्वाद्वन्ध्या मृतवत्सायोगयुक्ताः वाऽत एव पुत्रार्थं मुहुर्मुहुः हाहेति रुदन्ति। जामातृ-दौहित्र-दुहितॄणां संज्ञाऽपि न ज्ञायते पतिभाग्योदयारिष्टं स्वकीयश्च सामान्य-चित्रिणीवदित्यसारोऽयं खलु संसारः, दृश्यन्ते च प्रायः वसुमती गुणवती लोकातिपालिनी धर्म-परायणा सुशीला ललनाः पुत्रहीनाः सुन्दर्यो रमण्यः पतिसौख्यविहीनाः अशुचि-धर्मपराङ्मुख्यः प्रमदाः पुत्रादि-युक्ताः भवन्तीति दैवी विचित्रा गतिः।

तृतीया चित्रिणी—

तृतीयाश्चञ्चलस्वभावाः रुचिरालापिन्यो वार्तान्ते ह्युत्तम-रसदायिन्यो भवन्तीति शेषं द्वितीया चित्रिणीवदिति।

द्वितीया चित्रिणी—

द्वितीया चित्रिंणी इल्ला, मसा और तिलादि तथा सामान्य

चित्रिणी के कुछ लक्षणों से युक्त होती हैं। ये दान, व्रत और तीर्थ करने वाली सुशीला और देवताओं में भक्ति करनेवाली होती हैं। पति और पत्नी में परस्पर प्रेम भी रहता है। ये सधवा और धन-धान्य से परिपूर्ण होती हैं। अच्छे-अच्छे सुवर्ण के आभूषणों से युक्त सद्धर्मपरायणा और यशस्विनी होती हैं, सास और ससुर का सुख इनको कम होता है। ये भी साधारण पितृ गृह की अपेक्षा श्रेष्ठ पति के घर में जाती हैं। माता-पिता को अतिप्रिय और भाई तथा बहिन से युक्त होती हैं, पूर्वजन्म में देवार्चनादि सद्धर्म से विमुख होने के कारण बन्ध्या या मृतवत्सा योगवाली होती हैं, अतएव पुत्र के लिए बार-बार रुदन किया करती हैं। दामाद (जामाता), नाती और दुहिता का नाम तक नहीं जानतीं-अर्थात् इच्छा रहते भी इनको उक्त बातों की प्राप्ति नहीं होती है। पति का भाग्योदय, अरिष्ट तथा अपना भाग्योदय, अरिष्ट सामान्य चित्रिणी के समान होता है। खेद की बात यह है कि संसार वस्तुतः असार ही है। प्रायः देखा जाता है कि धनवती, गुणवती, परोपकारिणी, धर्म-परायणा, सुशीला स्त्रियाँ पुत्रहीन, सुन्दरी रमणी पति के सुख से वञ्चित, मलिना और धर्म से रहित स्त्रियाँ पतिपुत्रादि से युक्त होती हैं। यही ईश्वर की लीला है।इति।

तृतीया-चित्रिणी—

तृतीया चित्रिणी स्वभाव की चंचल, सुन्दर वाणीवाली, वार्ता-विलास में उत्तम आनन्द देनेवाली होती हैं। शेष द्वितीया चित्रिणी के समान जानना। इति।

चतुर्थ-चित्रिणी—

चतुर्थ-चित्रिण्यस्तु लक्षणे तृतीयातोऽपि न्यूनतरलक्षणाः अतिदुर्बलखिन्नावयवाः अनुकूलरूपगुणादियुक्तपतित्वात्प्राय-स्तत्प्रतिकूलाः भवन्ति। सत्कुलप्रसूताः सूपकार्ये कोषकार्ये च

निपुणाः सधवाः, किन्तु समुद्विग्नमनस अत एव नीच-महिलासंगप्रभावाद्यन्त्रादिषु व्यर्थं क्षीणबहुधनाः विफलप्रयासे विदितवृत्तान्ता अतिदुःखिताश्चिन्तिताश्च भवन्ति। भ्रातरस्तु पञ्च भगिन्यश्च समा जायन्ते। विवाहसमये पित्रोरेकस्य स्थितिरासाम्। प्रसववन्ध्यादोषेण मुहुर्मुहुः रुदन्ति। कन्याश्च समाः भवन्ति। शान्तितः पुत्रैकस्य स्थितिः। पतिपुरतः सुतीर्थे मरणञ्चेति।

चतुर्थ चित्रिणी

चतुर्थ भेदवाली चित्रिणी लक्षण में तृतीय चित्रिणी से न्यून होती हैं। ये बहुत दुर्बल और खिन्न अङ्गवाली होती हैं, इनके अनुकूल पति का रूप और गुण न होने से प्रायः उसके प्रतिकूल रहती हैं और अच्छे कुल में पैदा होती हैं। पापकर्म तथा द्रव्यादि के हिसाब-किताब में निपुण होती हैं। सधवा होती हुई भी उद्विग्न चित्तवाली होती हैं। इस कारण नीच स्त्रियों के संग से यन्त्र में व्यर्थ बहुत धन नष्ट करती हैं, उद्योग विफल होने पर यथार्थ बात जानकर दुःखित हो चिन्ता करती हैं। इनको भाई पाँच तथा बहिन सम होती हैं। विवाह समय इनकी माता और पिता में एक रहते हैं। ये प्रसव वन्ध्या (सन्तान पैदा होते ही मर जाना) दोष के कारण बहुत विलाप करती हैं। कन्यायें सम होती हैं और शान्ति के द्वारा एक पुत्र जीवित रह सकता है। अन्त में पति के सामने अच्छे तीर्थ में मृत्यु होती है।

हस्तिन्याः प्रथमो भेदः

हस्तिनी-प्रमदास्तु क्षणभंगुरस्वभावाः प्रति-पुरुषानुरूपाः हासप्रियाः बहुभोगेच्छावत्योऽतिभोक्त्र्यः स्थूलायतशरीराः श्लथांग्यस्त्रपासद्धर्मविरहिता पीनोरोजकपोलघ्राणकर्ण-

ग्रीवाधराः ह्रस्वपिंगेक्षणाः स्थूलप्रलम्बौष्ठ्य-उन्नतभाल-प्रदेशाः गजगमनाः गौरांग्यो महाचण्ड्यः क्रूराः गम्भीर-स्वनाः बहुप्रजावत्यः कुटिलाङ्गुलीचरणाः दुःसाध्यसुताः रोगा-भावेऽपि रुग्णाः सन्तानविभीषिकाः जगद्व्यापिकाः भवन्ति।

अपि च—

स्थूला पिंगलकुन्तला च बहुभुक् क्रूरा त्रया वर्जिता
गौरांगी कुटिलांगुलीकचरणा ह्रस्वा नमत्कन्धरा।
विभ्रत्यैभमदाम्बुगन्धिरतिजं तोयं भृशं मन्दगा
दुःसाध्या सुरतेऽतिगद्गद्रवा स्थूलौष्ठिका हस्तिनी ॥१॥

समासादयन्ति च पितृगृहापेक्षया श्रेष्ठं पतिगृहं, मन्यन्ते च देवार्चनं मिथ्या, प्राप्नुवन्ति च रूपगुणविशिष्टं पतिं, किन्तु बहुद्रव्याम्बरादिप्रदानेनापि पत्यौ न तुष्यन्ति, भोगा-वरोधप्रतिक्षणं विवादतः कुटुम्बं, कुर्वन्ति च कलहावसरे करमुखशब्दप्रयोगम्। तेनोद्विग्नाः 'नाश्नीम एतत्पाणिना नाशयिष्यामश्च तत्पार्श्वे' इत्यवधार्य मुहुर्मुहुः दिगन्तप्रयाण-मिच्छन्त्यासां पतयः। हा विधातः नेच्छाम ईदृशीं दुःखरूपां बह्वाशिनीं पिशाचिनीं भार्यामिति प्रार्थयन्ते च। तास्तु स्वेच्छाया सुखादिकमनुभवन्त्यश्चिरं तिष्ठन्ति। नेच्छन्ति प्रायो धर्ममिच्छन्ति खलु स्वादुभक्ष्यपदार्थात् सुतताडिन्यश्च भवन्ति। प्रजायन्ते च केचिदंगहीना अनेकरूपधराः दशद्वा-दशषोडशसन्ततयः यन्त्रादिना चाऽन्ते दीर्घायुः पुत्रयोगः। कन्यकास्तु बह्व्यः। प्रतिदशः (१०-२०-३०-४०) वर्षेषु

स्वशरीर-पुत्रभर्तृ-भ्रातृ-धनादिकष्टम्। अष्टचत्वारिंशदष्ट-पञ्चाशद्वर्षाभ्यन्तरे वा मृतिश्चेत् सधवा, अन्यथा विधवाः भवन्ति, परमायुः त्रिसप्ततिः७३ वर्षाणि यावत्। बहुभ्रातृ-भगिनीनामेकभ्रातृ-भगिनी-द्वयसुखम्। उक्तप्रतिदशवर्षेषु महद्भयम्, शान्त्या सुखम्। विवाहोत्तरं ४-८-१२-१६ वर्षेषु पत्युर्भाग्योदयः, प्रायः दुःखमयं जीवनमासामिति। मूर्तिपूजने कथाश्रवणे च महती व्यथा भवत्यतः हस्तिनीशङ्खिनीरूपक्रूरकामिनीसमागमाद्राजतुल्यमपि सुखं व्यर्थं चित्रिणीसमागमाद् दुःखमयमपि जीवनं सुखमयं प्रतिभातीति हस्तिनी - चित्रिण्योः जातवेदोऽम्बुवन्महदन्तरम्, हस्तिनी-शङ्खिन्योर्मृदम्बुवत्पूर्वसन्धिरिति विज्ञैरनुभूतम्।

हस्तिनी का प्रथम भेद—

इस जाति की स्त्रियों का स्वभाव क्षणभंगुर होता है। ये प्रत्येक पुरुषों के अनुकूल होती हैं। भोग की इच्छा अधिक रहती है और हँसमुख होती हैं, भोजन अधिक करती हैं। शरीर से मोटी और बड़ी होती हैं, अङ्ग शिथिल रहता है। इनमें लज्जा और सद्धर्म का नाम तक नहीं रहता है। इनके स्तन, कपोल, नासिका, कान और लम्बे मस्तक ऊँचा, चाल हाथी के समान और रंग गोरा होता है। इनको क्रोध अधिक, स्वभाव क्रूर, शब्द गम्भीर और लड़के अधिक होते हैं। इनके चरणों की अंगुलियाँ टेढ़ी होती हैं। ये रति में दुःसाध्य होती हैं। बिना रोग के रोगी बनी रहती हैं, सन्तान को त्रास दिया करती हैं। ऐसी स्त्रियाँ संसार में व्याप्त हैं। श्लोकार्थ प्रायः गतार्थ हो गया है। ये भी पिता की अपेक्षा पति के श्रेष्ठ गृह में

जाती हैं। देवपूजन को मिथ्या समझती हैं। पति सुन्दर और गुणवान् पाती हैं, परन्तु बहुत द्रव्य और वस्त्र देने पर भी पति से सन्तुष्ट नहीं होतीं। भोग-विलास के लिए सन्तानोत्पत्ति को विघ्नरूप समझती हैं।, प्रतिक्षण झगड़े से कुटुम्ब को नाकोंदम कर देती हैं। कलह के समय हथेली बजा-बजा कर कट-कटाती हैं। इससे घबड़ाकर इनके पति इनके हाथ से न खायेंगे, न साथ-शयन करेंगे, ऐसा विचार कर बारंबार विदेश जाने की इच्छा करते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हा विधाता ऐसी दुःखरूपा अधिक खानेवाली पिशाचिनी स्त्री हम नहीं चाहते हैं और ये अपनी इच्छा से बहुत काल तक सुखादि का अनुभव किया करती हैं। इनको धर्म की इच्छा तक नहीं होती किन्तु सुस्वादु भक्ष्य पदार्थ की चाह अधिक होती है। सन्तान को मारा करती हैं। इनके खण्डित गर्भ तथा अंगहीन सब मिलकर १०-१२ तथा १६ लड़के होते हैं। यत्नादि के द्वारा अन्त में दीर्घायु पुत्र का योग होता है और कन्यायें बहुत होती हैं। १०-२०-३० और ४० वर्षों में अपने शरीर अथवा पति, पुत्र, भाई और धनादि के द्वारा कष्ट होता है। ४८ या ५८ वर्ष में मृत्यु हो तो सधवा, नहीं तो विधवा होकर मरती हैं। परमायु ७३ वर्ष तक होती हैं, कई भाई, बहिनों में एक भाई और दो बहिन का सुख होगा। उक्त प्रति दश वर्षों में अधिक भय का योग होता है। शान्ति इत्यादि यत्नों से सुख हो सकता है, विवाह के बाद ४-८-१२ और १६ वर्षों में पति का भाग्योदय होता है। इनका जीवन प्रायः दुःखमय होता है। मूर्ति-पूजन और कथा-श्रवण में इन्हें अतिकष्ट होता है, अतएव हस्तिनी, शंखिनी जाति की दुष्ट स्त्रियों के समागम से दुःखमय जीवन भी सुखमय विदित होता है। अतः हस्तिनी और चित्रिणी में अग्नि और जल के समान बहुत अन्तर है तथा हस्तिनी, शंखिनी में मिट्टी और जल के समान मेल हो जाता है। ऐसा विद्वानों से अनुभूत है।

हस्तिन्याः द्वितीया भेदः—

द्वितीयहस्तिन्यस्तु प्रथमातो न्यूनलक्षणलक्षिताः भौतिकबाधाविशिष्टाः कर्कशाः दुःखरूपाः भवन्ति।

साधारण-पितृगृहात् सामान्यपतिगृहं समागच्छन्ति। पश्चादनेक-रोगपीडिताः स्वामिना निषिद्धा अपि भौतिकचरणयुक्ताः भौतिकीं वार्तां मुहुर्मुहुः प्रलपन्ति, प्रेयन्ति च स्वामिनं मन्त्रयन्त्रादिकर्मणि। तदाज्ञयोक्तोपचारौषधादिना नैरुज्यमवाप्य कालं यापयन्ति। पुण्य-तीर्थव्रतार्चनादिषु नाधिका मतिरिति। भवन्ति नवाधिकाः सन्ततयः किन्त्वक्षरज्ञानपर्यन्तं सुखदाः,शान्त्यादियत्नेन षट्सन्तानसुखं तेषु विदेशस्थायिनो द्वौ शेषं कन्ये बालको चैकत्र स्थायिनो भवतः। भवन्ति च स्वयं देवरविहीनास्तथा भगिन्यः षट् भ्रातरौ च द्वौ निधनसमये त्वेकस्य स्थितिः, वातव्रणमहारोगादियुक्ताः६० वर्षगते गृह एव पञ्चत्वमवाप्नुवन्ति अष्टचत्वारिंशद्वर्षा-४८-दारभ्य ५०पञ्चाशद्वर्षाभ्यन्तरे पत्युः शरीरेऽपि मृत्युतुल्यं कष्टं बोध्यम्। शेषं हस्तिनीवदिति।

हस्तिनी का दूसरा भेद—

इस जाति की स्त्री लक्षण में प्रथम हस्तिनी से न्यून होती हैं, किन्तु भूतबाधा से युक्त कर्कशा और दुःखरूपा होती हैं। ये साधारण पिता के घर से साधारण ही पति के घर में जाती हैं और कुछ दिन के बाद अनेक रोग से पीड़ित होती हैं। पति के मना करने पर भी भूत-प्रेत के आचरण से युक्त हो उसी की बात बार-बार कहती हैं। पति को मन्त्र-यन्त्र करने के लिए कहा करती हैं।

उनकी आज्ञा से मन्त्र-यन्त्र और औषधी के द्वारा आरोग्य लाभ कर दिन बिताती हैं। किन्तु पुण्यकर्म, तीर्थ, व्रत, देवार्चनादि में इनका मन नहीं लगता। इन्हें नव से अधिक सन्तान होते हैं। उनका सुख इन्हें तभी तक होता है जब तक कि वे अक्षर नहीं सीख लेते। शान्ति आदि उपाय से छः सन्तान के सुख का योग होता है, उनमें भी दो लड़के परदेश में, चार अर्थात् दो लड़कियाँ और दो लड़के एक साथ रहते हैं, परन्तु मरण समय में समीप एक ही सन्तान रहता है, ये देवर से रहित होती है, इन्हें बहिन छः और भाई दो होते हैं, वातरोग तथा व्रण (फोड़ा-फुन्सी) आदि भारी रोग से पीड़ित रहती हैं, ६० वर्ष की अवस्था में घर में ही मृत्यु पाती हैं। ४८ से ५० वर्ष के भीतर पति के शरीर में भी मृत्यु समान कष्ट होता है। शेष प्रथम हस्तिनी के समान जानना।

हस्तिन्यास्तृतीयो भेदः—

द्वितीयातोऽपि न्यूनलक्षणाः किन्तु चञ्चलाः देवपूजनादिकर्मनिरताः सुन्दर्य्यः स्थूलबुद्धयस्त्रपाविरहिताः स्वोदरपोषिण्यो भवन्ति तृतीया हस्तिन्यः।

स्थास्यतश्चासां स्वसारौ भ्रातरौ च, परिणयनं तु १३-१४ वर्षाभ्यन्तरे भवति। सन्ततयस्तु द्वादश, तेषु पञ्चसन्तानस्थायियोगस्तत्रापि द्वाभ्यां विशेषसुखम्। गृहे स्वश्रू-श्वसुर-देवरादिभिर्नित्यं कलहं कुर्वन्त्यनुभवन्ति चात्मकायिकीं पीडां पतिशरीरपीडाश्च, द्रव्यर्थं चिन्तयन्ति क्रन्दति च। शान्त्या पूर्वोक्तसर्वारिष्टनिवृत्तिरनेकसुखादिलाभश्च। शेषं प्रथम-हस्तिनीवदिति।

हस्तिनी का तीसरा भेद—

तीसरे भेदवाली हस्तिनी लक्षण में दूसरी हस्तिनी से कुछ न्यून किन्तु चञ्चल होती हैं। ये देवताओं की पूजा इत्यादि भी

करती हैं, सुन्दर, स्थूल बुद्धिवाली, लज्जा से रहित और पेट पालने वाली होती हैं। इनकी दो बहिन और दो भाई होते हैं, इनका विवाह १३-१४ वर्ष की अवस्था में होता है। १२ सन्तानों में ५ सन्तान स्थायी रहते हैं, उनमें भी दो सन्तानों से विशेष सुख होता है। घर में सास, ससुर और देवरादिकों से नित्य लड़ा करती हैं। अपने तथा पति के शारीरिक पीड़ा में दुःखी रहती हैं। द्रव्य के लिए रोया और सोचा करती हैं परन्तु शान्ति करने से ऊपर कहे सब अरिष्ट निकल जाते हैं और अनेक सुख होते हैं। शेष प्रथम हस्तिनी के समान जानना।

हस्तिन्याश्चतुर्थो भेदः—

चतुर्थहस्तिन्यस्तु तृतीयातोऽपि न्यूनतरलक्षणलक्षिताः विलक्षणरूपाश्च (रूपहीनाः) भवन्ति। सत्कुलप्रसूताः धन-पुत्रविशिष्टाः सधवाः किन्त्वेकावलीयोगयुक्ताश्च। एकावली-योगश्चैकभ्रात्रा भगिन्या वा युक्ता, क्वचिदेकाकी चेति पितु-गृहि पतिगृहे त्वैकपुत्री पुत्रो वेति। शेषं प्रथमहस्तिनीवदिति।

हस्तिनी का चतुर्थ भेद—

चतुर्थ हस्तिनी लक्षण में तृतीय हस्तिनी से कम और सुन्दरता से रहित होती है। अच्छे कुल में पैदा होकर धन तथा पुत्र से युक्त, सधवा और एकावली योग से युक्त होती है। एकावली उसे कहते हैं जो पिता के घर में एक भाई या बहिन से युक्त हो अथवा कहीं-कहीं वह अकेले ही रहे, पति के घर में जाने पर जिसे एक पुत्र या कन्या होकर ही रह जाय। शेष प्रथम हस्तिनी के समान जानना।

शङ्खिन्याः जीवनचरित्राणि—

दीर्घाङ्गायतशरीराः महाशब्दोत्पादितगमनाः पृथुं कृशं वा

कायं वहन्त्योऽद्भुतगमना: पृथुनासिकाग्रा: कुटिलगम्भीरे-क्षणा: निम्नोन्नतशरीरा सततमप्रसन्नवदना: क्रोधसन्तप्तविग्रहा अहोरात्रमविचार्यैव प्रतिक्षणं भोगतत्परा: पत्यु-र्मानिन्य: स्वातन्त्र्यमभिलष्यमाणा: परानविचिन्त्य स्वोदरपोषणाभि-प्राया: विगतानुकम्पा: दुष्टचेतस: घर्घरस्वरा: प्रीतिं सहिष्णुता-ञ्चातिक्रम्याऽखिलमादकपदार्थानुमोदिन्य: ईश्वरपूजनसदारा-धनस्तुतिपाठादीन् व्यर्थं मन्यमाना: शंखिनीप्रमदा: जगद्व्यापिका: भवन्ति। दृश्यते चाऽऽसां कर-कमलेषु कम्बुचिह्नं छिन्न-भिन्न-रेखाश्च। भवन्ति च रक्तस्त्रजाम्बरप्रिया: प्रायोऽलङ्कुर्वन्त्येवंविध-एव वनिता: पण्य-वीथिकाम्।

यथोक्तं ग्रन्थान्तरे—

दीर्घस्कन्धशिर: कृशं पृथुमयो देहं वहन्ती तथा
पादौ दीर्घकरौ कटिं च बृहती स्वल्पस्तनी कोपिनी।
गुह्यं क्षारविगन्धिनीस्मर जले नाल्पेन सान्द्रै: कचै-
रानिम्नं कुटिलेक्षणाद्धुतगति: सन्तप्तगात्रा भृशम् ॥१॥

जायन्ते च पित्तला: पिशुना अतिमुखरा शिशुताडिन्य:, वार्तान्ते रौद्ररूपा: धर्मान्ते सखिविग्रहकारिण्य:, सुरतान्ते भोजनस्पृहा: भवन्ति, दीर्घजीविन्य: प्राय: विधवाश्च। कुलद्वये चाऽऽसां पुरत: बहुप्राणिनाशो भवति, अनुभवन्ति चाऽनेकक्लेशमभिलषन्ति, दु:खावसरे क्षणिकमृत्युं किन्तु न म्रियन्ते, भवन्ति चासां भ्रातरो भगिन्य: दारिका: दारकाश्च बहव: किन्त्वेको भ्राता, भगिनी, दारिका, दारकाश्च तिष्ठति, म्रियन्ते चाऽन्ये तत्पुरत: शेष-मरिष्टादिकं प्रथमहस्तिनीवत्।

एवं द्वितीय-तृतीय-चतुर्थशंखिनीनामपि जीवनचरित्राणि क्रमशः एकैकशा न्यूनतया द्वितीयतृतीयचतुर्थ-हस्तिनीवद्बुधैरनुभूयत इति।

शङ्खिनी स्त्रियों के लक्षण फल

शंखिनी स्त्रियाँ सब स्त्रियों से लम्बी होती हैं, इनके चलते समय पृथ्वी मे धम-धम शब्द होता है। शरीर से अति मोटी या दुर्बल होती हैं, इनकी चाल अजब होती है अर्थात् कुल्हे हिलाकर चलती हैं। इनके नासिकाग्र (नथुने) मोटे, आँखें टेढ़ी और गम्भीर शरीर नीची ऊँची (बेडौल) होती हैं। ये सर्वदा अप्रसन्न रहती हैं और क्रोध से जला करती हैं। दिन-रात का विचार न कर प्रतिक्षण भोग के लिए तैयार रहती हैं। पति से रूठी रहती हैं, स्वाधीनता की इच्छा उन्हे बहुत रहती है, दूसरों की अपेक्षा न कर अपना पेट पालने की इच्छा रखती हैं. दया से रहित होती हैं, इनका मन दुष्ट और स्वर घर्घर होता है। प्रीति-सहिष्णुता का इनमें नाम तक नहीं रहता, सम्पूर्ण मादक द्रव्यों को उचित समझती हैं। ईश्वर-पूजन, साधु-सेवन, स्तुति-पाठादि को व्यर्थ समझती हैं। ऐसी स्त्रियाँ संसार में अधिक होती है। इनके हाथ में शंख का चिन्ह और रेखायें छिन्न-भिन्न होती हैं रक्त वस्त्र और लाल माला इन्हें अधिक रुचती है। ऐसी ही स्त्रियाँ प्रायः बाजार को सुशोभित करती हैं। श्लोकार्थ गतार्थ हो गया है।

इनका स्वभाव पैत्तिक होता है, ये कर्णसूचकी करने (इधर का उधर लगाने) में तेज और वाचाल (अधिक बोलने वाली) होती हैं। सखियों से कलह करने वाली होती हैं। इन्हें मैथुन के बाद भोजन की इच्छा होती है। ये बहुत दिनों तक जीवित रहती हैं और प्रायः विधवा होती हैं। इनके सामने ही दानों (पिता पति) कुल मे बहुत प्राणियों का विनाश हो जाता है, और बहुत दुःख भोगती हैं उस समय मरने की

बारंबार इच्छा करती हैं, परन्तु मरती नहीं। इन्हें भाई-बहिन, लड़के और लड़कियाँ बहुत होती हैं। किन्तु एक भाई और लड़का-लड़की के अतिरिक्त शेष इन्हीं के सामने मर जाते हैं। शेष अरिष्टादिक प्रथम हस्तिनी के समान जानें।

इसी प्रकार— द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ शंखिनी स्त्रियों के जीवन चरित, क्रमशः एक से न्यून द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ हस्तिनी के समान होते हैं, ऐसा पण्डितों से अनुभूत होना चाहिए।

चित्रिणी विरला देवि ! पद्मिनी चाऽतिदुर्लभा ।
रोमवद्धस्तिनी ज्ञेया विश्वरूपा च शंखिनी ॥१॥

शंकर जी पार्वती जी से कहते हैं कि हे देवि ! चित्रिणी स्त्रियाँ संसार में विरल (कहीं-कहीं) होती हैं और पद्मिनी तो अत्यन्त दुर्लभ हैं। हस्तिनी शरीर में रोयें के समान बहुत और शंखिनी संसार भर में व्याप्त हैं।

उद्वाहे मेलापकविचारः

पद्मिनी-शशयोर्योगश्चित्रिणीमृगयोः शुभः ।
हस्तिन्याः वृषभस्यैवं शंखिनीवाजिनोरपि ॥१॥
चित्रिणीनां चतसृणां चतुर्भिस्तु मृगैः सह ।
सङ्गमः क्रमशो बोध्यः सुधीभिः परमोत्तमः ॥२॥
दम्पत्योरुक्तशङ्कृत्स्नं क्रमभेदे च मध्यमम् ।
हस्तिनी-शङ्खिनीनाञ्च वृषभैस्तुरगैः सह ॥३॥
पूर्ववत् सुखसन्तानधनधान्यादिकं भवेत् ।
जातिसम्बन्धभिन्नत्वे नेष्टो योगो बुधैः स्मृतः ॥४॥

अब विवाह के लिए मेलापक (गणना) का विचार कहते हैं— पद्मिनी और शशक, चित्रिणी और मृग, हस्तिनी और वृषभ, शंखिनी और अश्व के योग (सम्बन्ध) को उत्तम कहते हैं॥१॥

चार प्रकार की चित्रिणी स्त्रियों के साथ चार प्रकार के मृग पुरुषों के सम्बन्ध क्रमशः अर्थात् प्रथम जातिवाली चित्रिणी का प्रथम जाति के मृग पुरुष, ऐसे ही दूसरी का दूसरे, तीसरी का तीसरे, चौथी का चौथे भेद वाले मृग पुरुष के साथ योग को पण्डित लोग परमोत्तम कहते हैं॥२॥ इस प्रकार के सम्बन्ध से दम्पति (स्त्री-पुरुष) को उनके लक्षण में उक्त सम्पूर्ण सुख प्राप्त होते हैं। क्रम के भेद से अर्थात् प्रथम को द्वितीयादि, द्वितीय को प्रथमादि भेद से मध्यम योग और तदनुसार फल भी होता है। ऐसे ही चारों प्रकार की हस्तिनी स्त्रियों को क्रमशः चार प्रकार के वृषभ पुरुषों के तथा चार प्रकार की शङ्खिनी स्त्रियों का, चार प्रकार के तुरग पुरुषों के साथ क्रमशः योग को भी उत्तम कहते हैं॥३॥ इसी के द्वारा मनुष्य पूर्वोक्त सुख, सन्तान, धन, धान्यादि से युक्त होते हैं और पूर्ववत् क्रमभेद से मध्यम होते हैं। और जाति सम्बन्ध भेद से अर्थात् पद्मिनी शशक के स्थान में पद्मिनी वृषभ तथा हस्तिनी शशक इत्यादि योग अति नीच और नेष्ट (अनुचित) हैं। ऐसा लाक्षणिक विद्वानों का मत है। सन्धिवश प्रायः वृषभ का योग शङ्खिनी और तुरग का योग हस्तिनी से भी हो जाता है।

इति शशकादितूर्यपुरुषाणां पद्मिन्यादितूर्यमहिलानाञ्च जीवनचरित्रफलं समाप्तम्।

श्रेयस्करदुष्कराणां बालकानां सामुद्रिकचिह्नानि

अपतनाताड़नार्तिरहित-दिनभाषणकारणारोदनपराः प्रबो-धाबोधबालकास्तथा डमरूलूखल-दण्डमन्दिरसमाः मन्दा-मलयुक्ताः पतनशीलश्लेष्मनासाभरणाः समक्षिकाः बालकाः वराटका भवन्ति।

पतनताडनार्तिदर्शनावक्राननहसितविहसिता अगलित-श्लेष्मनिर्मलाननस्वरकण्ठभूषणप्रविष्टबाहुलतिका मधुराधर-गन्धर्वभाषणाश्च बालकाः शारदापालकाः वसुमन्तो भवन्ति।

पीतदुर्गमनाधिकाङ्गुलीयास्थिलक्षितसारमेयसमानाः संशोधकाः। चञ्चलचपलावक्रांगसरलहास्यनासिकाः। ललालक्षरमालिकेन्दुकान्तिकान्ताः सम्पालकाः पितृसन्धि-समशीलहितपटुतराः झटिति सोदरोत्पादकाः। दुःखपितृ-समशीलमन्तराबालकाऽसोदरोत्पादकाः भवन्ति।

बालकों के शुभाशुभ द्योतक चिह्न—

जो बालक बिना गिरे, बिना मारे, किसी दुःख से दीन भाषण और अकारण रुदन करे, प्रबोध करने पर भी न माने ऐसा बालक और जिनके रूप डमरू[१], ओखली[२], दण्ड[३], और मन्दिर[४] के समान हों, जो मन्द और मल से युक्त हो, बारम्बार गिरा करें, जिनकी नाक से श्लेष्मा (कफ) गिरा करे और जो मक्खियों से घिरे हों। ऐसे बालक दरिद्री होते हैं। और जो गिरने, मारने और भय दिखलाने से हँसते हैं, जिनका मुख टेढ़ा नहीं होता, नाक नहीं बहती हो, मुख, स्वर और कण्ठ निर्मल हो, बाहु भूषणयुक्त हो या जिनकी बाहुलता कण्ठ में भूषण के समान सुशोभित हो, और मनोहर हो और जो गन्धर्व के समान बोलने वाले हों वे बालक विद्वान् और धनी होते हैं। जो लड़के पीले, दुःख से चलने वाले हों, जिन्हें अँगुलियाँ पाँच से अधिक हों, हड्डियाँ जिनकी दिख पड़ती हों, मुख कुत्तों के समान हों तो वे संशोधक अथवा माता-पिता का नाश करने वाले होते हैं। जो बालक चञ्चल हों और अङ्ग जिनके

१—जिसका पेट, चूतड निकला हो, २—जिसका पेट निकल कर पीठ धँस गयी हो। ३— जो दण्डे के सदृश लम्बा हो। ४— जो बेडौल याने ऊँचा खाला हो।

सरल हँसी स्वाभाविक मृदु, नासिका सीधी और ललाट चन्द्रमा के समान चमकनेवाला और मनोहर हो तो वे पालक होते हैं। जो बालक पिता की गोद में उसी के समान स्वभाव और स्नेह में अति पटु हो तो वह शीघ्र भाई को पैदा करता है। और जो दुःखी, पितृशील से रहित हो तो वह भाई पैदा करानेवाला नहीं होता है।

बालाऽरिष्टविचारः

पूर्वमायुः परीक्षेत पश्चाल्लक्षणमादिशेत्।
निरायुषः कुमारस्य लक्षणैः किं प्रयोजनम्?॥१॥

इति लाक्षणिकवचनप्रामाण्याद् बालानां जन्मतस्तुर्यमिताब्दं यावन्मातृरेखाकृतं ततोऽष्टवर्षं यावत्पितृरेखाजनितं तदूर्ध्वं स्वरेखाकृतारिष्टादिकं विद्वद्भिर्विवेचनीयमिति तत्प्रकारं निरूपयति-पित्रोर्भाग्यरेखा सन्ततिरेखाश्च छिन्नाः लघुप्रमाणाश्चेत् स्वल्पायुषः शिशव इति। ययोर्दम्पत्योः सन्ततिरेखा कुत्सितास्तयोरपत्यानां प्रथम-चतुर्थाऽष्टम-नवम-द्वादशवर्षेषु मतान्तरेण पञ्चसप्तपञ्चदशवर्षेषु बालारिष्टमिति। मृतवत्सायाः यया रुजा यस्यामवस्थायां बालका म्रियन्ते प्रायस्तेनैव रोगेण तस्यामेवाऽवस्थायामपरे बालकाः पुनः म्रियन्ते। शान्त्या सर्वत्र शुभः। पूर्वोक्तं नर-नारीणां कृत्स्नं फलं बालारिष्टनिवृत्तौ ज्ञेयमिति।

बालकों के अरिष्ट का विचार

पहिले आयु की परीक्षा कर तब बालकों के लक्षणादि का विचार करना उचित है। आयुरहित बालक के लक्षण से प्रयोजन क्या है? अर्थात् कुछ भी नहीं। ऐसा लाक्षणिक विद्वानों ने कहा है, तदनुसार बालकों के जन्म से लेकर चार वर्ष तक माता की रेखा से और पाँच से

आठ वर्ष तक पिता की रेखा से अनन्तर स्वयं बालक की रेखा से अनिष्टादि का विचार करना चाहिये। उसका प्रकार दिखलाते हैं। माता-पिता की भाग्य रेखा और सन्तति रेखा यदि छिन्न-भिन्न और छोटी हो तो बालक अल्पायु होते हैं। जिनकी सन्तान रेखा कुत्सित अर्थात् अच्छी न हो तो बालक के जन्म से १-४-८-९-१२ वर्षों में किसी के मत से ५-७-१५ वर्षों में बालारिष्ट कहना चाहिये। मृतवत्सा स्त्री के पुत्र जिस रोग और जिस अवस्था में मरते हैं, प्रायः उनके दूसरे लड़के भी उसी रोग और उसी अवस्था में मरते हैं, प्रायः शान्त्यादि यत्न से सर्वत्र शुभ होता है, बालारिष्ट निकल जाने के बाद स्त्री-पुरुषों का पूर्वोक्त समस्त फल जानना चाहिये।

सधवालक्षणम्

यस्याः कमलमुकुलाकारौ लघु-सान्द्र-पुष्टाङ्गुलीकौ कोमलौ रुचिरोत्तमाल्परेखान्वितावङ्गुष्ठाङ्गुलिसम्मुखौ करौ तथा रक्तकराम्बोरुहौ रक्तरेखाविलासिनौ स्यातामपि च श्लक्ष्णव्यक्त-गम्भीरपूर्ण-स्निग्धबर्तुल-रेखामनोहरौ मत्स्य-पद्म-कानन-जयन्ती, स्वस्तिकाविच्छिन्नशोभनभाग्यरेखायुक्तौ यवाञ्चितावथ च करमध्यं समुन्नतं समग्रयवमरन्ध्रकञ्चाङ्गुलीयकं स्ववर्णवत् पाणिपादम्, केशाश्च सूक्ष्माः भ्रुवौ च संगते दन्ताश्चाविरला अरोमके वृत्ते च जङ्घे वृत्तास्निग्धनखानि विशिराऽरोमकञ्च पाणिपृष्ठं स्यात्सा सधवावस्थायामेव निधनं प्रयातीति।

सधवा स्त्रियों के लक्षण

जब स्त्री के दोनों हाथ कमल-मुकुल के समान, अंगुलियाँ छोटी, घनी और पुष्ट हों, कोमल करकमल, सुन्दर उत्तम और थोड़ी रेखाओं से युक्त हों, अँगूठे और अँगुलियाँ सीधी हों और जिसके रक्तवर्ण करकमल में रक्तवर्ण ही रेखा शोभती हो तथा जिसके हाथ की

रेखायें सूक्ष्म परन्तु साफ और गम्भीर, पूरी-पूरी चिकनी और गोलाकार हो और जिसके हाथ में मत्स्य और पद्म रेखा, कानन, जयन्ती तथा स्वस्तिक रेखा हों, भाग्यरेखा सुन्दर तथा बिना कटी-कुटी हो, सब रेखा भी विराजती हों और जिसके हाथ का मध्यभाग ऊँचा हो, यव रेखा पूर्ण हो, जिसके अँगुलियों के मिलने पर छिद्र न दीख पड़ें, हाथ-पैर अपने शरीर के वर्ण के समान हों, केश सूक्ष्म हों, भृकुटी (भौं) मिली न हों, दाँत घने हों, बिना रोम के गोल जंघे हों, नख चिकने वृत्ताकार हों, शिरा और रोम से रहित हाथ का पृष्ठ भाग हो तो वह स्त्री सधवा होती है, अथवा पति के समान ही वैकुण्ठ वास करती है।

विधवालक्षणम्

यस्याः वामपाणौ तिस्रः षड् वा रेखाः स्युस्तथा रक्तास्थूला त्रिकोणान्तरापररेखा विस्तृता सिताऽसिता विरला-ऽशोभनाभूरिरेखा छिन्ना भाग्यरेखा दण्डरेखान्विता वा तथा पीतकेशमुखी पीनकर्णा प्रलम्बानना वृषस्कन्धा स्थूल-कण्ठा दुर्बला पण्डिता प्रलम्बोदरपयोधरा शब्दोत्पन्नगमना कर्कशा च्चिपिटविवर्णनखा बहुपर्वाङ्गुलियुक्ता सरोम-निम्नपाणिपृष्ठा पुंकेशवपुंरेखाभाषिणी स्थूलावयवा छिन्न-भिन्नरेखाङ्किता प्रमदा विधवेति।

बिधवा के लक्षण

जिस स्त्री के बायें हाथ में तीन या छः रेखायें हों तथा लाल रेखायें हों, त्रिकोण रेखा के मध्य में कोई रेखा हो अथवा मोटी चौड़ी सफेद या काली विरल भद्दी और बहुत सी रेखायें हों, भाग्यरेखा छिन्न-भिन्न हो या दण्ड रेखा से युक्त हो तो वह स्त्री तथा जिसके बाल पीले रंग के और कान मोटे और मुँह लम्बा हो जिसके कन्धे बैल के समान और कण्ठ मोटा हो, जो स्त्री दुर्बल पण्डिता हो, जिसका पेट और

स्तन लम्बा हो या पेट तक लंबे स्तन हों, जिसके चलने में पृथ्वी से शब्द हो, जो स्त्री कर्कशा तथा जिसके नख चिपटे और फांके हों, अँगुलियाँ बहुत पर्वों से युक्त हों, हाथ का पृष्ठ भाग गहिरा और रोम रहित हो, पुरुष के समान जिसके बाल, शरीर रेखा और भाषण हों, जिसका अंग स्थूल हो और रेखायें छिन्न-भिन्न हों तो वह स्त्री विधवा होती है।

पुंश्चलीलक्षणम्

यस्या भाले प्रकृष्टोऽपि बिन्दुः मलिनः प्रतिभाति या हावभावकटाक्षरता त्रपाविरहिता सिन्दूराङ्कितावयवा श्रीफलकपोला शुभ्रवर्णाऽतिदीर्घा सूर्यचिन्हाङ्किता मिलितविस्तृतभ्रूयुगाऽवृत्ताङ्गयद्भुताङ्गी प्रसिद्धाङ्गहीना स्थूलावयवा विशालेक्षणा ह्रस्वकरचरणा तीव्रस्वरा विवादिनी नवरेखिका सिद्धरेखाविहीना रक्तरेखान्विता ऋक्षोदरी भवति, अपि च यस्याः करे पुण्यरेखा छिन्ना भवेत् समीपमत्स्या वा तथा छिन्ना भाग्यरेका दण्डरेखायुता वा मातृपितृसमीपमत्स्या वा शंखचिह्नद्वयं, नासिका च तिलयुक्ता स्यात्, या च द्वादशवर्षाभ्यन्तरे यौवनचिन्हाङ्किताऽनुरूपसुन्दरी पूर्णचन्द्रानना बाला भवेत् सा सद्धर्मपरायणा शतोपवासनिरताऽपि पराङ्कशायिनी पुंश्चली भवति। या शोभनरेखान्विता चेदेकपतिकाऽशोभनरेखायुक्ता चेद् बहुपतिकेति विज्ञैर्विवेच्या। 'एकादशाऽब्दे सम्प्राप्ते या त्रपाभूषणा भवेत्। सा बुधैर्गृहिणी ज्ञेया डाकिनी चाऽन्यथाऽशुभा॥' इत्यादिलाक्षणिकोक्तरीत्या त्रपैव भूषणं स्त्रीणामिति। या खलु मानिनी क्षणे रुष्टा तुष्टा चाल्पक्रोधिनी पराशनयत्न-

कारिणी प्रत्यूषजागरणशीला देवभक्तिरता सा देवरूपा, त्रपाविरहिता पुरुषान्तरसंलापिनी प्रमदाऽवश्यं पांशुलेति।

स्त्रीणां षोडशवर्षं यावद्बाला संज्ञा ततस्त्रिंशद्वर्षावधि तरुणी पञ्चाशद्वर्षपर्यन्तं प्रौढाऽत ऊर्ध्वं वृद्धेति दिक्।

पुंश्चली स्त्री का लक्षण

जिस सुन्दरी के मस्तक का चमकीला बिन्दु भी मलीन प्रतीत हो, जो हाव, भाव, कटाक्ष, करनेवाली लज्जा से रहित हो, जिसके अङ्ग सिन्दूर के समान रक्त वर्ण हों, गाल बेल के समान निकले हों, वर्ण सुभ्र हो, जो लम्बी हो, जिसे सूर्य (सेहुँआ) भया हो, जिसकी भौहें मिली हों, और चौड़ी हों, अङ्ग प्रायः खुले रहते हों और विलक्षण हों, नेत्रादि प्रसिद्ध अंग से जो रहित हो और जिसके अंग मोटे हों, आँखें बड़ी हों, हाथ-पैर छोटे हों, स्वर तीखा हो और जो विवाद करती हो, जिसके हाथ में नव रेखायें हों, जो सिद्ध (पुण्य पद्म), स्वस्तिकादि उत्तम रेखा से रहित हो तथा जिसकी रेखायें रक्त वर्ण हों, पेट भालू के समान हो, जिसकी पुण्यरेखा छिन्न हो या मत्स्यरेखा से युक्त हो एवं भाग्यरेखा छिन्न या दण्डरेखा से युक्त हो अथवा मातृपितृ रेखा के समीप मत्स्य रेखा हो अथवा जिसके हाथ में दो शंख रेखायें हों या नाक पर तिल हो अथवा १२ वर्ष के भीतर ही जिसे युवावस्था के (स्तनादि) सब चिह्न दिख पड़े, जो सुन्दरी और पूर्ण चन्द्रमा के समान मुखवाली बाला हो वह सद्धर्म और सैकड़ों उपवास करनेवाली हो तो भी परपुरुष के गोद में शयन करनेवाली पुंश्चली होती है। जिसकी रेखायें अच्छी हों वह स्त्री एक पति वाली तथा जिसकी रेखायें खराब हों तो वह बहुत पतिवाली स्त्री होती है।

ग्यारह वर्ष की अवस्था तक जिस स्त्री ने लज्जारूपी भूषण को धारण कर लिया वही गृहिणी कहलाती है। इसके प्रतिकूल डाकिनी

कहलाती है, क्योंकि स्त्रियों का भूषण केवल लज्जा ही है। जो स्त्री शीघ्र ही प्रसन्न और रुष्ट हो, क्रोध थोड़ा करे, दूसरे को खाने के लिए यत्न करे, प्रातःकाल ही जग जाया करे, देवता की भक्ति करे तो वह स्त्री देवता के समान होती है। लज्जाशून्य दूसरे पुरुष से वार्तालाप करने वाली निश्चित पुंश्चली होती है।

१६ सोलह वर्ष तक की स्त्रियाँ बाला, १७ से ३० वर्ष तक की तरुणी, इसके बाद ५० वर्ष तक प्रौढ़ा, अनन्तर वृद्धा कहलाती हैं।

नर-नारीणां पैशाचिकचिह्नानि

भयसम्प्रेषिताः मलिनमनीषाः जागृतस्वप्नेऽपि पश्यन्ति मानवान् न तु प्रत्यक्षभूता पिशाचिका सन्धिकारिणी भवेत्, विगताङ्गभूताः गजपदाः प्रभञ्जनमेलकाः। समलवासहृत्कारपट्यदौर्गन्ध्यभूतिकाः भवेयुर्नरनार्यः। स्मरसुतघातिन्योऽमार्जितकुन्तला अघर्षितदन्ताः नित्यैकवासान्नयुक्ताः सन्ध्ययोश्शयनशीलाः निर्दयाः पुरुषास्तु महिला पार्श्वशायिनश्चेति विशेषः। दण्ड-खण्ड-रक्त-कुठार-दीर्घत्रिरेखायुक्ताश्च ते स्त्रीपुरुषाः भूतयोगिन्याद्याविष्टास्तत्परवशा अनेकोत्पातकौतूहलनिरताः कष्टादियुक्ताः मूढाः भवन्ति। मोचनोपायस्तु योगिनीतन्त्रे द्रष्टव्य इति।

स्त्री-पुरुषों के पैशाचिक चिह्न को दर्शाते हैं

जिन स्त्री-पुरुषों की बुद्धि भय से युक्त और मलिन हो, जो जागृत और स्वप्नावस्था में मनुष्यादिकों को देखते रहते हैं क्योंकि पिशाचादि प्रत्यक्ष आकर संयोग नही करते। अंग जिनके विकारयुक्त हो, चर्म हाथी के समान, वेग वायु के समान, हृदय तथा वस्त्र मलिन, फटे तथा दुर्गन्धि से युक्त हों, प्रायः रज-वीर्य स्वप्न में नष्ट होते हों,

जो लड़कों को मारती हों, जिनके सिर के बाल संस्काररहित इधर-उधर बिखरे, दाँत मलिन हों, जो सर्वदा एक ही वस्त्र धारण करते हों, दोनों सन्ध्याओं में सोते हों, दयारहित हों, विशेषकर पुरुष स्वप्न में स्त्रियों के साथ सोनेवाले हों, जिनके हाथ में दण्ड, खड्ग, रक्त, कुठार, दीर्घ (बड़ी) और तीन रेखायें हों वे (स्त्री-पुरुष) भूतादिकों से युक्त होते हैं। अर्थात् उनपर भूत और योगिनी आदि की छाया समझनी चाहिये और उन्हीं (भूतादिकों) के द्वारा अनेक प्रकार के उत्पात और कौतुकादिक में लवलीन रहते है, दुःखी और विमूढ़ होते हैं। भूतादिकों के छूटने का उपाय योगिनी तन्त्र से देखना चाहिये।

देवचिह्नानि

ये सुरभिसङ्केतनाः विगतच्छाया भूकम्पाङ्गरोमरहिता अचलितपिञ्जूषाः भाल-मोदप्रद-पीनप्रभञ्जनाकाररेखा-युक्ताः नेत्रकुन्तलाऽपतनावकोकनाः नीलनीरदसान्द्रदृष्ट-हृदयहिमकरकरानुकम्पार्द्रचेतसः दानशीलाल्पकोपनपरो-पकारिसद्गुणविशिष्टा प्रभावशालिनः करारविन्दोल्लासित-जकार-प्रधान-जाह्नव्यादि-पञ्चरेखायुक्तास्ते देवाः पुनन्तु मामिति।

देवी-चिह्नानि

या अबद्धकुन्तलाः प्रक्रीडनपरा बालिकाः द्विभुजाऽप्यष्ट-भुजासंरक्षिका सुरेखिकाः सततप्रयाणोत्सुकाः भूमण्डलस्यापि लोकत्रयपालिकाः करस्थाभ्युदयाः कालसन्धिप्रयाणसम्प्र-क्षिकाः हृदयानन्दाथिन्यो देवच्छायाविशिष्टाः देव्यो मां पुनन्त्विति। साम्बसदाशिवार्पणमस्तु।

इति सामुद्रिकरहस्ये पूर्वार्द्धं समाप्तम्।

देव पुरुषों के लक्षण—

जिनके शरीर से सुगन्धि निकलती हो, जो छाया से रहित हों, जिनके चलने से पृथ्वी में शब्द तथा अङ्गों में रोम न हों और कर्णादि से मल न निकले, मस्तक पर हर्ष देनेवाली चोटी के आकार की वायु के समान दौड़नेवाली रेखा (शिरा) हो, अवलोकन समय जिनकी पलकें न गिरती हों, दृष्टि नीली और धनी हो, हृदय चन्द्रमा के समान शीतल हो, जो दानशील, अल्प क्रोध करनेवाले, परोपकारी, सद्गुणी और प्रभावशाली हों, जिनके करकमल में जाकर पञ्चक अर्थात् जाह्नवी, यती, यव, जयन्ती और योग की पाँच रेखायें हों वे देवपुरुष कहलाते हैं सो मुझे पवित्र करें। सङ्केत में जकार और यकार में भेद नहीं माना है।

देवी का लक्षण—

जिनके बाल बँधे न हों, जो बालिकायें अनेक प्रकार की क्रीड़ाओं में तत्पर रहती हों, जो द्विभुजा होकर भी अष्टभुजा के समान रक्षणादि सब कार्य सिद्ध कर लेती हों जिनके हाथ में अच्छी-अच्छी रेखायें हों, जो निरन्तर यात्रा के लिये उत्कण्ठित रहा करें वे पृथ्वी पर रह कर भी तीनों लोकों की स्वामिनी होती है, अभ्युदय तो मानो इनके हाथ ही में रहता है। ये अपने मृत्यु समय को भी जानती हैं और हृदय को आनन्द देनेवाली होती है। इनमें देवियों की छाया और पूर्वोक्त देवताओं के समान परोपकारादि सद्गुण भी विद्यमान रहते हैं, ऐसी देवियाँ मुझे पवित्र करें।

श्रीसाम्बसदाशिवार्पणमस्तु

इति श्रीसामुद्रिकरहस्ये पूर्वार्द्धं समाप्तिमगात्।

श्रीरस्तु, शुभम्भूयात्।

———————

श्री मङ्गलमूर्तये नमः

अथ सामुद्रिकरहस्ये

उत्तरार्द्धं प्रारभ्यते

ब्रह्मा यत्पदलग्नपांशुबलजाखण्डप्रभावः कृती
विश्वोत्पादनचातुरीषु दिनपो यज्ञादिषु स्वोदयात् ।
शम्भुश्रीहरिचण्डिकागणपतिर्ब्रह्मादिदेवाः भृशम्
यन्मायावशगाः शिवं दिशतु नो रामाभिधानो हरिः ।।१।।

ब्रह्मा जिसके चरण की धूलि के बल से जायमान पूर्ण भाव से संसार-रचना-विषय-चातुर्य से कृतकार्य हुए और सूर्य निज उदय से यज्ञादिकों में सफल हुए और शङ्कर, श्रीविष्णु, दुर्गा, गणेश, ब्रह्मादि सब देवता बारम्बार जिसकी माया के अधीन हुए वही रामाभिधान विष्णु हमारे मनोरथ में मङ्गलप्रद हों।।१।।

रेखाध्याये परिभाषाप्रकरणम्—

तत्राऽदौ रेखानां, रूप-राशि-ग्रहस्थानादिविचारः- कङ्कण, वलय, परिधानस्थानं मणिबन्धः। तत्रैव, सर्पाकार-वेष्टनत्रयवती रेखा मणिबन्धाख्या। तदुपर्यूर्ध्वरेखाऽधः सिन्धु-स्थानं तत्रैव मत्स्याङ्किता मत्स्यरेखा मणिबन्धादारभ्यतेरा-भिरविच्छिन्ना मध्यमा मूलगामिनी पूर्णोर्ध्वरेखा।

सा वक्रा चेद्धलरेखा।

पताकारूपा केतुरेखा।

सैव वक्राऽधः स्थूला मध्ये पीनतरा कुशाग्रा चेत् करवालरेखा।

उपरि पित्रोरन्तरवर्तिनी चापाकाराऽपररेखासंयोगात् प्रत्यञ्चरूपोर्ध्वा चाप-(धनुः)-रेखा।

सौण्ड-शृणि-(अङ्कुश)-पदयुक्ता सा गजाख्या।

सैवापरा वा दण्डरूपा दण्डाख्या।

छत्रिकारूपा छत्ररेखा।

सदण्डा तौलिक-तुलाभ्यां युक्ता तुलाख्या।

तुरगाभा तुरङ्गाख्या।

वृषभाभा वृषरेखा।

त्रिकोणाङ्किता त्रिकोणरेखा।

इयमेव मन्दिरक्षितिसंज्ञिकेत्युच्यते।

लघुचतुष्कोणा वासुरेखा।

बृहच्चतुष्कोणा पुष्करिणीरेखा।

आदर्शाभा आदर्शरेखा।

आलवालरूपा दरिद्राख्या।

चतुष्कोणा मध्ये बहुतिर्यगूर्ध्वरेखाभिर्ग्रामरेखा जालरेखा।

वृक्षाभा तरुरसालनाम्नोच्यते।

समाः बहुबिन्दवः शैलरेखा।

त्रिपत्रात्मिका समृडाला कण्टकविन्दुयुक्ता वा पद्मरेखा।

अङ्कुशरूपा शृणिरेखा।

सर्पाकाराऽहिरेखा।

त्रिकोणशृणिमध्यगोर्ध्वसमदण्डाभ्यां 'क' रेखा ब्रह्मरेखा वा।
ऊर्ध्वाधःरेखयोर्मध्यगा चण्डरूपा स्तम्भरेखा।
घटाङ्किता घटरेखा।
वीणाभा वीणारेखा।
ऊर्ध्वरेखां परित्यज्योक्ताः समस्ताः पित्रोरन्तरवर्तिजलावरोधस्थानाभ्यन्तरगता एव वक्ष्यमाणशुभाऽशुभफलप्रदाः भवन्ति।
अङ्गुष्ठाधः उच्चस्थानम्।
तदधो मणिबन्धादारभ्य तर्जन्यंगुष्ठयोर्मध्ये तिर्य्यग्गामिनीं मातृरेखासंलग्ना पितृरेखा।
सैवार्णवे आयुर्दायसामुद्रिके कर्मरेखा मतान्तरेण मातृरेखा चोच्यते।
पित्रायुष्ययोर्मध्ये पित्रा संलग्ना मातृरेखा शिरोरेखा वा तदुपरि कनिष्ठिकामूलादारभ्य तर्जनीमध्यमान्तरालगामिनी तीर्यगायुष्य-रेखा सैव हृदय-स्वान्त-मन-आदिपर्यायाऽनेकरूपा भवति। यथा—
१ हीना २ यवाङ्किता ३ द्विभागा ४ निधानान्तरस्थानीयपद्मयुक्ता ५ रज्जूरूपा ६ शृंखलाऽनुकारिणी ६ जाह्नवीरूपा।
आयुष्य-मातृरेखयोर्मध्ये ऊर्ध्वाऽधःकोणयुक् त्रिकोणद्वयाङ्किता डमरुरेखा।
आयुष्यरेखोपरि प्रशस्ताऽनामिका मूलगतोर्ध्वा पुण्या।
सैव सरस्वती कीर्ति-रविनाम्ना च प्रसिद्धा।
आयुष्यकनिष्ठिकाऽङ्गुल्योर्मध्ये कुशाग्र-तिर्यग्रूपालनारेखा

तदुपर्यूर्ध्वगामिन्यो जाररेखाः।

तदन्तिके तिर्यग्गामिनो कुठाराभा कुठाररेखा।

आयुष्यरेखाधो मणिबन्धादुपरि करभप्रदेशे तिर्यगा भ्रातृभगिनीबोधिका सोदराख्या।

अङ्गुष्ठाधः उच्चस्थाने तिर्यगा सन्तानबोधिका।

उच्चस्थानान्तिके पितृतीर्थे ऊर्ध्वगाः हिंसारेखा।

अंगुष्ठमूले मध्यपर्वणि च यवाकारा यवरेखाः।

अंगुष्ठमूल एव तिर्यग्रेखात्रयमध्यबिन्दवः मकररेखा।

उच्चस्थानेऽतिक्षुद्राभिस्तिर्यग्रेखाभिः काननरेखा।

अंगुलीनां पूर्वमूर्ध्वगामिन्यः पर्वजालाह्वा।

अंगुलिप्रथमपर्वसु नागोपवेशानाकारा चक्ररेखा।

तदभावे तत्रैव सीपाभा सीपरेखा शङ्खाकारा शंखरेखा वा सरस्वत्यायुर्भ्रातृपित्रूर्ध्वादि समस्ताः परस्परं मिलिताश्चोद्योगरेखा। शेषाश्चन्द्रसूर्यतोमरबाणपक्षिनदीकूर्मोपवीताद्यनेकरेखाः यथायोग्यात्मरूपाभायुक्ताः प्रायः करतले भव-न्तीति तत्फलं लक्षणञ्च गुरुपरम्परया निजेष्टदेवताप्रसादाद्वा बुधैरवगन्तव्यमिति। यदि सरस्वत्यायुष्यमातृभाग्यस्वास्थ्यपितृरेखान्तिकेऽपरा तत्सदृशं रेखा स्यात्तदा तत्तदपरा सरस्वत्यायुर्मातृभाग्यस्वास्थ्यपितरं नामतो ज्ञातव्या।

मणिबन्धादारभ्य पितृरेखासंलग्नकनिष्ठिकामूलपर्यन्तं किञ्चित्तिर्यग्गामिन्यूर्ध्वरेखा स्वास्थ्या विदेशाह्वा वेत्युच्यते।

करतले दिग्ज्ञानम्—

पूर्वाशा करशाखासु मणिबन्धे पश्चिमा करभप्रदेशे दक्षिणा-

ऽङ्गुष्ठान्तिकं चोत्तरा दिग्भवतीति।

ग्रहस्थानज्ञानम्—

कनिष्ठाऽनामिकामध्यमातर्जनीमूलेषु क्रमाद्बुध-रवि-शनि-गुरुस्थानान्यङ्गुष्ठमूलोच्चस्थाने भृगोः स्थानं भौमस्य स्थाने द्वे प्रथमं गुरुशुक्रयोरन्तराले द्वितीयं त्वायुर्मातृरेखयोर्मध्ये चन्द्रस्थाने च करभप्रदेशस्थमातृरेखामारभ्य मणिबन्धपर्यन्तं भवतीति।

राशिस्थानज्ञानम्—

तर्जनीप्रथमे पर्वणि मेषः, द्वितीये वृषस्तृतीये मिथुनं एवं मध्यमायाः प्रथमे मकरः, द्वितीये कुम्भः, तृतीये मीनः, अनामिकायां क्रमशः पर्वसु कर्कसिंहकन्याः, कनिष्ठापर्वसु तुलावृश्चिकधन-स्थानानीति राशिस्थानानि।

रेखावर्ण-मुखज्ञानम्—

उक्तानुक्तसमस्तरेखाः श्वेतरक्तपीतकृष्णाः स्थूलाः कुशाग्राः छिन्नभिन्नाद्यनेकरूपाः भवन्ति तत्फलन्तु फलप्रसङ्गे वक्ष्यामः।

सामान्यं मणिबन्धमुखे विज्ञेयमिति।

रेखापरिमाणम्—

पञ्चनवयवा 'पुण्या' श्रेष्ठतरा स्मृता।

त्रिदशषड्यवा 'पुण्या' मध्यमा स्थूलप्रज्ञाबोधिका।

त्रयोदशाधिकयवप्रमाणा सर्वदा शोभनमनीषाबोधिका।

षड्यवन्यूनतया पुण्यरेखया देवानां प्रियः।

द्वादशयवप्रमाणिकोर्ध्वा श्रेष्ठा नृपालयोगबोधिका। ततो न्यूनतया खण्डाभिधेति।

द्वियवप्रमाणिकया यवरेखया कुलभूषणता।

ऊर्ध्वरेखाबद्धरेखाऽऽयुष्कर्मरेखेव।

कुण्डलत्रिकोणगजमत्स्यमन्दिरादयः षड्यवाधिकाः श्रेष्ठाः भवन्ति।

प्रलम्बा सर्वा रेखा द्वादशयवा परिवेषा षड्यवा लघुतरा सर्वा त्रियवा श्रेष्ठतरा।

एकस्य यवस्य मानं दशवर्षप्रमाणं ज्ञातव्यम्। तत्राऽयं भेदः प्रलम्बासु रेखासु प्रलम्बैः (दीर्घैः) यवैः वृत्ताकारासु ह्रस्वासु विस्तृतैः (परिणाहयुक्तैः) यवैर्मानं कर्तव्यम्।

प्रकारान्तरेण भाग्यरेखामानज्ञानम्—

भाग्यरेखा यदि मातृरेकासंलग्ना स्याच्छुभा तन्मानं ३५ वर्षपरिमाणं तदधोऽनुमानाद्वर्षप्रमाणं ज्ञेयम्। यस्या एव मातृरेखामारभ्याऽऽयूरेखान्तं यावत् ५५ वर्षपरिमाणमायु-रेखामारभ्य मध्यमा मूलपर्यन्तं शतवर्षपरिमाणं भवतीति।

यत्र-यत्र सा छिन्ना तत्र २ वर्षेषु कष्टादिकं कुशलपुरुषै-रनुमाय वक्तव्यम्।

आयुरेखावर्षपरिमाणं पूर्वार्धे 'एकवर्षेऽपि त्रिंशत्स्यादि'-त्यादिना पृष्ठ १० श्लोक ३८ प्रागेव निगदितम्।

सूचना—

रेखा नामादि परिभाषाओं की टीका इस कारण नहीं की गई कि इनके स्थान, नाम, ग्रह और राशि के स्थानादि २० चित्रों तथा उनकी सूचियों से स्पष्ट विदित हो जायेंगे।

रेखापरिमाण भाषा—

१४यव के बराबर यदि पुण्य रेखा हो तो श्रेष्ठ कही जाती है।

६ से १३ यव तक मध्यम और स्थूल बुद्धि का द्योतक है। ६ यव से न्यून हो तो मन्द बुद्धि की बोधिका होती है।

१२यव के बराबर ऊर्ध्व रेखा हो तो उत्तम और राजयोग का बोध कराती है। इससे न्यून हो तो उसका नाम खंडरेखा है। २ यव के बराबर यदि यव रेखा हो तों कुलभूषणता को सिद्ध करती है।

हल रेखा, आयु रेखा और मातृ-पितृ रेखायें ऊर्ध्व रेखा के समान होती हैं। कुण्डल त्रिकोण गज मत्स्य मन्दिरादि रेखायें ६ यव से अधिक श्रेष्ठ होती हैं। लम्बी सब रेखायें १२ यव वृत्ताकार ६ यव छोटी सब तीन यव के बराबर श्रेष्ठ हैं।

एक यव का मान १० वर्ष के बराबर है। अतः लम्बी रेखाओं का मान (नाप) लम्बे (खड़े) यव से वृत्ताकार और छोटी रेखाओं का नाप चौड़े यव से करना चाहिए। पुण्यरेखा की गणना छोटी रेखाओं में है, अतः इसे भी चौड़े यव से नापना चाहिए।

भाग्यरेखा का वर्णन—

भाग्यरेखा यदि मातृ रेखा से मिली हो तो उसका मान ३५ वर्ष का होता है, उसके नीचे का हिसाब उसी क्रम से अनुमान द्वारा जानना। मातृ रेखा से आयु रेखा तक भाग्य रेखा का प्रमाण ५५ वर्ष और आयु पूर्वा से मध्यमा मूल तक १०० वर्ष का मान होता है।

जहाँ २ यह रेखा कटी हो उन वर्षों में अनुमान द्वारा कष्टादि जानना चाहिए।

आयु रेखा का वर्षप्रमाण पूर्वार्द्ध नख शिख वर्णन के अवसर पर प्रसङ्गवश कर-रेखा वर्णन पृष्ठ १० श्लोक ३८ में हो चुका है।

रेखादर्शने विचारः-

तत्रादौ गणेशं शारदां दुर्गां कामाख्यां स्वेष्टदेवतां गुरुञ्च चत्वारं हृदि संस्मृत्य सभेदशशकपद्मिन्यादितूर्यस्त्रीपुरुषाणां लक्षणं विज्ञाय 'नेत्रदन्तेन नारी स्यात्पुरुषो भाषणेन च'

इत्यादि लाक्षणिकवचनान्नखशिक्षलक्षणं च हृदि निधाय रेखावलोकनं कर्त्तव्यम्। रेखादिभिर्लक्षणैश्च तारतम्येन शुभाशुभफलं विचार्य वक्तव्यमन्यथोपहासायोक्तं फलं भविष्यति।

नियमान्तरञ्च—

महाप्रत्यूषे, सन्ध्यायां, निशीथे, मध्याह्ने, हास्यसदसि, प्रयाणरथे, मार्गे, लिपिमन्तरा फलपुष्पमुद्राग्रहणं विना रेखावलोकनं न कर्तव्यम्।

देवानां प्रियसन्निधौ पण्डितशौण्डान्तिके वराटकानां समीपे च रेखावलोकनं निषिद्धम्।

सुदर्शनाः स्निग्धशोभनदशनाः युवानो विहसितवदनश्चेत्तर्हि सुकेन रेखा द्रष्टव्येति।

फलकथनप्रकारः—

शुद्धयुवपुरुषाणामायुः कर्म (माता-पिता) सुखदुःखविद्याविवाहलाभाऽलाभयशो मित्राऽमित्रपापपुण्यस्थानजन्यसुख-पुत्री-पुत्रभ्रातृभगिनीसंख्या तज्ञनितसुखादयः जीवनादिकं वृत्तिकीर्तयश्च वक्तव्या इति।

अबलास्वयं विशेषः—

पतिपुत्रयोस्तद्भाग्योदयवर्षाणां तज्जन्यसुखदुःखानां प्रणयादीनां सपत्नीश्वशुरादीनाञ्च वर्णनं कार्यमिति।

वृद्धानामायुस्सद्धर्मदयादाक्षिण्यादिदाम्पत्य-सुखदुःख-पुत्री-पौत्रादि-निर्णयस्तत्परिणयनं सुखादिकञ्च वक्तव्यम्।

शुद्धेतर (वर्णशङ्कर) पुरुषाणामायुर्वित्तं विद्यासुखदुःख-

निधनादिकं यथासम्भवं वाच्यं किन्तु तद्भ्रातृभगिनी-सङ्ख्यादिकं न वक्तव्यमिति।

बालानां बालारिष्टं विद्यां पित्रोः सोदराणाञ्च सुखादिकं विवेचनीयमिति।

अब रेखा-दर्शन के समय विचारणीय बातों को कहते हैं— प्रथम गणेश, सरस्वती, दुर्गा, कामाख्या, निजेष्टदेवता और गुरु का स्मरण ७ बार हृदय में करके भेदसहित शशक, मृग, पद्मिनी, चित्रिणी आदि स्त्री-पुरुषों के लक्षण और नख-शिखोक्त नेत्र और दाँत से स्त्रियों के भाषण से पुरुषों के लक्षण को हृदय में रखकर रेखा देखना। सबको तारतम्यानुसार मिलाते हुए शुभाऽशुभ फल कहना चाहिये। ऐसा नहीं कहने से कथित फल नहीं घटता-प्रत्युत उपहास होता है।

अन्य नियम—

बड़े प्रातःकाल, सायंकाल, रात्रि में, मध्याह्न में, जहाँ हँसी होती हो, यात्रा समय, रथ पर, रास्ते में, बिना लिखे, फल-फूल और द्रव्य के बिना रेखा नहीं देखना चाहिये।

मूर्ख, धूर्त, पण्डित और दरिद्रों की सभा में रेखा देखना निषिद्ध है। सुन्दर स्निग्ध दाँत और विहसित मुखवाले सुन्दर युवा पुरुषों की रेखा देखना उचित है।

फल कहने की रीति—

शुद्ध और युवा पुरुषों की आयु उनके माता-पिता सुख-दुःख विद्या-विवाह-लाभ-हानि-यश-अयश-मित्र-शत्रु-पाप-पुण्य-स्थान-जनित-सुख-दुःख तथा पुत्र, कन्या, भाई-बहिन की संख्या तज्जनित सुख-दुःख, उनका जीवन-मरण-जीविका-तीर्थ और कीर्ति इत्यादि का वर्णन करना चाहिये।

स्त्रियों में पति-पुत्र इनका भाग्योदय वर्ष इनके द्वारा होने वाले

सुख-दुःख पति में प्रेमादिक सवत और ससुर-सास इत्यादि का वर्णन विशेष होना चाहिए।

वृद्ध पुरुषों के आयु श्रेष्ठ धर्म दया चातुर्यादि स्त्री-पुरुषों को एक दूसरे के द्वारा सुख-दुःख उनके पुत्र-पौत्रादि का निर्णय और विवाहादि का वर्णन करना चाहिए।

वर्णशंकर पुरुषों के आयु-धन-विद्या-सुख-दुःख-मृत्यु का वर्णन यथा सम्भव करना परन्तु उनके भाई बहिन की संख्या नहीं कहनी चाहिये।

बालकों के बालारिष्ट विद्या माता-पिता और बहिन-भाई से सुख इत्यादि का विचार करना चाहिए।

रेखालङ्घनविचारः—

समानरेखा खलु समाना लङ्घिता न भवति। यथा पुण्यया लङ्घिते अप्यायुष्यमातृरेखे छिन्ने नोच्येते। तथैव भाग्यया मात्रायुष्यरेखे अपि छिन्ने नोच्यते, इत्यादि ज्ञातव्यमिति।

अनिष्टफलकथनप्रक्रिया—

दुष्टरेखादिभिः क्षितिहीनतावराटकत्वापमानमहाचिन्ता-ऽदारभ्रमणमूर्खतानीरसताद्वन्द्वनिष्कासनादिभिः 'किं करोमि क्व गच्छामि पतितो दुःखसागरे। हा दैवेति महाचिन्ता सामुद्रिकवचो यथे'-त्याद्यनिष्टफलं यथासम्भवमूहनीयमिति कूटखण्ड, कुठार-कूर्मान्यतमरेखया नितान्तदुःखी। तदि-तरशुभरेखादिभिस्त्रिधनपौत्रादिसुखं यथासम्भवं गृहभूमि-वाटिकासन्मानाद्यनेकशुभफलकथनीयमित्यलम्।

इति परिभाषाप्रकरणम्ः

भाषा— **अब एक रेखा से दूसरी रेखा के कटने का विचार करेंगे। समान रेखा से यदि समान रेखा काटी गयी हो तो वह काटी नहीं**

कही जा सकती। जैसे पुण्यरेखा से छिन्न आयु और मातृरेखा कटी नहीं कही जा सकती। जैसे पुण्य रेखा से छिन्न आयु और मातृ रेका कटी नहीं कहलाती, उसी प्रकार पुण्यरेखा से भी मातृ और भाग्यरेखा कटी नहीं कहला सकती है।

अब अनिष्ट फल में क्या २ कहना चाहिये, उसका प्रकार दर्शाते हैं-

दुष्ट रेखा तथा लक्षणों से अनिष्ट फल कहना हो तो पृथ्वी की हीनता, दरिद्रता, अपमान, कोई भारी चिन्ता, स्त्री-वियोग, व्यर्थ भ्रमण, मूर्खता, निरसता, कलह, स्थान या पद से हटाया जाना इत्यादि अनेक कारणों से क्या करूँ, कहाँ जाऊँ इत्यादि लाक्षणिक के कथनानुसार यथासम्भव अनिष्ट फल विचार कर कहना चाहिये।

कूट, खण्ड, कुठार और कूर्म इनमें से कोई भी एक रेखा हो तो मनुष्य को अत्यन्त दुःखी कहना।

इनसे इतर शुभ रेखाओं से स्त्रिधन अर्थात् स्त्री-पुत्र-धन और पौत्रादि सुख तथा यथासम्भव गृह, भूमि, वाटिका सर्वत्र सम्मान इत्यादि अनेक शुभफल विचार कर कहना चाहिये।

इति परिभाषाप्रकरणम्।

समस्तनरनारीणां सामान्यशुभाशुभफलम्—

तत्रादौ पुंसां पाणौ आयुष्य, मत्स्य, त्रिकोण, पुण्य, हल, शङ्ख, चक्रोर्ध्वपण * पद्मकेतुकाननादिप्रशस्तरेखाः यद्यन्य-रेखया छिन्नाः स्युरथवा तत्पार्श्वे खण्डा भग्ना रेखोदिता स्यात्तर्ह्यकारणिकाशुचिद्वन्द्ववराटकत्वक्षीणवृत्तित्व-ऋण-रुणारुजार्तिमहिलासुतमानहीनताद्यनिष्टफलप्रदाः भवन्ति।

स्त्रीणां त्वङ्गुष्ठमूलान्मणिबन्धाद्वा प्रचलितसौभाग्यरेखा-न्तिके शुभरेखासन्निधौ वा काचित्खण्डाभग्नारेखोदिता तर्हि

* अङ्गुष्ठे नखाधः पणरेखा भवति।

पतिपुत्रसहजमातृपितृश्वश्रूश्वशुरादिकष्टमूहनीयमिति। शान्त्या द्वितृहायने शुभं विज्ञेयमिति।

यदि सदृशरेखान्तिके सजातिरेखोदिता स्यात्तर्हि द्विगुणाष्टसुखप्रदा भवेत्। यथा मत्स्यरेखोपरि मत्स्यरेखेत्यादि।

पूर्वार्द्धे कररेखावर्णनावसरे सामान्यरेखाफलमुक्तं विशेषफलन्तु पद्येनानुपदं वक्ष्ये।

अब सम्पूर्ण स्त्री पुरुषों के सामान्य शुभाशुभ फल को कहते हैं।

पुरुषों के हाथ में यदि आयुष्य, मत्स्य; त्रिकोण, पुण्य, हल, शङ्ख, चक्र, ऊर्ध्व, पण, कमल, केतु और कानन आदि शुभ रेखायें दूसरी रेखा से कटी हों अथवा उनके पास ही खण्डित भग्न कोई दूसरी रेखा उदित हो तो वह निर्दयता, अपवित्रता, झगड़ा, दरिद्रता, नष्ट जीविका, ऋण और रोगादि के द्वारा पीड़ा को देने वाली तथा धन पुत्र मान का नाश करने वाली होती है।

स्त्रियों के अङ्गुष्ठ मूल अथवा मणिबन्ध से उठी हुई सौभाग्य रेखा वा अन्य शुभ रेखा के समान किसी खण्डित भग्नरेखा का उदय हो तो उसे पति, पुत्र, भाई, माता, पिता, सास-ससुरादि को कष्टप्रद समझना चाहिये। शान्त्यादि शुभ कर्म से दो तीन वर्षों में शुभ होता है।

समान रेखा के समीप यदि समान ही रेखा का उदय हो तो वह सोलह गुणा सुखादि फल का बोधन करती है। जैसे मत्स्य रेखा के समीप मत्स्य रेखा हो इसी प्रकार अन्य रेखाओं को समझना चाहिये।

पूर्वार्द्ध में कर-रेखा वर्णन करते समय प्रसङ्गवश कुछ सामान्य रेखाओं का वर्णन हो चुका है। विशेष रेखाओं का फल पद्य के द्वारा नीचे दर्शाते हैं।

जातकाभरणोक्तराजयोगादिफलम्

प्रसूतिकाले प्रबला यदि स्युर्नृपालयोगाः पुरुषस्य यस्य।
सद्राजचिह्नानि पदे तदीये भवन्ति वा पाणितलेऽमलानि।१।

जिस पुरुष के प्रसूति-समय में राजयोग प्रबल हो उसके हाथ और पैरों में अवश्य राजचिह्न की निर्मल रेखा होती है।।१।।

अनामिकामूलगता प्रशस्ता सा कीर्तिता पुण्यविधानरेखा।
मध्याङ्गुलेर्या मणिबन्धमाप्ता राज्याप्तये सा च किलोर्ध्वरेखा।२।

अमामिका के मूल से जो रेखा उठती है उसे पुण्य रेखा कहते हैं। इस रेखा के होने से मनुष्य धर्मकार्य में तत्पर होता है और मध्य अङ्गुली के मूल से मणिबन्ध तक पहुँची हुई रेखा को ऊर्ध्व रेखा कहते हैं; वह श्रेष्ठ और राज्य को देनेवाली है।।२।।

विराजमानं यवलाञ्छनं चेदङ्गुष्ठमध्ये पुरुषस्य यस्य।
भवेद्यशस्वी निजवंशभूषा भूषाविशेषः सहितो विनीतः।३।

जिसके अङ्गुष्ठ मध्य में यव चिह्न हो वह मनुष्य यशस्वी और अपनें कुल का भूषण होता है। विशेष आभूषणों से युक्त तथा विनम्र होता है।।३।।

चेद्वारणो वातपवारणो वा वैसारिणः पुष्करिणी सृणिर्वा।
वीणां च पाणौ चरणे नराणां ते स्युर्नराणामधिपाः वरेण्याः।४।

जिस मनुष्य के हाथ या पैर में हाथी, छत्र, मत्स्य, पुष्करिणी, अङ्कुश और वीणा इनमें से कोई भी चिह्न हो तो वह सब पुरुषों में श्रेष्ठ और सबका स्वामी होता है।।४।।

आदर्शमालाकरवालशैलहलाश्च यत्पाणितले मिलन्ति।
स्यान्मण्डलीकोऽवनिपालको वा कुले नृपालः कुलतारतम्यात्।५।

जिस पुरुष के हाथ में दर्पण, माला, खड्ग, शैल या हल रेखा हो तो वह मण्डलाधीश्वर अथवा अपने कुल में कुलता-रतम्य से नरपति होता है।।५।।

चेद्यस्य पाणौ चरणे च चक्रं धनुर्ध्वजाऽब्जव्यजनासनानि।
रथाश्वदोलाकमलाविलासात्तस्यालये स्वर्गजवाजिशालाः।६।

जिसके कर वा चरण में, चक्र, धनु, ध्वजा, कमल, व्यजन (पंखा), आसन, रथ, घोड़ा, दोला (पालना) रेखा हो तो उस मनुष्य के घर लक्ष्मी का विलास तथा घोड़े और हाथी को बाँधने की शाला होती है अर्थात् उसके दरवाजे पर हाथी और घोड़े बँधे रहें ॥६॥

स्तम्भस्तु कुम्भस्तु तरुस्तुरंगो गदा मृदङ्गोऽङ्घ्रिकरप्रदेशे।
दण्डोऽथवाऽखण्डितराज्यलक्ष्म्या स्यान्मण्डितःपण्डितशौण्डको वा।७

जिसके कर या चरण में स्तम्भ, कुम्भ, वृक्ष, तुरङ्ग, गदा, मृदङ्ग अथवा दण्ड रेखा हो तो वह मनुष्य अखण्ड राजलक्ष्मी का सुख भोगने वाला और पण्डितों में श्रेष्ठ होता है॥७॥

सुवृत्तमौलिस्तु विभालभालश्चाकर्णनीलोत्पलपत्रनेत्रः।
आजानुबाहुं पुरुषं तमाहुर्भूमण्डलाखण्डलमार्यवर्याः।८।

जिसका मस्तक गोलाकार और भाल उन्नत हो, नेत्र नील कमल दल के समान विशाल, बाहु जानुपर्यन्त लम्बी हों, तो वह पुरुष अखण्ड भूमण्डल का राजा होता है, ऐसा आचार्यों ने कहा है (उत्तम समस्त रेखाओं के रूप स्थान चित्र सूची से चित्रों में देखिये)॥८॥

नरस्य नासा रसला च यस्य वक्षःस्थलं चापि शिलातलाभम्।
नाभिर्गभीरातिमृदू भवेतामारक्तवर्णौ चरणौ च भूपः।९।

जिसकी नाक सीधी और वक्षस्थल (छाती) शीलातल के समान सुदृढ़, नाभि गम्भीर और चरणकमल कोमल और रक्त-वर्ण हो वह पुरुष राजा होता है॥९॥

प्रसन्नमूर्तिः समुदारचेता वंशाभिमानः शुभवाग्विलासः।
अनीतिभीरुर्गुरुसाधुनम्रः साम्राज्यलक्ष्मीं लभते मनुष्यः।१०।

जिसके हस्त में ऊपर श्लोक में कही हुई इन रेखाओं के चिन्ह हों तो वह मनुष्य सर्वदा प्रसन्न और उदार चित्त वाला गुरु और माधु से नम्र होता है और राज्यलक्ष्मी का उपभोग करता है।१०।

करतले यदि यस्य तिलो भवेदविरलः किल तस्य धनागमः।
पदतले च तिलेन समन्विते नृपतिवाहन-चिह्नसमन्वितः।११।

जिसके करतल मध्य में तिल हो तो उस मनुष्य को सर्वदा धन की प्राप्ति हुआ करती है, और पैर के तलवे में तिल हो तो राज्यवाहन और राज्यचिन्ह से युक्त होता है।।११।।

एतत्फलं राजकुलोद्भवानां स्यान्मानवानां मुनयो वदन्ति।
प्रकल्पयेदन्यकुलोद्भवानां नूनं तदूनं स्वकुलानुमानात्।१२।

ये सब फल राजकुल में उत्पन्न मनुष्यों के लिए होते हैं। दूसरे कुल में उत्पन्न मनुष्यों के लिए उनके कुलानुमान से न्यूनाधिक होता है ऐसा मुनियों ने कहा है।।१२।।

चिह्नानि यानि प्रतिपादितानि व्यक्तानि सम्पूर्णफलप्रदानि।
वामेतरेऽङ्घ्रौ च करे नराणां धन्यानि वामे खलु कामिनीनाम्।१३

उक्त जितने चिन्ह हैं वे यदि व्यक्त (साफ-साफ) हों तो दाहिने हाथ तथा पैर में पुरुषों को, बायें हाथ और पैर में स्त्रियों को उत्तम फल देने वाले हैं।।१३।।

ग्रन्थान्तरोक्तपुण्यादिरेखाफलम्

तत्रादौ पुण्य-(रवि-कीर्ति)-रेखाफलम्-

पुण्या रेखा विलसति निजस्थान एवातिशुद्धा
धीजीव्याढ्यः द्रविणयशसो सद्व्ययी सर्वमान्यः।
प्रत्युत्पन्ना मतिरिह भवेदर्थलाभोऽप्यकस्मात्
कृत्स्ने कार्ये भवति सफलः शान्तचित्तो मनुष्यः।।१।।

अन्य ग्रन्थों में कहे हुए पुण्यादि रेखाओं का फल कहते हैं—

जिसके हाथ में पुण्य रेखा अपने स्थान पर हो, शुद्ध रूप से शोभती हो तो वह पुरुष बुद्धिजीवी, यशस्वी, धनाढ्य, सत्कार्य में व्यय करनेवाला, पुरुषों में माननीय और प्रत्युत्पन्न मति होता है और अकस्मात् उसे द्रव्य भी प्राप्त होता है, वह शान्त चित्त होता है और उसके सम्पूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त होती है। चित्र २, रेखा ८।।१।।

पित्रा युक्ता यदि च तपना शिल्पसाहित्यदक्षः
दृश्ये काव्ये स्फुरति च मतिः पारदर्शी मनुष्यः।
चन्द्रस्थानं व्रजति च यदा पुण्यरेखा प्रसिद्धा
मर्त्यो मानी विपुलसुयशा अन्यदीयाश्रयेण ।।२।।

वही रेखा यदि अपने स्थान से चलकर पितृरेखा से मिल जाय तो मनुष्य शिल्प-साहित्य में दक्ष (कुशल) होता है तथा दृश्यकाव्य (नाटक) में उसकी बुद्धि स्फुरित होती है और उसका पारदर्शी होता है और वही प्रसिद्ध पुण्यरेखा यदि चन्द्रस्थान तक जाय तो मनुष्य दूसरे के द्वारा बड़ा यशस्वी होता है। चित्र ३, रेखा ६।।२।।

सूर्यादिन्दुं प्रचलति यदा धर्मरेखा यदीया
इन्दुस्थानाभिमुखमयते मातृरेखाऽपि शुद्धा।
चञ्चच्चारुस्फुरितगतयो लक्षणज्ञाः लपन्ति
नूनं पद्ये विलसति मतिः काव्यशास्त्रान्तगोऽसौ ।।३।।

जिसकी धर्म (पुण्य) रेखा सूर्य स्थान से चन्द्र स्थान तक जाय और मातृरेखा का भी शुद्धरूप से चन्द्रस्थान तक जाय तो उस पुरुष की बुद्धि निश्चय पद्यरचना में लगती है, और वह काव्य शास्त्र का अन्त करने वाला होता है। चित्र ५ रेखा ४।।३।।

भौमस्थानं व्रजति च यदा भास्कराख्या हि रेखा
कायायासी भवति मनुजः पौरुषादर्थलाभः।

हृद्युक्ता चेद्भवति तपना शोभने पाणिपद्मे
सम्यग्यस्याऽभ्युदयमयते शोभनाच्छिल्पशास्त्रात् ।।४।।

जब भास्कर (पुण्य) रेखा मङ्गल के स्थान तक जाय तो मनुष्य बड़ा परिश्रमी और परिश्रम से द्रव्य प्राप्त करनेवाला होता है। चित्र ४, रेखा ६। जिसके सुन्दर करकमल में पुण्य रेखा हृदय रेखा से युक्त हो वह मनुष्य शिल्प शास्त्र के द्वारा उन्नति करता है।।४।।

उक्तस्थानं व्रजति तपनाऽनामिकाग्रापि पीना
शस्ता माता विलसति यदा लेखको नाटकानाम् ।
पाणौ यस्य प्रबलतपना मध्यमाऽनामिके द्वे
दीर्घे तुल्ये भवति च तदा द्यूतवाणिज्यदक्षः ।।५।।

वही पुण्य रेखा भौमस्थान तक जाय, अनामिका का अग्र भाग मोटा हो और मातृरेखा प्रशस्त हो तो मनुष्य नाटक-लेखक होता है। जिसके हाथ में पुण्यरेखा प्रबल हो, मध्यमा और अनामिका दोनों बराबर बड़ी हों तो पुरुष जूआ और व्यापार में दक्ष अर्थात् चतुर होता है। चित्र ६, रेखा ५।।५।।

सुस्पष्टा चेद्भवति यदि सा ज्ञाङ्गिरः स्थानमुच्चैः
मानप्रज्ञानियतिषु जनो वर्द्धते शास्त्रमग्नः ।
कृत्स्नाङ्गुल्यः यदि च कुटिलाः पाणिमध्यो गभीरः
पुण्या रेखा भवति सबला नाऽखिलोद्योगहीनः ।।६।।

जिसके हाथ में पुण्य रेखा स्पष्ट हो, बुध और गुरु का स्थान ऊँचा हो तो उस पुरुष के मान, बुद्धि और भाग्य की वृद्धि होती है और वह निरन्तर शास्त्रपरिशीलन में निमग्न रहता है। चित्र ७, रेखा ४। यदि सम्पूर्ण अँगुलियाँ टेढ़ी हों, हाथ का मध्य भाग गम्भीर हो तो पुण्यरेखा बलवती होने पर भी मनुष्य सम्पूर्ण उद्योग से रहित होता है।।६।।

उक्ता रेखा यदि बलवती खेटदेशाश्च निम्नाः
सम्पत्प्राप्तिः क्वचिदपि भवेदन्यव्यक्तं सकाशात् ।
वह्नी रेखा विलसति यदाऽत्रैव पुण्यप्रदेशे
शिल्पाधिक्यादपि च विफला द्रव्यप्राप्तेर्हि चेष्टा ।।७।।

यही रेखा यदि बलवती हो, ग्रहों के स्थान भी नीच (गम्भीर) हों तो किसी दूसरे व्यक्ति से सम्पत्ति प्राप्त होती है। चित्र ८ रेखा ४। इसी पुण्यरेखा के पास यदि बहुत-सी रेखायें हों तो शिल्पविद्या की अधिकता रहने पर भी द्रव्य प्राप्त करने की चेष्टा व्यर्थ होती है। चित्र १०, रेखा ७।।७।।

पुण्या रेखोपरि भवेत्तारकाचिह्नमेकं
हस्ते यस्य प्रकृतिसुभगा बन्धुतश्चार्थलाभः ।
सूर्यस्थाने स्पृशति च यदा घातचिन्हं हि पुण्याम्
धर्मे निष्ठा प्रभवति तदा सर्वदा जातकानाम् ।।८।।

जिसके हाथ में पुण्य रेखा के ऊपर एक तारका (★) चिह्न हो तो वह पुरुष अपने बन्धु के द्वारा अर्थलाभ करे। चित्र ९,रेखा ७। और रविस्थान में यदि घात (X) चिह्न पुण्यरेखा का स्पर्श करे तो मनुष्य निरन्तर धर्म में श्रद्धा रखता है। चित्र ११, रेखा ७।।८।।

यत्र स्वान्तां स्पृशति तपना श्यामविन्दुश्च तत्र
नेत्रान्धो वा भवति मनुजः नेत्ररोगेण दुःखी ।
सूर्या रेखा प्रभवति यदा द्वित्रिशाखाविशिष्टा
कृत्ये स्तोकेऽनवरतकृतेसोऽन्तनिष्पत्तिशून्यः ।।९।।

पुण्य रेखा यदि स्वान्त (हृदय) रेखा का स्पर्श करे और उसी स्थान में काला चिह्न हो तो वह मनुष्य नेत्र रोग से दुःखी या

अन्धा हो। यदि यही रेखा दो-तीन शाखाओं से युक्त हो तो मनुष्य अनेक कार्य करे किन्तु परिणाम में कार्य की सिद्धि न हो।।६।।

आयु-(स्वान्तहृदय)-रेखाफलम्

यदा सूक्ष्मगा निर्मला स्वान्तरेखा
तदा शान्तचित्तः कृपावान्नरः स्यात्।
शनिस्थानतः प्रस्थिता स्वान्तरेखा
तदाऽऽनन्दभागिन्द्रियाणां नरः स्यात्।।१।।

जिसके हाथ में आयुरेखा सूक्ष्म और निर्मल हो तो मनुष्य शान्तचित्त और दयालु होता है। चित्र २, रेखा ७। और जब वही रेखा शनिस्थान से चली हो तो मनुष्य इन्द्रियों के आनन्द का अनुभव करनेवाला होता है।।१।।

गुरुस्थानतः सौम्यगा स्याद्यदा सा
मनःकष्टदा सोऽपि सन्दिग्धचित्तः।
परस्त्रीरतः शृङ्खलास्वान्तरेखा
सनिम्नं गुरुस्थानकं हृद्व्यथा स्यात्।।२।।

जब वही स्वान्तरेखा गुरु स्थान से बुध स्थान तक जाय तो मन को कष्ट देने वाली होती है, और उस पुरुष का चित्त सन्देहयुक्त होता है। चित्र ३, रेखा ५। और जब यही शृंखला के समान हो तो मनुष्य परस्त्रीगामी होता है। गुरुस्थान निम्न हो तो हृदय में व्यथा होती है।।२।।

यदा पाण्डरा रक्तवर्णाऽथवा सा
मनोमानवीयं सुवज्रानुकारी।
हृदाख्याहि म्लाना समा शृङ्खला चेत्
तदा वञ्चनावृत्तिलग्नो नरः स्यात्।।३।।

जब वही रेखा शुक्ल और रक्तवर्ण हो तो मनुष्य का हृदय वज्र के समान होता है। हृदय रेखा मलिन और शृंङ्खला (सिकड़ी) के समान हो तो मनुष्य धूर्त (वंचक) होता है। चित्र ५, रेखा ५।।३।।

हरिद्रेव गौरा हृदाख्या यदा चेत्
भवेत् कालखण्डात्प्रपीडा तदानीम्।
यदा कर्मरेखायुता स्वान्तरेखा
भवेदर्थलुब्धश्च हिंस्रः प्रतारी।।४।।

हृदय रेखा हल्दी के समान गौर वर्ण हो तो मनुष्य यकृत् रोग से पीड़ित होता है। जब स्वान्त रेखा मातृरेखा से युक्त हो तो मनुष्य धन का लोभी, हिंसक और ठग होता है। चित्र ४, रेखा ५।।४।।

शनिस्थानरूढा हि शाखाविहीना
बलान्मृत्युदाल्पायुषो दायिका सा।
गुरुस्थानजाताऽतिसूक्ष्मा यदा हृत्
तदा निष्ठुरः प्राणघाती मनुष्यः।।५।।

यही रेखा शनिस्थान से उठी हो और शाखाओं से रहित हो तो मनुष्य अल्पायु होते हैं और उनकी हठात् मृत्यु होती है। चित्र ६, रेखा११ और यही जब गुरुस्थान से उठे और अत्यन्त सूक्ष्म हो तो मनुष्य निष्ठुर हृदयवाला और हिंसक होता है।।५।।

अनामाङ्गुलीमूलजाताऽतिसूक्ष्मा
सदा कष्टदाऽऽयासतो द्रव्यलाभः।
यदा हृन्सुदीर्घा विधुस्थानमुच्चै-
र्युता शुक्रदा पत्नितः संशयः स्यात्।।६।।

हृदय रेखा अनामिका अँगुली से उठे और अत्यन्त सूक्ष्म हो तो मनुष्यों को कष्ट हो और बड़े परिश्रम से द्रव्य मिले। चित्र

७, रेखा ६। जब यही रेखा बड़ी हो और चन्द्रमा का स्थान ऊँचा हो और शुक्र रेखा भी हो तो, अपनी स्त्री से सन्देह होता है।। ६।।

यदा हृद्विहीनः करः स्यान्नरस्य
तदा छद्मयुक्तः निसर्गात्कुवृत्तः।
यदा स्वान्तरेखा नहि स्याद्विशुद्धा
तदायुः कृशं हृद्व्यथातोऽस्य मृत्युः ।।७।।

मनुष्यों का हाथ जब हृदय रेखा से रहित हो तो वह कपटी और स्वाभाविक दुर्वृत होता है। चित्र ८, रेखा ५ और जब स्वान्त रेखा शुद्ध न हो तो मनुष्य अल्पायु होते हैं और हृदय की पीड़ा से उनकी मृत्यु होती है। चित्र १०, रेखा ६।।७।।

प्रभग्ना प्रतिस्थानतो हृद्यदा स्यात्
वधूद्वेषकश्चञ्चलो हृद्व्यथावान्।
शनेर्गीष्पतेर्मध्यगा चेद् हृदाख्या
तदाऽऽजन्मसौभाग्यशाली मनुष्यः ।।८।।

जब हृदय रेखा प्रत्येक स्थान से कटी हो तो मनुष्य स्त्रीद्वेषी, चञ्चल और हृदयगामी होता है चित्र १०, रेखा ६। जब यही गुरु और शनि स्थान के मध्य भाग तक गई हो तो मनुष्य जन्म भर सौभाग्यशाली होते हैं। चित्र ६, रेखा ६।।८।।

हृदाख्याद्वि शाखार्किजीवाश्रया चेत्
तदा धर्ममत्तो हि मोघोद्यमी स्यात्।
नहि स्वान्तशाखा गुरुस्थानगा चेत्
तदा द्रव्यहीनो बुधैः कीर्तितोना ।।६।।

हृदय रेखा दो शाखा युक्त होकर शनि और गुरु स्थान पर्यन्त जाय तो मनुष्य धर्मोन्मादी होता है और उसका श्रम विफल होता

है चित्र ११, रेखा ६। यदि हृदय रेखा गुरु स्थान पर्यन्त न जाय तो मनुष्य द्रव्य से रहित होता है। चित्र १२, रेखा ४॥६॥

बुधस्थानगा नास्ति शाखा यदाऽस्याः
तदाऽपत्यहीनो नरो निश्चयेन।
मनः सूर्यगा दुर्बला भाग्यरेखा
तदा दुर्भगो नापि चोद्योगहीनः ॥१०॥

जब इसकी शाखा बुध स्थान तक न गई हो तो मनुष्य निश्चय अपत्यरहित होता है। चित्र १३, रेखा ४। मन रेखा, सूर्य स्थान तक जाय और भाग्य रेखा कृश हो तो मनुष्य दुर्भग और उद्योगरहित होता है। चित्र १४, रेखा ४॥१०॥

हृदयाख्योर्ध्वतः कर्तिताङ्का यदा चेत्।
जनस्यार्त्तिदः स्याद् व्रणः पृष्ठदेशे ॥१० १/२ ॥

हृदयरेखा जब ऊपर से कटी हो तो मनुष्य के पृष्ठ भाग में कष्टप्रद व्रण (फोड़ा) होता है, चित्र १५, रेखा ४॥१० १/२॥

प्रकृत्योत्तमो वासदः श्वेतगर्त्तः
यदा रक्तबिन्दुश्च शिल्पापहारी।
समुच्चाभिलाषान्मनःकष्टकारी
रविस्थानतोऽधो यथोक्तं फलं स्यात् ॥११॥

मनुष्य के हाथ में यदि श्वेत वर्ण गर्त्त (गड़हा) हो तो उसे स्वाभाविक उत्तमोत्तम वस्त्र प्राप्त होता है, और रक्तबिन्दु हो तो शिल्प कार्य का विनाश करने वाला होतां है। सूर्य स्थान से नीचे यही बिन्दु हो तो ऊँची अभिलाषा के कारण मन को कष्ट होता है॥११॥

बुधस्थाननिम्नो यदाप्येष विन्दुः
नरो दर्शनाभिज्ञनीतिप्रवक्ता।

चिकित्सां समालम्ब्य दुःखानुगामी
बुधैः कीर्तितं तत्फलं लक्षणज्ञैः ॥१२॥

जब यह बिन्दु बुध स्थान से नीचे हो तो मनुष्य दर्शन शास्त्र और नीति का ज्ञाता होता है तथा चिकित्सा के द्वारा दुःख-भागी होता है॥१२॥

यदा स्वान्तरेखा शनिस्थानमेत्य
शिरो रेखया संयुतः पाणियुग्मे।
तदा लक्षणज्ञाः विचार्य्येदमाहुः
बलात्तस्य पुंसश्च भाविप्रणाशः ॥१३॥

जब दोनों हाथ की हृदय रेखा शनिस्थान में जाकर शिरोरेखा से युक्त हो तो उस पुरुष का हठात् (सहसा) विनाश होता है। ऐसी लक्षणशास्त्र-वेत्ताओं की सम्मति है। चित्र १७, रेखा ८॥१३॥

हृदः काऽपि शाखा शिरोरेखया चेत्
सुलग्नाऽन्यया रेखया खण्डिता स्यात्।
तदा चिन्तनीया विवाहाख्य-कार्यात्
जनः कष्टभागी भवेत्सर्वदा सः ॥१४॥

हृदय रेखा की कोई शाखा शिरो रेखा से युक्त हो और उसे दूसरी रेखा खण्डित करे तो मनुष्य चिन्तनीय विवाहरूप कार्य से सदा कष्ट भोगता है॥१४॥

यदा काऽपि रेखा हृदङ्काद्धि वक्रा
शशिस्थानगा प्राणघाती नरः स्यात्।
अनामान्तिके वेष्टिता चेद्धृदाख्या
तदा गुप्तविद्याधिकारी प्रगल्भः ॥१५॥

यदि कोई रेखा हृदय रेखा से टेढ़ी होकर चन्द्र स्थान तक जाय तो मनुष्य हिंसक होता है, चित्र १७ रेखा ६। अनामिका के समीप

यदि हृदय रेखा वेष्टित हो तो वह पुरुष गुप्त विद्या का ज्ञाता और व्युत्पन्न होता है।।१५।।

मातृरेखाप्रकारान्तरेण शिरोरेखाफलम्

शाखा युक्ता यदा न प्रभवति जननी भग्नरूपा च मर्त्यः
सन्मेधावान् विचारे स भवति निपुणो मानसी शक्तिमाप्तः।
यद्येषोक्ताऽन्यथा स्यात्फलमपि सकलं वैपरीत्यं प्रयाति
स्वल्पा सा मन्दगा चेत्प्रविशति मनुजोऽकालमृत्योर्मुखे सः।१।

यदि मातृरेखा भग्न और शाखाओं से युक्त न हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, विचार में निपुण, प्रभावशाली और मानसिक बल से युक्त होता है। चित्र १४, रेखा ३। यदि इसके विपरीत भग्न शाखा विशिष्ट और मलिन हो तो फल भी विपरीत होता है, चित्र २ रेखा ६। यदि यही रेखा छोटी हो, शनिस्थान तक जाय तो मनुष्य की मृत्यु अकाल में ही होती है, चित्र १५, रेखा ३।।१।।

माता स्याच्छृङ्खलाङ्काप्रणरहितनरश्चञ्चलोऽसौ प्रकृत्या
विश्वासेनापि शून्यो भवति स हि यदा दीर्घसूक्ष्मा च धूर्तः।
कृष्णा विस्तारयुक्तोदरगद-सहिताऽऽलस्य-तृष्णाऽभियुक्तः
सा स्यात्पित्रा न युक्ता स धरति पुरुषोऽनेकरूपं सदैव।२।

यदि मातृरेखा शृंखलाकार हो तो मनुष्य प्रतिज्ञाशून्य और चञ्चल प्रकृति का होता है, चित्र ५, रेखा ३। यदि यही लम्बी और सूक्ष्म हो तो विश्वासरहित और धूर्त होता है, चित्र १०, रेखा ४। यदि कृष्णवर्ण और चौड़ी हो तो मनुष्य लोभी, उदर रोग से युक्त और आलसी होता है। चित्र ११, रेखा ४। मातृरेखा यदि पितृ रेखा से मिली न हो तो मनुष्य अनेक रूप को धारण करता है। चित्र १२, रेखा ३।।२।।

वक्ता स्वात्माभिमानी स्थिरमतिरहितः कार्यशक्तः पृथग्धीः
मातृरेखे यदा द्वे करकमलगते स्यात्तु मर्त्यो दयालुः।
जीवार्क-स्थानमुच्चैर्मृदुलतर-करावुक्त-दोषान्तकौ तौ
क्रूरो वा सद्विचारं वितरति सततं लक्षणज्ञाः वदन्ति।३।

और वक्ता, आत्माभिमानी, क्षणिक बुद्धिवाला (स्थिर विचार से रहित), कार्य में आसक्त, पृथक् विचारवाला होता है। चित्र १२, रेखा ३। जिसके कर-कमल में मातृ रेखा दो हो तो वह पुरुष कभी दयालु, कभी क्रूर तथा अच्छे विचार को देनेवाला होता है। चित्र ४, रेखा ३। जिसके हाथ अत्यन्त कोमल हों, गुरु और सूर्य का स्थान ऊँचा हो तो सम्पूर्ण मातृ रेखोक्तदोष निवृत्त हो जाते हैं। ऐसा लक्षण शास्त्र जानने वाले कहते हैं।।३।।

पित्रा युक्ता गभीरा शुचितमजननी स्याद्धि शाखाविशिष्टा
साहित्ये गूढवेत्ता त्वभिनवरचना सुष्ठुलेखप्रवीणः।
छिन्ना क्षुद्राभिरेखा प्रचलति जननी पाणि-मूल-प्रदेशे
आत्मानं घातयेत्सो निवसति विमले पाणियुग्मे हि यस्य।४।

मातृरेखा पितृरेखा से युक्त, शुद्ध, गम्भीर, स्वच्छ औरशाखाओं से युक्त हो तो मनुष्य साहित्य शास्त्र के गूढ़ विषय का ज्ञाता, नवीन रचना (आविष्कार कल्पना), सुन्दर लेख में निपुण होता है। चित्र१३, रेखा ३। यदि यही छोटी-छोटी रेखाओं से कटी हो और मणिबन्ध तक चली जावे तो मनुष्य आत्मघात करता है, चित्र ६, रेखा ३।।४।।

भूत्वा खण्डद्वयं चेत्प्रचलति शशिनं ह्येकशाखा च तस्याः
वाञ्छासिद्धिर्नरस्य प्रभवति सततं मोदते सौख्ययुक्तः।
तच्छेषांशो हि भुग्नः प्रचलति जलधिं कल्पना-शक्ति-दक्षः
प्रच्छन्नां वेत्ति विद्यां प्रसरति कविताशक्तिरत्यन्तमस्य।।५।।

यही रेखा दो खण्ड हो और इसकी एक शाखा चन्द्र स्थान तक जावे तो मनुष्य के अभीष्ट की सिद्धि होती है और वह सुख युक्त हो, सदा प्रसन्न रहता है। और इसी रेखा का शेष भाग टेढ़ा होकर सिन्धु स्थान तक जाय तो मनुष्य कल्पनाशक्ति में दक्ष, गुप्त विद्याओं का जानने वाला होता है और इसकी कवित्व शक्ति बढ़ती है, चित्र ७, रेखा ३।।५।।

आरोग्य-(स्वास्थ्य)-रेखाफलम्

आरोग्याङ्का भवति यदि चेदल्परक्ता तदानीम्
रोगैः शून्यो मनुजनिवहो मोदते शर्म्मयुक्तः।
रेखैषैव श्रयति जनकं चिन्तितो दुःखदुःखी
हित्वा पित्राङ्कमिह विशदो दीर्घजीवो बलाढ्यः ।।१।।

आरोग्य रेखा यदि किञ्चित् रक्तवर्ण हो तो मनुष्य प्रमोद प्रिय और नीरोग रहकर सुखादि का अनुभव करता है, चित्र १०, रेखा ५। यही यदि पितृरेखा से मिलकर स्वच्छ हो तो मनुष्य दीर्घायु और बलवान् होता है। चित्र ४, रेखा ४।।१।।

एषा रेखा चलति च यदा मध्यभागेन नूनम्
मेधावी स्याच्चपलप्रकृतिर्याति वाचालताञ्च।
कृष्णेयं चेद्भवति मनुजो रोगवान् कृच्छ्रभोगी
स्वच्छस्निग्धा विविधवणिजां कृत्यकृत्पाटला चेत् ।।२।।

यही आयु-रेखा आदि से चलकर यदि बीच ही से चले तो वह मनुष्य बुद्धिमान्, चपल और वाचाल होता है। चित्र ६, रेखा ४। यही यदि काली हो तो मनुष्य रोगी रहता है और अन्त में अधिक कष्ट पाता है। यही यदि स्वच्छ, स्निग्ध और रक्त हो तो मनुष्य अनेक प्रकार के व्यापार का करनेवाला होता है।।२।।

एषा मध्येऽरुणकृशनिभा रोगपीडागतोऽसौ
युक्ता लब्ध्वा व्रजति मनुजो मान्द्यमग्नेश्च सद्यः।
मात्रा लग्ना त्रिभुजबलिता कीर्तिमान् गुप्तविद्यः
दैवीं प्रज्ञां व्रजति मनुजः सत्प्रभावाश्रितोऽसौ ॥३॥

यही रेखा यदि बीच में लाल और सूक्ष्म हो तो मनुष्य ज्वरादि रोग के द्वारा कष्ट पाता है। यदि छोटी रेखाओं से युक्त हो तो मनुष्य की अग्नि मन्द रहती है, चित्र १२, रेखा ८। यही यदि मातृरेखा से मिलकर त्रिकोणाकार हो जाय तो मनुष्य यशस्वी, गुप्त विद्याओं का जाननेवाला, दैवी बुद्धिवाला और प्रभावशाली होता है।(चित्र ८,रेखा ३)॥३॥

आप्नोत्येष श्रितरिपुजयो मानमानं समन्तात्
भाग्या लग्ना त्रिभुजवलिता भाविवक्तृत्वदक्षः।
मर्त्यो लोकोत्तर-कृतिकरस्तत्त्वविद्यावतंसः
स्थानञ्चान्द्रं व्रजति हृदयाकुल्यमेहाख्यरोगी ॥४॥

और शत्रुओं का पराजय कर सर्वत्र से मान प्राप्त करता है। यही यदि भाग्य रेखा और शिरोरेखा से मिलकर त्रिकोणाकार हो जाय तो मनुष्य स्वाभाविक भविष्यद् वक्ता और अलौकिक कार्यों का करनेवाला तत्त्वज्ञानी होता है। चित्र ६, रेखा ५। यदि यही रेखा चन्द्रस्थान तक चली जाय तो वह पुरुष अव्यवस्थित चित्त का और प्रमेह रोगवाला होता है।(चित्र११, रेखा ५)॥४॥

भाग्यरेखाफलम्

व्रजति यदि हि भाग्यो पैतृकस्थानतोऽपि
सकलशुभगुणैः स्वैरुन्नतीः संलभन्ते।
मिलति जनकचिह्नैर्वर्षमाने हि यस्मिन्
जमयति सुखंपुञ्जं बान्धवानां च पित्रा ॥१॥

भाग्य रेखा पितृ रेखा से उठकर यदि शनिस्थान तक जाय तो मनुष्य अपने सम्पूर्ण अच्छे गुणों से उन्नति प्राप्त करता है। यही रेखा जिस वर्ष-प्रमाण में पितृरेखा से मिले उस वर्ष में बान्धव और माता-पिता को सुख प्राप्त होता है॥१॥

विलसति मणिबन्धान्मन्दगा यत्र भाग्या
भवति स हि मनुष्योऽत्यन्त-सौभाग्यशाली।
प्रचलति यदि चन्द्राद्दैवरेखा प्रसिद्धा
उदयमधिलभन्ते मानवादन्यदीयात्॥२॥

जिसके हाथ में मणिबन्ध से लेकर शनिस्थान तक भाग्य रेखा शोभती हो तो वह मनुष्य अत्यन्त सौभाग्यशाली होता है। चित्र २, रेखा ४ या चित्र ८, रेखा १। यदि यही रेखा चन्द्रस्थान से होकर चले तो मनुष्य दूसरे के द्वारा उन्नति प्राप्त करते हैं, चित्र ३, रेखा २॥२॥

यदि करतलमध्यादुत्थिता सौम्यगा स्यात्
उपदिशति मनुष्यः शास्त्रविज्ञानवार्ताम्।
प्रचलति यदि भाग्या भास्करस्थानमेवम्
उदयति स हि शिल्पे श्रव्यदृश्याख्यकाव्ये॥३॥

यही रेखा हाथ के मध्य भाग से उठकर बुध स्थान तक जाय तो पुरुष शास्त्र और विज्ञान विषयक उपदेश करनेवाला होता है, चित्र १०, रेखा २। एवं यदि यही सूर्यस्थान तक चली जाय तो वह शिल्प (कारीगरी), काव्य और नाटक से उन्नति करता है। चित्र ६, रेखा २॥३॥

सकलगुणविशिष्टाऽनामिका चोत्तमा स्यात्
स हि समधिकदक्षः शिल्पशास्त्रे मनुष्यः।
यदि भवति चतुष्काऽनामिकाग्रा नराणाम्
जनयति हि तदा सा पाटवं काव्यशास्त्रे॥४॥

भाग्यरेखा के सहित अनामिका उत्तम (सरल, सूक्ष्म, सुन्दर) हो तो मनुष्य शिल्प शास्त्र में बड़ा चतुर होता है। चित्र११, रेखा २। यदि अनामिका का अग्रभाग चौकोर हो तो मनुष्य काव्य-शास्त्र में निपुण होता है।।४।।

निपुणतरमतिः स्यात्पीवराऽनामिकाग्रा
सुललित-रचनायां दृश्यकाव्यस्य मर्त्यः।
अमरगुरुनिवासस्थानगा दैवरेखा
अधिकतरतृडिच्छोर्वर्द्धते क्षान्तिभावः ।।५।।

यदि अनामिका का अग्रभाग स्थूल हो तो मनुष्य नाटक की सुललित रचना में निपुण होता है। भाग्यरेखा गुरुस्थान तक गई हो तो मनुष्य की अभिलाषा बड़ी ऊँची और उसकी क्षमता की वृद्धि होती है (चित्र नं०१२, रे० नं०२)।।५।।

प्रचलति करमध्यान्मध्यमायास्त्रिपर्वः
स भवति मनुजानां दुर्भगोद्योगहीनः।
सरलनियतिरेखा स्याद्धि शाखाविशिष्टा
अपि भवति दरिद्रः सुष्ठुसम्पन्निधानः ।।६।।

भाग्यरेखा करमध्य से उठकर मध्यमा के तीन पर्व तक जाय तो वह मनुष्यों में दुर्भग और उद्योगहीन होता है। चि०१३, रे०२। भाग्यरेखा सीधी और शाखाओं से युक्त हो तो दरिद्र मनुष्य भी सम्पत्तिशाली होता है (चि०१४, रे०२)।।६।।

कुटिलप्रथमभागोऽभुग्नशेषो नियत्याः
प्रथमधनविहीनो वित्तपूर्णश्च पश्चात्।
अरुण-सरल-भाग्याक्रामति स्वान्तरेखाम्
उपवन - कृषिविज्ञः कारुवैज्ञानिकश्च ।।७।।

भाग्यरेखा का प्रथम भाग टेढ़ा और शेषांश अभुग्न अर्थात् सीधा हो तो मनुष्य पहिले दरिद्र और पीछे धनी हो। चि.१५, रे.२। यही रेखा सीधी और रक्तवर्ण होकर हृदयरेखा का अतिक्रमण करे तो मनुष्य उपवन और कृषिकार्य में निपुण, शिल्पी तथा वैज्ञानिक होता है।७।

भवति नियति रेखा भग्नवक्रायदब्दे
प्रभवति पुरुषाणां तत्र वर्षे विपत्तिः।
भवति यदि च भग्ना केवलं यस्य हस्ते
अनुभवति तदाऽसौ लौकिकं कष्टजालम् ॥८॥

भाग्यरेखा जिस वर्ष में भग्न (कटी) और टेढ़ी हो, तो पुरुषों को उस वर्ष में विपत्ति प्राप्त होती है। चित्र १८, रेखा ५। केवल भाग्यरेखा जिसके हाथ में भग्न हो तो मनुष्य लौकिक कष्टों का अनुभव करता है, (सांसारिक कष्ट भोगता है) (चित्र १८, रेखा ६)॥८॥

यदि सरल-विशुद्धा शोभते भाग्यरेखा
निखिलमनुजकष्टं याति सद्यो विनाशम्।
भवति लघुतराभिः सा हि भग्ना शनौ चेत्
धनजनितविपत्तिर्जीवनस्याऽन्तभागे ॥९॥

भाग्यरेखा यदि सरल और शुद्ध हो तो मनुष्य का सम्पूर्ण कष्ट शीघ्र नष्ट हो जाता है। चित्र ८, रेखा १। यदि भाग्यरेखा शनिस्थान में छोटी-छोटी रेखाओं से विभक्त हो तो जीवन के अन्य भाग में धन के द्वारा विपत्ति होती है (चित्र १७, रेखा १)॥९॥

नियतिजनकभेत्त्री भार्गवोत्त्या यदाल्पा
स हि भवति वियोगी माननीतोऽथ दुःखी।
नियति-मुख-प्रदेशे स्याद्यदा तारकांको
भवति जनकसत्त्वे दुर्भगोऽसौ मनुष्यः ॥१०॥

यदि कोई छोटी रेखा शुक्र स्थान से उठकर भाग्यरेखा और पितृरेखा का भेदन करे तो मनुष्य स्त्री-वियोगी या स्त्री के द्वारा कष्ट पाता है चित्र १७ रेखा ३। भाग्यरेखा के आदि में यदि तारका चिह्न हो तो माता-पिता के रहते भी मनुष्य दुःखी रहता है (चित्र १७, रेखा ४)।।१०।।

भवति यदि कविस्था तारका तेन युक्ता
लघुवयसि तदा स्यात्तस्य पित्रोर्विनाशः।
लसति यदि यवाङ्कं दैवमात्रोः प्रदेशे
नियतिरपि च भुग्नोद्वाहहीनो मनुष्यः।।११।।

उक्त रेखा के साथ यदि शुक्र स्थान में भी तारका चिह्न हो तो थोड़ी अवस्था में ही मनुष्य के माता-पिता का विनाश होता है चित्र १७, रे०५। भाग्य और मातृरेखा में यदि यव का चिह्न हो, भाग्य रेखा भी टेढ़ी हो तो मनुष्य विवाह से रहित अर्थात् उसका विवाह नहीं होता है। चित्र१५, रे०५।।११।।

धरति यदि च भाग्या मध्यदेशे यवाङ्कम्
प्रलुभति पुरुषेण स्त्री स्त्रिया मानवोऽपि।
श्रयति यदि च शीर्षा निम्नभागे यवोऽङ्कम्
लुभति असमवर्णेनाङ्गना ना स्त्रिया च।।१२।।

यदि भाग्य रेखा के मध्य भाग में यव का चिह्न हो तो पुरुष के द्वारा स्त्री और स्त्री के द्वारा पुरुष लुभाये जाते हैं। चित्र १५, रेखा ५। यदि मातृ रेखा के निम्नभाग में यव चिह्न हो तो असवर्ण पुरुष से स्त्री और असवर्णा स्त्री से पुरुष मोहित होते हैं। चित्र १७,रेखा ६।।१२।।

भाग्यरेखाविरहितः पुरुषो दुर्भगो भवेत्।
उद्योगरहितश्चेति कथयन्ति मनीषिणः।।१३।।

भाग्यरेखा से रहित मनुष्य दुर्भागी और उद्योगरहित होता है— ऐसा विद्वानों का कथन है। चित्र १८, रेखा ७॥१३॥

पितृ-मतान्तरेणाऽऽयुरेखाफलम्

कर्मरेखेति केचित्—

विलसतः पितरौ पृथगौ यदा
भवति संकरवर्णनरस्तदा।
कुटिलदीर्घलघू यदि वा छिते
जनकयोः सुखमेति न मानवः॥१॥

मातृ-पितृरेखा परस्पर मिली न हों तो मनुष्य वर्णसङ्कर होता है। ये दोनों रेखाएँ टेढ़ी-टेढ़ी, लम्बी-छोटी वा छिन्न-भिन्न हो तो मनुष्य को माता-पिता का सुख नहीं होता है। चित्र २ रेखा ५॥१॥

सुरुचिरे तु तयोः सुखमेधते
शरदि यत्र विलूनिमति च ते।
भवति तत्र वियोगमथोभयो-
रनुभवन्तु बुधाः स्थिरकीर्तये॥२॥

यदि ये दोनों रेखाएँ सुन्दर स्पष्ट हों तो मनुष्य को माता पिता का सुख होता है और ये दोनों (मातृ-पितृ) रेखा जिस वर्ष प्रमाण में कटी हों उस वर्ष में माता-पिता का वियोग होता है। स्थिर कीर्ति चाहने वाले विद्वानों को इसका अनुभव करना चाहिये चित्र ३ रेखा ३।२।

मतान्तरेणानयाऽऽयुषो ज्ञानम्—

दीर्घा स्पष्टा नातिसूक्ष्मा न वक्रा
भग्ना चासावन्यथा नापि छिन्ना।
दीर्घायुष्मान् सच्चरित्रस्वभावः
मर्त्यो नित्यं मोदते सौख्ययुक्तः॥३॥

आयु रेखा लम्बी और स्पष्ट हो, अतिसूक्ष्म, अतिवक्र, भग्न और अन्य रेखा से कटी न हो तो मनुष्य दीर्घजीवी, सत्स्वभाव-वाला और सच्चरित्र होता है। सदा सुखी और प्रसन्न रहता है। चित्र५ रेखा २।।३।।

म्लाना छिन्ना भिन्नरूपा यदा सा
मन्दप्रज्ञो दुर्बलोऽसौ विवादी।
गर्वैयुक्तो दुर्भगो दुःखजीवी
यस्मिन्माने जायते सा च भग्ना।।४।।

यदि यह रेखा मलिन और छिन्न-भिन्न हो तो मनुष्य मन्द बुद्धि, दुर्बल, विवादी, अहङ्कारी, भाग्यहीन होकर दुःख से जीवन व्यतीत करता है और यह रेखा जिस वर्ष प्रमाण में भग्न हो-।।४।।

तस्मिन्वर्षे लौकिकोऽत्यन्तकष्टम्
मृत्युर्यद्वा जायते तस्य पुंसः।
छिन्ना क्वाऽपि क्वाऽपि सूक्ष्माऽथ मर्त्यः
चित्तं तस्य सद्व्यवस्थाविशून्यः।।५।।

उस वर्ष में उस पुरुष को सांसारिक महान् कष्ट या मृत्यु होती है। यही रेखा कहीं छिन्न और कहीं सूक्ष्म हो तो मनुष्य अव्यवस्थित चित्त का (चञ्चल) होता है। चित्र ४ रेखा २।।५।।

लघ्वी भग्ना चाल्पजीवी मनुष्यः
चेदेकस्मिन्पाणिपद्मे हि भग्ना।
सक्तोऽन्यस्मिन् रोमयुक्तो भवेत्सः
शुद्धा जीवं प्रव्रजेत् पाणिमूलात्।।६।।

यही रेखा यदि लघु और भग्न हो तो मनुष्य की आयु अल्प होती है। चित्र६ रेखा२। यदि एक हाथ में भग्न और दूसरे हाथ

में मिली हो तो मनुष्य रोगी होता है। यदि मणिबन्ध से उठकर बृहस्पति स्थान तक शुद्ध रूप से चली जाय—॥६॥

उच्चेहावान् दीर्घजीवी मनुष्यः
लब्ध्वाऽनेकां सत्प्रतिष्ठां हि धन्यः।
उत्थायाऽस्मात् काऽपि रेखा हि शुद्धा
शुक्रस्थानं प्रव्रजेत् चेत्तदाऽसौ ॥७॥

तो मनुष्य उच्चाभिलाषी, दीर्घजीवी होता है और अनेक सत्प्रतिष्ठा प्राप्तकर धन्य (कृतकार्य) होता है। चित्र ७ रेखा २। इसी स्थान से कोई रेखा उठकर शुद्ध रूप से शुक्र स्थान तक जाय तो वह—॥७॥

भूत्वा कस्या योषितोऽन्तेऽधिकारी
सम्पद्युक्तो मोदतेऽसौ सुखेन।
अस्मात् स्थानात् कापि रेखोत्त्थिता चेत्
भूत्वाऽधस्तात् प्रव्रजेच्चेन्दुदेशम् ॥८॥

किसी स्त्री का उत्तराधिकारी होकर सम्पत्तिशाली होता है। चित्र ८ रेखा २। यहीं से कोई रेखा उठकर अधोमुखी हों चन्द्र स्थान तक जाय—॥८॥

द्रव्यादीनामायुषः शेषभागे
नाशो ज्ञेयः सर्वदा जातकस्य।
सैवाऽरोग्यां स्पर्शयन्ती सुनीचैः
वक्त्रं कृत्वा याति चन्द्रोपदेशम् ॥९॥

तो मनुष्य के शेष जीवन में उसके द्रव्य, स्त्री-पुत्रादि का विनाश जानना। चित्र १०, रेखा ३। पितृरेखा आरोग्य रेखा को स्पर्श करती हुई अधोमुखी होकर चन्द्रस्थान तक जाय—॥९॥

जाल्मो वंशद्वेषता वाऽथ द्यूतैः
सर्वं द्रव्यं नाशयेदल्पकाले।
शुक्रस्थानात् काऽपि रेखोत्त्थिता चे-
दायुर्मातृस्वान्तरेखाः भिनत्ति ॥१०॥

तो वह मूर्ख जडतावश कलह या द्यूत के द्वारा सम्पूर्ण सम्पत्ति अल्पकाल में ही नाश कर देता है। चित्र ६, रेखा ३। शुक्र स्थान से कोई रेखा उठकर आयु (पितृ), मातृ और स्वान्त रेखाओं का भेदन करे—॥१०॥

तस्मिन्वर्षे विप्रयोगो जनानाम्
पित्रोर्ज्ञेयो निश्चितं * मृत्युजन्यः।
अत्रत्योत्त्था चाऽपरा कापि रेखा
सूर्यस्थानं याति सम्यग्विशुद्धा ॥११॥

तो आत्मीयजन तथा माता-पिता का उसी वर्षप्रमाण में वियोग हो। चित्र ११, रेखा ११। इसी स्थान से कोई रेखा उठ कर शुद्ध रूप से रवि स्थान तक जाय तो—॥११॥

मर्त्यः सम्यङ् मानपूर्वा प्रतिष्ठाम्
लब्ध्वा लोके पूज्यते सत्स्वभावैः।
इत्थं ज्ञात्वा विज्ञवर्यैः समस्तै—
र्वाच्यं सम्यक् तत्फलं लक्षणज्ञैः ॥१२॥

मनुष्य सम्मानपूर्वक प्रतिष्ठा प्राप्त कर सज्जनों से पूजित होता है। इस प्रकार सम्पूर्ण विज्ञ लाक्षणिकों को उचित है कि अच्छी तरह रेखा का विचार कर फल कहें। चित्र१८ रेखा ६॥१२॥

---

* श्चापि कष्टम्— इत्यपि पाठः। ऐसा भी पाठ है, अर्थ है— वियोग और अत्यन्त कष्ट प्राप्त होता है।

अथ मणिबन्धरेखाफलम्

भवन्ति रेखाः मणिबन्धदेशे
तिस्रस्तदाद्या द्रविणस्य बोध्या।
एवं हि शास्त्रस्य द्वितीयरेखा
भक्तेस्तृतीया प्रवदन्ति विज्ञाः ॥१॥

मणिबन्ध में प्रायः तीन रेखायें होती हैं उसमें प्रथम धन, द्वितीय शास्त्र और तृतीय भक्ति की जानना। ऐसा विद्वान् लोग कहते हैं। चित्र २ रेखा १-२-३॥१॥

एतासु स्वच्छा सरला गभीरा
स्निग्धा न छिन्ना सबला भवेत् सा।
तिस्रोऽधिका दैन्यविसूचिकोक्ता
सर्वा विशुद्धोक्त गुणैर्विशिष्टा ॥२॥

इनमें जो रेखा स्वच्छ, सरल, गम्भीर, स्निग्ध हो और छिन्न न हो तो वह रेखा बलवती होती है और उसका फल भी उत्तम होता है। चित्र २ रेखा १-२-३। यदि तीन से अधिक रेखायें हों तो वे दरिद्रता और दुर्भाग्यसूचक होती हैं। चित्र १६ रेखा १। तीनों रेखायें शुद्ध पूर्वोक्त गुण से युक्त हों तो—॥२॥

विद्वान् धनी चारुशरीरधारी
सौभाग्यशाली च सुखेन जीव्यात्।
स्युः शृङ्खलाङ्का यदि ताः श्रमी सः
द्रव्याप्तिरत्यन्तपरिश्रमात् स्यात् ॥३॥

मनुष्य विद्वान्, धनी, सुन्दर शरीरवाला, सौभाग्यशाली होकर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करे। तीनों यदि शृङ्खलाकार हों तो मनुष्य परिश्रमी हो और उद्योग कर द्रव्य प्राप्त करे, चित्र ८ रेखा ६॥३॥

छिन्ना यदि स्युः स नरो दरिद्रः
भवेन्निरुद्योग्यलसाधिपश्च।
तस्यां त्रिकोणोऽस्ति जनः परस्य
धनं प्रतिष्ठां लभते च मानम्।।४।।

तीनों रेखायें यदि छिन्न-भिन्न हों तो मनुष्य दरिद्र, आलसी और निरुद्योगी होता है। चित्र १० रेखा १। मणिबन्ध रेखा में यदि त्रिकोण हो तो मनुष्य दूसरे का धन, प्रतिष्ठा और सम्मान प्राप्त करे, चित्र ६ रेखा १।।४।।

स्पृष्टोर्ध्वरेखा यदि छिन्न-भिन्ना
पापी दुरात्मा- ऽनृतभाष्यहंयुः।
उत्थाय तस्माद् व्रजतीन्दुदेशम्
द्वीपान्तरं याति पथा जलेन।।५।।

ये छिन्न-भिन्न हों और ऊर्ध्वरेखा इनसे मिली हो तो मनुष्य पापी, दुष्टात्मा, मिथ्याभाषी और अहंकारी हो। चित्र ११ रेखा१। यहीं से कोई रेखा उठकर चन्द्रस्थान तक जाय तो मनुष्य जल मार्ग से दीपान्तर यात्रा करे।(चित्र १२, रेखा १)।।५।।

उत्थाय तस्मात्मणिबन्धदेशा-
द्रेखाऽपरा कृन्तति पितृरेखाम्।
द्वीपान्तरप्रस्थिति - कृत्यकाले
यमालयं गच्छति शर्मयुक्तः।।६।।

मणिबन्ध से कोई रेखा उठकर यदि पितृ रेखा का भेदन करे तो मनुष्य द्वीपान्तर यात्रा में मृत्यु को प्राप्त होवे। चित्र१३,रे.१।६।

उत्थाय तस्माद्धि बुधं प्रयाति
विना प्रयासेन धनं लभेत।

सूर्यालयं गच्छति चेत्परेण
धनानि लब्ध्वा निवसेत् सुखेन ।।७।।

मणिबन्ध से कोई रेखा उठकर यदि बुधस्थान तक जाय तो मनुष्य अनायास धन पावे। चित्र १४, रेखा १ और रवि स्थान तक जाय तो दूसरे की सहायता से धन प्राप्त कर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करता है। चित्र १५ रेखा १।।७।।

इति ग्रन्थान्तरोक्तपुण्यादिरेखाफलं समाप्तम्।

अथाऽन्यान्यरेखाफलम्। तत्रादौ शंखस्य—

खल्वेकशङ्खोऽध्ययनस्वभावः
द्विशङ्खयोगाद्धि भवेद्दरिद्रः।
त्रिशङ्खकान्तार्थक-रोदनञ्च
तुर्यञ्च शङ्खं नृपति - प्रभुत्वम् ।।१।।

जिस मनुष्य के हाथ में एक शङ्ख हो तो वह मनुष्य अध्ययन-शील होता है, दो शङ्ख होने से दरिद्र, तीन होने से स्त्री के लिये रुदन करता है और चार हों तो राजा या राजतुल्य प्रभुता वाला होता है।।१।।

शङ्खशरा यत्र भवन्ति पाणौ समुद्रतुल्यां प्रभुतां वदन्ति।
षट्शङ्खयोगेऽतिविचक्षणः स्याच्छैले दरिद्रोऽष्टसु सौख्यजीवी।२।

यदि पाँच शङ्ख हाथ में हो तो समुद्र पर्यन्त प्रभुता का सूचक है।' छः शङ्ख हों तो बड़ा भारी विद्वान् हो, सात हों तो दरिद्र, आठ हों तो सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करे।। २।।

शङ्खान्तशंखे खलु भामिनीवत्
दिक्शंखयोगे नृपतिर्यथा वा।
योगाश्रितो काननमध्यचारी
पुमान् भवेच्छास्त्रविदो वदन्ति ।।३।।

यदि नौ शङ्ख हों तो मनुष्य स्त्री-प्रकृति का होता है और दस शङ्ख हों तो मनुष्य राजा या कानन-मध्यचारी योगी होता हैं। ऐसा सामुद्रिक शास्त्रवेत्ताओं का कथन है। चित्र ३ रेखा ८ में शङ्ख।।३।।

चक्ररेखाफलम्

पटुत्वमेकचक्रे स्याद् द्विचक्रे चाऽतिसुन्दरः।
त्रिचक्रे तु विलासी स्याद्दरिद्रो वेदचक्रभृत् ।।४।।

हाथ में एक चक्र हो तो चातुर्य युक्त, दो हों तो अति-सुन्दर, तीन चक्र हों तों विलासी और चार चक्र को धारण करने वाला मनुष्य दरिद्र होता है।।४।।

पञ्चचक्रे महाज्ञानी षट्सु पण्डितशौण्डकः।
सप्तसु शैलभोगी स्यादष्टसु स्याद् वराटकः ।।५।।

पाँच चक्रवाला मनुष्य ज्ञानी, छः चक्रवाला पण्डितों में दक्ष(चतुर), सात चक्रवाला पर्वत पर विहार करनेवाला और आठ चक्रवाला दरिद्र होता है।।५।।

नवसु नृपतिश्चैव दशसु राजसेवकः।

अन्यच्च—

सर्वासु चक्रैः परिपूरितासु, महाबलप्राप्तिवरेण्यलक्षणम्।६।

नौ चक्र से राजा और दश चक्र होने से मनुष्य राजसेवक होता है। प्रकारान्तर से सब (दसों) अंगुलियों में चक्र हो तो मनुष्य महाबली प्रभु होता है। चित्र३, रेखा९ में चक्र देखे।।६।।

सीपफलम्

सीपैकं करशाखायां यस्य राजा भवेन्नरः।
सीपद्वयं यदैकत्र दरिद्रोऽसौ न संशयः ।।७।।

जिसके हाथ या हाथ की अँगुली में एक सीप हो तो वह मनुष्य

राजा होता है। यदि एक ही स्थान में दो सीप हों तो वह निश्चय दरिद्र होता है॥७॥

अंगुल्योऽस्तु पृथक् सीपद्वयं चेत्स धनी नरः।
एव सीपत्रये योगी तुर्यसीपे दरिद्रता॥८॥

जिसकी अँगुलियों में अलग-अलग दो सीपें हो तो वह मनुष्य धनी एवं तीन सीप होने से योगी और चार होने से दरिद्र होता है॥८॥

पञ्चसीपान्वितो यस्तु धनी, योगी रसेषु च
सप्तसीपे दरिद्रः स्यादष्टसीपे धनी नरः।
नवसु योगयुक्ता तु दरिद्रा दशसु ध्रुवम्॥९॥

पाँच सीपवाला मनुष्य धनी, छहवाला योगी, सात सीप वाला दरिद्र, आठ वाला धनी, नौ वाला योगी और दश सीपवाला मनुष्य निश्चय दरिद्र होता है। चित्र ३, रेखा १० में सीप॥९॥

ऊपर लिखे शङ्ख, चक्र, सीप रेखाओं की सङ्ख्या पाँच तक एक हाथ से, इसके ऊपर हो तो दोनों हाथ से गणना करना।

पर्वरेखाफलम्

अंगुलीनां पृथग्रेखा त्रितयं मन्यते पृथक्।
रेखाद्वादशकं सौख्यं धन-धान्य-प्रदायकम्॥१०॥
तिसृणां नव रेखाः स्युश्चक्ररेखा यदा भवेत्।
अपराः किं करिष्यन्ति बिना यत्नेन सिध्यति॥११॥

जिस मनुष्य के चारों अंगुलियों में पर्व रेखा तीन-तीन पृथक्-पृथक् हों और सब बारह रेखा स्पष्ट दिख पड़े तो वह मनुष्य धन-धान्यादि सम्पूर्ण सुखों से युक्त होता है। चित्र १६, रेखा ६। तीन अङ्गुलियों में नौ रेखायें हों और चक्र रेखा भी शोभती हो

तो और रेखाओं के बिना भी मनुष्यों के सब कार्य बिना प्रयास सिद्ध हो जाते हैं। चित्र १५, रेखा ६।।१०-११।।

अंगुलीनां पृथग्रेखा गणने चेत् त्रयोदश।
महादुःखं महाक्लेशं सामुद्रवचनं यथा ।।१२।।
रेखाः पञ्चदशस्तेन षोडशद्यूत-वञ्चकः।
पापी सप्तदशः ज्ञेयो धर्मात्माऽष्टादशात्मके ।।१३।।
ऊनविंशतयः मान्यो गुणज्ञो लोकपूजितः।
तपस्वी विंशतौ ज्ञेयो महात्मा एकविंशतौ ।।१४।।

अङ्गुलियों की पृथक् सब रेखायें गिनने से तेरह प्रतीत हों तो मनुष्य बड़ा दुःखी होता है-ऐसा सामुद्रिक वेत्ताओं ने कहा है।।१२।।

यदि गणना में सब पन्द्रह हों तो चोर, सोलह हों तो जुआ में ठगनेवाला, सत्रह हों तो पापी, अठारह हों तो धर्मात्मा, उन्नीस हों तो अति प्रतिष्ठित, गुणज्ञ और लोकपूजित होता है, बीस हों तो तपस्वी और इक्कीस रेखा हों तो मनुष्य महात्मा होता है। चित्र ५, रेखा ६ में या चित्र ८-रेखा-७ में पर्व देखो।।१३-१४।।

ललनारेखाफलम्

कनिष्ठाङ्गुलिमूले तु रेखा चोद्वाहसाधिका।
कुशाग्रा शोभनाद्वाह्या विपरीतोऽन्यथा भवेत् ।।१५।।
कनिष्ठाधःस्थिता रेखा संख्या यावतिका स्मृताः।
तावती पुरुषाणां तु नारी भवति निश्चितम् ।।१६।।

कनिष्ठा अंगुली के मूल में विवाहसूचक रेखा होती है। यह यदि कुशाग्रा (महीन) और सुरूपा जितनी रेखायें हों उतना विवाह कहना, विपरीत (स्थूला कुरूपा) हों तो विपरीत फल कहना चाहिये।। १५-१६।। चित्र २, रेखा ६।।

भ्रातृभगिनी-बोधकरेखाफलम्

अधस्तात्स्वान्तरेखायाः करभस्था हि यावती।
बृहती रुचिराऽच्छिन्ना भ्रातृरेखा हि तावती।
स्वल्परेखा भगिन्यास्तु संख्यातुल्यं वदेद् बुधः ।।१७।।

हृदय रेखा के नीचे करभ प्रदेश में अच्छिन्न, मनोहर और बड़ी जितनी रेखायें हों संख्या में उतने ही भाई, और छोटी-छोटी जितनी रेखायें हों उतनी बहिन की संख्या कहना उचित है। चित्र २ रेखा १०।।१७।।

सन्तानरेखा

अंगुष्ठमूले प्रसवस्य रेखा
पुत्राः बृहत्यः प्रमदाश्च तन्व्यः।
अच्छिन्नदीर्घाश्च चिरायुषान्ताः
स्वल्पायुषश्छिन्नलघुप्रमाणाः ।।१८।।

अङ्गुष्ठ मूल उच्चस्थान में सन्तानसूचक रेखायें होती है, उनमें पुष्ट अच्छिन्न (शुद्ध, जो कटी न हो) और दीर्घ रेखायें चिरायु सन्तान (पुत्र) बोधक और कटी कुटी या छोटी रेखायें स्वल्पायु सूचक हैं। सूक्ष्म (पतली) रेखा कन्याबोधक होती है। चित्र २, रेखा ११। अङ्गुष्ठमूल में यव हो तो भी मनुष्य सन्तानयुक्त होता है। चित्र २ रेखा १२।।१८।।

पुत्र-पौत्रादिबोधिका रेखा

एका हस्तगता रेखा भवेदूर्ध्वान्तिका यदा
पुत्र - पौत्रविहीनश्च पशुवृत्तिरतस्तथा।
पुत्रपौत्रादि - सम्पन्ना चोर्ध्वरेखा शुभप्रदा ।।१९।।

ऊर्ध्व रेखा के पास एक खड़ी रेखा हो तो मनुष्य पुत्र-पौत्र से

रहित होकर पशुवृत्ति में रत रहता है। चित्र१३ रेखा५। और शुद्ध ऊर्ध्व रेखा के होने से मनुष्य पुत्र पौत्रादि से युक्त होता है।१९।

हिंसाफलम्

हिंसा यदा स्यात्पतिता हि पाणौ महोच्चवर्गा पुरुषस्य यस्य।
दाराभिमर्षी परनिन्दकश्च श्ववृत्तितुल्यो पुरुषो भवेद्वै।२०।

जिस पुरुष के हाथ के उच्च स्थान में हिंसा रेखा पड़ी हो तो वह पुरुष दाराभिमर्षी (स्त्री के द्वारा कष्ट पानेवाला), पराई निन्दा करनेवाला और श्वान के समान वृत्तिवाला होता है। चित्र १६, रेखा ७।।२०।।

गोपीड़ा बालपीड़ा स्याद्दारपीड़ा तथैव च।
हिंसा-दर्शनमात्रेण शान्तियोगो भवेत्तथा।।२१।।
वसुहीनो दारहीनो पुत्रहीनश्च दुःखितः।
शान्तिवार्ता प्रबोधेन हिंसादोषश्च कथ्यते।।२२।।

हिंसा रेखा देखते ही गो पीड़ा, बालपीड़ा तथा स्त्री पीड़ा को शान्ति योग के साथ-साथ कहना चाहिये। हिंसा रेखा वाला धन, स्त्री तथा पुत्र से हीन होता है; अतः हिंसा दोष को शान्ति वार्ता के द्वारा और प्रबोध करते हुए कहना चाहिये। चित्र ३, रेखा ७ और चित्र ७ रेखा १०।।२१-२२।।

पाप-पुण्यसूचकरेखाफलम्

हिंसा रेखा यदा च्छिन्ना पुण्यरेखा च शोभना।
पुण्यं स्याद्विपरीते तु पापी बोध्यं सदा बुधैः।।२३।।

जब हिंसा रेखा कटी हो और पुण्यरेखा सुन्दरी हो तो पुण्यात्मा मनुष्य और विपरीत होने से पापी होता है। चित्र३, रेखा ७।।२३।।

मित्राऽमित्रफलसूचकरेखाफलम्

पुण्यादिरेखाः छिन्ना स्युः रक्ता रेखा कुशोभना।

हिंसारेखाऽहीरिखातः शत्रुवृद्धिः प्रजायते।
आभिर्हीनस्य मित्राणामुदयं परिकीर्तयेत् ।।२४।।

जिस मनुष्य के हाथ में पुण्यादि रेखायें छिन्न हों, लाल रेखा तथा कुत्सित रेखा हिंसा और सर्प रेखा हो तो शत्रुओं की वृद्धि होती है। चित्र ४, रेखा ११। इन दुष्ट रेखाओं के न होने से मित्रों का उदय होता है।।२४।। चित्र १६ रेखा ८।।

मातृ-पितृरेखाफलम्

पित्रोर्या छिन्नरेखा स्यात्तयोरेकस्य निश्चयः।
द्वयोश्छिन्ने द्वयोर्नाशो वक्तव्यः सर्वदा बुधैः ।।२५।।
कस्यापि लघुदीर्घा चेत् पित्रोरेकस्य संस्थितिः।
सुशोभना सुमार्गा चेत् पितरौ स्तौ न संशयः ।।२६।।
यस्मिन् वर्षे हि या छिन्ना कष्टं स्यात्तस्य तत्र वै ।।२७।।

मातृ-पितृ रेखा में से जिसकी रेखा कटी हो उसका विनाश कहना, दोनों कटी हो तो दोनों का विनाश कहना चाहिये।।२५।।

दोनों में कोई छोटी या बड़ी हो तो माता-पिता में एक की स्थिति कहना। चित्र १६, रेखा ९। दोनों यदि सुन्दर और सरल हों तो दोनों की स्थिति कहना।।२६।। जिस वर्ष के प्रमाण में ये रेखा कटी हो उस वर्ष में उसके लिए कष्ट कहना चाहिये।।२७।।

त्रिकोणफलम्

स्वान्तरेखागतः शुद्धस्त्रिकोणो यदि शोभते।
गृहोर्व्युपवनादीनां सुखमेति स्वपौरुषात् ।।२८।।
त्रिकोणः पितृरेखायां पैतृकं वसु लभ्यते।
त्रिकोणो मातृरेखायां मातामहधनं लभेत् ।।२९।।

जिस मनुष्य के हृदय रेखा में शुद्ध त्रिकोण हो तो वह पुरुष अपने पुरुषार्थ से गृह, भूमि और बाग इत्यादि को प्राप्त कर सुखी

होता है। चित्र ४, रेखा ७। यदि पितृ रेखा में त्रिकोण हो तो मनुष्य पैतृक धन (चित्र ७, रे. ५) और मातृ रेखा में त्रिकोण हो तो मातृकुल (नाना) की सम्पत्ति का भागी होता है, चित्र ६, रेखा ६॥२८-२६॥

त्रिभुजो भाग्यरेखायामनायासधनागमः।
लघुसम्पत्तिदः स्वल्पस्त्रिकोणो बृहदो बृहत्॥३०॥
स्थानजन्यं सुखं चापि लभते नाऽत्र संशयः।
त्रिकोणः पुण्यरेखायां शिल्पज्ञोऽसौ भवेद्ध्रुवम्॥३१॥

यदि भाग्य रेखा में त्रिकोण हो तो अनायास धन की प्राप्ति होती है। चित्र ११, रेखा १०। छोटा त्रिकोण हो तो थोड़ी और बड़ा त्रिकोण हो तो बहुत सम्पत्ति और अपने स्थान पर सुख प्राप्त होता है, इसमें सन्देह नहीं। चित्र ६, रेखा ६। पुण्य रेखा में त्रिकोण हो तो मनुष्य निश्चय शिल्पज्ञ होता है। चित्र १२ रेखा ५। इन कहे हुए स्थान के अतिरिक्त यदि किसी स्थान में त्रिकोण हो तो उक्त फल नहीं होता और स्थानजन्य सुख भी नहीं होता है॥३०-३१॥

विद्याप्रदरेखाफलम्

कुशाग्रा भाग्यरेखादि तथा पुण्या त्रिकोणकम्।
यवः पद्मं च विद्यायै शास्त्रं च क्रमशः शृणु॥३२॥
शब्दसाहित्यशास्त्रे च ज्यौतिषं वैद्यकं तथा।
पञ्चमाङ्गलभाषां वै कथयन्ति मनीषिणः॥३३॥

यदि भाग्यादि प्रशस्त रेखा कुशाग्र हों तो मनुष्य शब्द (व्याकरण) शास्त्र का ज्ञाता पुण्य रेंखा से साहित्य शास्त्र, त्रिकोण रेखा से ज्योतिष शास्त्र, यव से वैद्यक तथा कमल रेखा से आंग्ल (अंग्रेजी) भाषा का ज्ञाता होता है॥३२-३३॥

महिलार्थरुदन-परदारयोगरेखाफलम्

अब्जहलाद्रिसुभाग्यविहीने
हा ललनेति विलापपरो ना ।
अन्यवधूसुरतेसु रतोऽसौ
जार-कलङ्क-विभूषितमर्त्यः ।।३४।।

जिस मनुष्य का करतल पद्म, हल, शैल और सुन्दर भाग्यरेखा से रहित हो तो वह स्त्री के लिये निरन्तेर रुदन किया करता है और जार-रेखा युक्त मनुष्य परस्त्रीगामी होता है। चित्र ५ रेखा ७।।३४।।

याञ्चासूचक-रेखाफलम्

डमरू-वज्र-कुम्भैश्च भिक्षार्थं परितः व्रजेत् ।
योगरेखा सनाथोऽसौ परमानन्द-योगिराट् ।।३५।।

डमरू, वज्र और कुम्भ रेखा होने से मनुष्य भिक्षार्थ भ्रमण करता है। चित्र३ रे०४। योग रेखावाला मनुष्य परमानन्द-निमग्न और योगियों में श्रेष्ठ होता है।।३५।।

यशोऽयश-विवादसूचक-रेखाफलम्

यवोऽङ्गुष्ठोदरे सोम-सूर्यौ च करमध्यगौ ।
यशस्वी विपरीते तु मनुजोऽकीर्तिभाग्भवेत् ।।३६।।
विवादी मकराङ्केन भवत्येव न संशयः ।।$\frac{१}{२}$।।

जिस मनुष्य के अङ्गुष्ठोदर में यव रेखा और कर मध्य में चन्द्र या सूर्य रेखा हो तो मनुष्य यशस्वी (चित्र ६, रेखा ८-६) होता है और यदि इसके प्रतिकूल हो तो मनुष्य अपयश का भागी होता है।- चित्र ८, रेखा ८। और मकर से मनुष्य झगड़ालू होता है। चित्र ५,रेखा ६ ।।३६$\frac{१}{२}$।। मतान्तर से धनी भी होता है (पूर्वार्ध पृष्ठ ६७ श्लोक ३५)।।

अथ योगावली

१ - परमेश्वरपूजनं भविष्यद्दृष्टियोगश्च -

स्वान्ताऽपरा यस्य करे विराजते
वृद्धाङ्गुली पुष्टतराऽपि चाऽऽयता।
स्यान्मानवो माधवपादसेवकः
दृष्टिर्भविष्यद्विषये च जायते ॥१॥

जिस मनुष्य के हाथ में द्वितीया स्वान्त (आयु) रेखा हो, अथवा कराङ्गुष्ठ दीर्घ (लम्बा) और पुष्ट हो तो वह मनुष्य भगवदाराधना में तत्पर रहता है और भविष्य का ज्ञाता होता है। चित्र १८ रे० ८॥१॥

२-भक्तियोगः— स्थानं बुधेन्द्वोश्च समुन्नतं स्यात्
तत्रैव जालञ्च गुणाख्याचिह्नम्।
शाखाविशिष्टा जननी च यस्य
दीर्घं कनिष्ठान्तिमपर्वभक्तः ॥२॥

बुध और चन्द्रमा का स्थान ऊँचा हो, वहीं जाल और गुणाख्य (x) चिह्न हो, मातृरेखा शाखाओं से युक्त हो और कनिष्ठाङ्गुली का तृतीय पर्व दीर्घ हो तो मनुष्य भक्त होता है। चित्र १६ रेखा ३ ॥२॥

३ - भविष्यद्वक्तृत्वयोगः

चान्द्रं पुष्टं कर्तितं चाल्पचिह्नैः
रुच्यं बौधं चैन्दवं स्थानमेवम्।
लोके ख्यातो भाविवक्ता नरोऽसौ
रेखाविज्ञाः सञ्जगुः सत्सु मान्याः ॥३॥

चन्द्र स्थान पुष्ट और छोटी-छोटी रेखाओं से कटा हो, देखने में बुध और चन्द्रमा का स्थान मनोहर हो तो मनुष्य भविष्य-द्वक्ता होता है। चित्र १७ रेखा १० ॥३॥

४-त्रिकालज्ञानम्

यदा पाणिमूलात् समुत्थाय भाग्या
तृतीये हि मध्याङ्गुली पर्वणीयात् ।
नरो वेत्ति कालत्रयाणां स वार्ता
मुदा सर्वदा पण्डिताः सङ्गिरन्ते ।।४।।

भाग्य (ऊर्ध्व) रेखा मणिबन्ध से उठकर मध्यमा के तृतीय पर्व तक जाय तो मनुष्य त्रिकालज्ञ होता है, ऐसा पण्डितों का कथन है। चित्र १६ रेखा २।।४।।

५-योगी

योग-रेखाश्रितो योगयुक्तो नरः
मन्द-जीव-प्रदेशः समुच्चो रवेः ।
शुद्धरेखा, स योगी, शनिस्थानगं स्या-
त्त्रिकोणं तदा योगयुक् पूज्यतेऽसौ ।।५।।

योग रेखा युक्त मनुष्य योगी होता है, अथवा शनि और बृहस्पति स्थान उन्नत हो तथा रवि रेखा शुद्ध हो तो मनुष्य योगी होता है। चित्र १८ रेखा १ (योग रेखा भी)। शनि स्थान में त्रिकोण हो तो मनुष्य योगी होकर विशेष गौरव प्राप्त करता है (पूजित होता है। चित्र १८ रेखा १ में।।५।।

६-श्रेष्ठपदलाभः

अनामिकायाः प्रथमाद्धि पर्वणः
तृतीयपर्वावधिभाग्य - रेखिका ।
विशुद्धरूपेण प्रयाति चेत्तदा
नरः समीचीनपदं स विन्दति ।।६।।

अनामिका के पहले पर्व से तीसरे पर्व तक भाग्य (ऊर्ध्व) रेखा शुद्ध रूप से हो तो मनुष्य सर्वश्रेष्ठ (उच्च) पदप्राप्त करता है चि.१२, रे.६।६।

७-परकीय-सम्पत्ति-लाभः

यदाऽपरा पितृवरा विभाति स्थानं रवेर्वोच्चतरं हि पुण्या।
विधेश्च रेखाऽतिविशुद्धरूपा परार्थभागी भवतीह मर्त्यः।७।

जब हाथ में अपरा पितृ-रेखा शोभती हो या रवि स्थान उच्च हो, पुण्य और भाग्य रेखा अति शुद्ध हो तो मनुष्य दूसरे की सम्पत्ति प्राप्त करता है। चित्र १० रेखा १०।।७।।

८-पूर्ण विद्या-योगः

गुरोर्बुधस्यापि रवेस्तथोच्चैः स्थानं समुत्थाय पितुस्ततोर्ध्वा।
गुरोर्गृहं याति जनः सुविद्यापारङ्गतः संलभते प्रतिष्ठाम्।८।

बुध, गुरु और रविस्थान उच्च हो और पितृरेखा से ऊर्ध्व-गामिनी कोई रेखा बृहस्पति स्थान तक शुद्ध रूप से जाय तो मनुष्य विद्या में पारङ्गत होकर प्रतिष्ठा लाभ करता है। चित्र१४ रेखा१०।।८।।

रेखास्तिस्रो वाऽथ बह्व्योऽथवा स्युः
कूटा खण्डा कूर्मरूपा कुठारा।
पाणौ यस्य स्यात्तदा मानवोऽसौ
द्रव्याऽभावाद् दुःखमत्यन्तमेति।।९।।

जिसके हाथ में तीन रेखा या बहु रेखा हो अथवा कूट खण्ड, कुठार और कूर्मादि कोई रेखा हो तो वह पुरुष धना-भावादि के कारण अत्यन्त दुःखी रहता है।।९।।

१०-द्रव्यनाशः

शुक्रस्थानादेत्य रेखाऽतिलघ्वी
छिन्वा 'भाग्यां पैतृकाङ्कञ्च गच्छेत्।
भौमस्थानं स्वीयहस्तेन मर्त्यः
सद्यः सत्यं नाशयेद् द्रव्यराशिम्।।१०।।

शुक्र स्थान से छोटी-छोटी रेखा उठकर भाग्यरेखा और पितृ रेखा को काटती हुई भौमस्थान तक जाय तो मनुष्य स्वतः अपने हाथों से द्रव्य राशि को विनष्ट कर देता है। चित्र १३ रेखा ११ ।।१०।।

११-विवाहाद्धनाप्तियोगः

नक्षत्र चिह्नं यदि स्याद्धि जीवस्थाने तदोद्वाहवशाद्धनाप्तिः। स्यात्तेन मर्त्योऽतिसुखेन कालं स्वं यापयेच्छास्त्रविदा वदन्ति।११।

बृहस्पति स्थान में यदि नक्षत्र चिह्न हो तो मनुष्य विवाह से बहुत धन प्राप्तकर सुख से कालयापन करता है (चि.१३ रे.१०)।११। (मनोहर और कुशाग्र परिणय रेखा बुधस्थान से उठकर रविस्थान का स्पर्श करे तो उत्तम कुल में विवाह होता है और उससे विशेष धन प्राप्त होता है)

१२-कष्टकरविवाहः

यदा कुत्सितोद्वाह-रेखाति-पीना-
ऽथवा कर्तिता स्वल्पया रेखया स्यात्।
तदा कष्टकारी विवाहोऽन्यथा चेत्
कुशाग्रा सुरूपा सुखोद्वाहकर्त्री ॥१२॥

परिणयन रेखा स्थूला और कुत्सिता हो अथवा सरल स्वल्प रेखा द्वारा कटी हो तो विवाह कष्टकारी होता है। (चित्र१३,रेखा ९)। सुन्दर कुशाग्र और दर्शनीय हो तो सुखप्रद विवाह होता है।।१२।।

१३-अनेक-भार्यायोगः

कविस्थानगं जालचिह्नं तृतीये
तथा तारका तर्जनी-पर्वणि स्यात्।
विवाहाख्यरेखोर्ध्वगं जारचिह्नम्
नरोऽनेकया भार्यया सङ्गमीयात् ।।१३।।

शुक्र स्थान में जाल चिह्न तथा तर्जनी के तृतीय पर्व में नक्षत्र चिह्न चि.१४ रे.६ हो अथवा परिणयन रेखा के ऊपर जार चिह्न हो तो

अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध होता है चि.१४ रे.७ (परिणय रेखा में से जितनी रेखायें झुकी हों उतनी ही स्त्रियों का वियोग होता है)।१३।

विवाह-विचार

१–परिणय रेखाओं में जितनी रेखायें कुशाग्र, सुन्दर और समानान्तर की दीख पड़ती हों तो उतने ही विवाह होते हैं।

२–विवाह रेखा से कोई शाखा निकलकर हृदय रेखा का स्पर्श करे तो विवाह होकर सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है।

३–विवाहरेखा ऊपर अङ्गुलीकी ओर झुकी हो तो विवाह नहीं होता।

४–भाग्य रेखा से कई रेखायें निकलकर हृदय रेखा का स्पर्श करे तो भी विवाह नहीं होता।

५–गुरु स्थान के पास तर्जनी के बगल में नीचे जितनी सुन्दर रेखाएँ एक समानान्तर में दिखाई पड़ें उतने ही विवाह कहना चाहिये।

दाम्पत्य-जीवन

६– (क) मातृ रेखा से कोई शाखा निकलकर या स्वतः मातृ रेखा पितृ रेखा से मिले तो स्त्री पुरुष को चाहती है।(ख) एवं पितृ रेखा मातृ रेखा में आकर मिले तो पुरुष स्त्री को चाहता है।

(ग) दोनों मातृ-पितृ रेखा के पृथक्-पृथक् होने से स्त्री-पुरुषों में परस्पर प्रेम नहीं रहता। (घ) दोनों रेखायें परस्पर मिली, देखने में सुन्दर तथा स्वच्छ हों तो दम्पति में परस्पर अत्यन्त प्रेम होता है।

(७) विवाह रेखा आयु रेखा के जितनी ही निकट हो तो उतनी ही जल्दी विवाह होता है।

१४-बन्दीगृहयोगः

यदा भूमिपुत्रोशन-स्थानगं स्यात्
चतुष्कोण-चिह्नं करस्याऽङ्गुलीर्वा।
चतुःपर्वयुक्ताऽपि काराधिवासी
विभिन्ना तु गत्वा नरो मुच्यतेऽसौ ।।१४।।

शुक्र और भौम स्थान में चतुष्कोण चिह्न हो तथा हाथ की कोई अङ्गुली ४ चार पर्वों से युक्त हो तो मनुष्य बन्दीगृह (कारागार) का भागी होता है। चित्र १४ रेखा ८-६। यदि छिन्न-भिन्न हो तो जाकर छूट जाता है।।१४।।

१५-प्राणदण्ड (फाँसी) योग:

नक्षत्र-चिह्न-द्वयं सौरिगम् मध्यमापर्वणि स्याच्तृतीयेऽपि च। भग्नाशनौ मातृरेखा यदा मानवः प्राणदण्डं समेयात्तदा।१५।

शनि स्थान और मध्यमा अङ्गुली के तृतीय पर्व में यदि दो नक्षत्र चिह्न हों अर्थात् उक्त दोनों स्थानों में नक्षत्र चिह्न हो या मातृ-रेखा शनि स्थान में भग्न हो तो मनुष्य को प्राणदण्ड (फाँसी) होता है (चित्र १८ रेखा २)।।१५।।

१६-आत्महत्यायोग:

**भाग्यादौ शशिनश्च देशमभजन्नक्षत्र-चिह्नं यदा
भौमस्यापि द्वितीयके यदि भवेत् स्थाने गुणाख्यं तथा।
जालाङ्कश्च सुलक्ष्म-शास्त्र-निपुणः विद्वद्वरेण्याः द्विजाः
प्रोचुर्मर्त्यगणाधमः स कुरुते हिंसां स्वकीयां स्वयम्।१६।**

भाग्यरेखा के प्रारम्भ में और चन्द्र स्थान में भी नक्षत्र चिह्न हो और द्वितीय मङ्गल स्थान में गुणाख्य तथा जाल चिह्न हो तो मनुष्य आत्महत्या करता है, चित्र १८ रेखा ३।।१६।।

१७-अकालमृत्युयोग:

**नियत्यन्तिके स्वान्तमात्रोश्च मध्ये
गुणाङ्को विछिन्नाऽथवाऽऽयुष्यरेखा।
विलूनाऽथवा स्वल्परेखाभिरायु-
स्यतदाऽकालमृत्युं भजेन्मानवोऽसौ।।१७।।**

भाग्य रेखा के पास चित्र रे. ७ तथा आयुष्य और मातृरेखा के बीच

में गुणाख्य चिह्न हो (चि.१३ रे.६) या आयुरेखा भग्न वा छोटी-छोटी रेखाओं से कटी हो तो मनुष्य की असामयिक मृत्यु होती है।१७।

१८-अल्पायुष्ययोगः-तीर्थ-मृत्युयोगश्च

मातृरेखामछित्त्वैव भाग्यो यदा सौरिगेहं व्रजेत् स्वल्पमायुस्तदा। स्थानमिन्दोर्गुरोश्चोन्नतं चोत्पलं मृत्युदेशे भवेत्तीर्थ-मृत्युं व्रजेत्।१८।

भाग्य रेखा मातृरेखा को न काटकर मन्द स्थान तक जाय तो मनुष्य अल्पायु होता है। चित्र १५ रेखा ७। चन्द्र और गुरु स्थान उन्नत हो तथा मृत्युस्थान में पद्म रेखा हो तो मनुष्य की तीर्थ में मृत्यु होती है। चित्र १५ रेखा ८।।१८।।

अथाऽऽयुरेखाविचारः

आयुषां योगास्त्रिविधास्तत्राऽऽह—

त्रिविधाश्चायुषां योगाः स्वल्पायुर्मध्यमोत्तमाः
द्वात्रिंशत्पूर्वमल्पायुर्मध्यमायुस्ततो भवेत्।
चतुःषष्ट्याः पुरस्तात्तु ततो दीर्घमुदाहृतम्
उत्तमायुः शतादूर्ध्वमिति शास्त्रेषु निश्चितम् ।।१९।।

आयु तीन प्रकार की होती है—

१ दीर्घायु, २ मध्यमायु और ३ अल्पायु। इनमें ६४ से १०० दीर्घायु, ३२ से ६४ तक मध्यमायु और ३२ तक अल्पायु होती है। यदि १०० से अधिक हो तो उत्तमायु कही जाती है।।१९।।

प्रथम आयु का विचार करके तब लक्षणादि का विचार करना चाहिये। यथा *'पूर्वमायुः परीक्षेत पश्चाल्लक्षणमादिशेत्। निरायुषः कुमारस्य लक्षणैः किं प्रयोजनमिति'* (पू० पृष्ठ ५४ श्लोक१)।

१. दीर्घायुः—

हाथ की अँगुलियाँ लम्बी और आयुरेखा बुधस्थान से गुरुस्थान तथा स्पष्ट, गम्भीर, स्वच्छ, मनोहर तथा अखण्ड हो।

पितृ रेखा लम्बी, स्पष्ट, वक्र, नीचे की ओर झुकी तथा अच्छिन्न।

स्वास्थ्य रेखा पितृ रेखा से मिली न हो, तथा स्वच्छ परिपूर्ण हो तो मनुष्य की दीर्घायु या उत्तमायु होती है।

२. मध्यमायुः—

हाथ की अँगुलियाँ मध्यमश्रेणी की तथा आयुरेखा शनिस्थान तक स्वच्छ इत्यादि उक्त गुणयुक्त पितृरेखा नीचे की ओर झुकी न हो, तो मध्यमायु होता है।

३. अल्पायुः—

अंगुलियाँ छोटी, कृश और वक्र, आयु रेखा अनामिका के मूल तक अथवा शनि वा गुरुस्थान तक होकर भी छिन्न भिन्न, म्लान और भद्दी हो, पितृरेखा सूक्ष्म (पतली) वा चौड़ी म्लान, भद्दी तथा खण्डित, मातृरेखा शनिस्थान तक शाखारहित, स्वान्त रेखा कृष्ण वर्ण छिन्न-भिन्न हो, प्रायः ये सब रेखायें देखने में सौन्दर्य विहीन हों तो अल्पायु योग होता है।

ऐसे मनुष्य प्रायः रोगी, अनेक प्रकार के दुःखों से पीड़ित और स्वल्पायु भोगते हैं, अतः ऐसे प्राणियों को भगवद्भजन तथा सद्धर्मादि करना श्रेयस्कर है।

अथाऽरिष्टविचारः

तर्जनीमूलगामिन्यां रेखायां छिद्रता यदि।
श्वाविन्-मूषिक-मार्जारं-सर्पदंशो भविष्यति ॥२०॥

आयुष्य रेखा में (जो बुधस्थान से उठकर तर्जनी के मूल तक जाती है (चित्र २ में रेखा ७ देखिये) यदि छिद्र या नीला, काला, लाल रङ्ग के दाग हो तो मनुष्य को साही, मूषक, बिलार और सर्प आदि जानवरों के काटने का भय होता है॥२०॥

व्याख्या हस्त सञ्जीवनी के आधार पर

१— यदि १ रक्त-नील-मिश्रित बिन्दु, २ केवल रक्त बिन्दु, ३ श्वेत बिन्दु वा ४ श्याम बिन्दु आयुष्य रेखा में हो तो मनुष्य को क्रमशः१ सर्पदशन, २ रक्तरोग, ३ सन्निपात और ४ विषपान का

भय होता है और यदि आयुष्य रेखा श्याम वर्ण और उसमें रक्त बिन्दु हो तो मनुष्य को बिजली के द्वारा भय होता है।

२— आयुष्य रेखा यदि किसी सीधी रेखा से कटी हो १ अथवा बुध स्थान में अङ्कुश सदृश कोई रेखा नीचे की ओर मुख कर इसे काटती हो, २ वा इसके अन्त में अनेक छोटी रेखायें हो तो ३ क्रमशः शस्त्र १, हाथी २ और घोड़े ३ के द्वारा भय होता है।

३— यदि दक्षिण अथवा वाम भाग से अनेक टेढ़ी रेखायें आयुष्य रेखा को काटती हों तो क्रमशः अग्नि तथा जलमें डूबनेका भय प्राप्त होता है।

४— यदि आयुष्य रेखा को अनेक रेखायें दाहिनी ओर से और एक रेखाबाँयीं ओर से काटती हो तो मनुष्य भयंकर रोगसे पीड़ित होता है।

५— यदि आयु रेखा अन्य रेखाओं से अनेक स्थान पर कटी हो तो स्त्री द्वारा कलङ्क तथा अपमृत्यु होती है।

६— यदि इस आयु रेखा से कोई शाखा नीचे की ओर झुकी हो या यह छिन्न-भिन्न हो तो उच्च स्थान से गिरने का भय होता है पूर्वार्द्ध पृष्ठ ६८ श्लोक ३७ देखिये।

७— यदि आयुष्य रेखा प्रारम्भ में सूक्ष्म (पतली), अन्त में स्थूल (मोटी) और मध्य में छिन्न-भिन्न हो तो प्रबल शत्रुओं द्वारा मनुष्य को हानि होती है। यदि इसके विपरीत अर्थात् आदि में स्थूल, अन्त में सूक्ष्म और शुद्ध रीति से पूर्ण हो तो वह पुरुष शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है।

८— आयुष्य रेखा मोटी, देखने में भद्दी तथा श्यामवर्ण हो तो मनुष्य को कुटुम्ब सम्बन्धी चिन्ता होती है और मन उसका चञ्चल तथा उद्वेग युक्त होता है। इस रेखा के द्वारा हृदय की गति भी जानी जाती है।

प्रकार—

९— पुरुष के दाहिने और स्त्री के बायें हाथ की आयुष्य रेखा के जिस वयोमान (वर्षपरिमाण) में उक्त चिह्न पाये जाँय उस वर्ष में इनका भय-मात्र समझना और यदि ये चिह्न दोनों हाथों में उसी स्थान पर हों तो मृत्यु कहना चाहिये।

और दोनों हाथों में भिन्न-भिन्न स्थान में यह उपरोक्त जितने चिह्न पाये जाँय उतने ही बार केवल भय प्राप्त होता है।

१०– यदि ऊर्ध्व रेखा शुद्ध और सरल हो तो मनुष्य का सम्पूर्ण कष्ट आकर निकल जाता है। उत्तरार्ध पृष्ठ१५२ श्लोक ९ देखिये।

२१-अल्पावस्थायां पित्रोर्वियोगः

नियत्यादिदेशे भवेच्चेद्यवाङ्कस्त्रिकोणोऽथवा शैशवे मानवानाम्।
भवत्येव पित्रोर्विनाशोऽतिशीघ्रम् विपश्चिद्वरेण्या वदन्तीह सत्यम्।२१

भाग्य रेखा के आरम्भ में यव चिह्न चित्र १४ रेखा ५ हो या त्रिकोण चित्र १६ रेखा १० हो तो बाल्यावस्था में ही उसके माता पिता की मृत्यु होती है।।२१।।

२२-पुरुषव्यभिचारयोगः

भृगुस्थाननं जालचिह्नं यदा स्या-
त्तथा तर्जनी - मध्यमा - पर्वदेशे।
तृतीये क्रमाद्भ - त्रिकोणाख्यचिह्ने
भवेतां व्यभीचारयुक्तो नरः स्यात्।।२२।।

शुक्र स्थान में जाल चिह्न तथा तर्जनी और मध्यमा के तृतीय पर्व में क्रम से नक्षत्र और त्रिकोण चिह्न हो तो मनुष्य व्यभिचारी होता है। चित्र १३ रेखा ८।।२२।।

२३-परधर्मावलम्बनम्

यदि कतिपय-शाखा भाग्यरेखासमुत्थाः
सुरुचिर-मणिबन्ध-स्थानमीयुस्तथा च।
विलसितगुणचिह्नं भास्करस्य प्रदेशे
श्रयति नर-कदर्यः पारकीयं हि धर्मम्।।२३।।

भाग्य रेखा से कई शाखा उठकर मणिबन्ध की ओर जाँय तथा सूर्यस्थान में गुणाख्य चिह्न हो तो मनुष्य दूसरे के धर्म का अवलम्बन करता है।(चित्र १८ रेखा ४)।।२३।।

२४-भाग्योदयः

पाणिमूल-बलयोपरि भागे स्याद् गुणाख्यमथ पुष्टतरोर्ध्वा।
भाग्य-शालि-मनुजेषु प्रसिद्धः राजते स खलु मानव-जातः।२४।

मणिबन्ध वलय के ऊपर गुणाख्य चिह्न (चित्र१७ रेखा७) हो तथा ऊर्ध्व (भाग्य) रेखा पुष्ट हो तो मनुष्य सौभाग्यशाली होता है।२४।

२५-जलमग्नयोगः

तृतीयेषु सर्वाङ्गुली-पर्वसु स्यात् यवाङ्को नरो दुर्गताचार-युक्तः।
निमज्याऽप्सु पञ्चत्वमेतीह लोके विचार्येदमाहुर्बुधाः लक्षणज्ञाः।

सब अङ्गुलियों के तीसरे पर्व में यव चिह्न हो तो मनुष्य दुराचारी होता है और जल में डूब कर मरता है। चित्र १२ रेखा ६।।२५।।

२६-ससम्पत्तिसुखजीवनयापनम्

गुरुस्थानगाऽऽयुष्यरेखा तदीयै-कशाखा शनिस्थानमेतीति मर्त्यः।
सपत्नं विजित्यातिसम्पत्तियुक्तः सुखेनात्मकालं नयेद्धर्षयुक्तः।

आयुष्य रेखा गुरु स्थान तक हो और उसकी एक शाखा शनि स्थान में प्राप्त हो तो मनुष्य शत्रुओं को पराजित कर सम्पत्तिशाली हो सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करता है, चित्र १६, रेखा१०।।२६।।

इति योगवाली समाप्ता।

अथ वर्ष-शुभाऽशुभ-ज्ञानम्।(हस्तस०)

कस्मिन्वर्षे शुभं कस्मिन्नशुभं वा भवेत् मम।
इति ज्ञेये पञ्चदश भागाः पञ्चाङ्गुलीभवाः।।१।।
वीक्ष्यास्तेषु च या रेखा ऊर्ध्वचक्रे यवोऽथवा।
तस्मिन्वर्षे शुभं लक्ष्मीपुत्राद्याप्तिर्यशः सुखम्।।२।।
तेषु पर्वसु या रेखा छिन्ना भिन्ना च वेधयुक्।
शुक्ति-बिन्दु-चतुष्कोण-भाख्यास्तद् दुःखदायकम्।।३।।
व्यवस्थायादिमं वर्षं कनीनिकादि पर्वसु।
विचार्यन्ते पञ्चदश वर्षाणि दक्षिणे करे।।४।।

ततो वामे पञ्चदश पुनर्दक्षिण-वामयोः।
स्त्रियां वामेऽथ सव्ये च विमृश्यन्ते चतत्क्रमात् ॥५॥

प्राणियों के प्रत्येक अङ्गुलियों में तीन-तीन पर्व होते हैं; इस प्रकार १५पर्व दाहिने तथा १५बायें हाथ का मिलाकर ३०पर्व होते हैं। इन पर्वों का प्रथम दक्षिण फिर बाम बराबर आयु की संख्या तक गणना करनी चाहिये। अब जिस वर्ष के पर्व में ऊर्ध्व, चक्र या यव रेखा हो उस वर्ष में शुभ कार्य, लक्ष्मी, पुत्र-पौत्रादि की प्राप्ति, यश और सुख प्राप्त होता है। जिस वर्ष के पर्व में रेखा छिन्न-भिन्न, सीप, बिन्दु, चतुष्कोण, तार का चिह्न दीख पड़े तो वह वर्ष अनेक प्रकार का दुःखदायक होता है। पुरुष का प्रथम दक्षिण तब वाम और स्त्री का प्रथम वाम तब दक्षिण हाथ से गणना करनी चाहिये॥१-५॥

उदाहरण—

जैसे किसी के ३५ वर्ष के शुभाशुभ को जानना है, तो उस मनुष्य के दाहिने हाथ की कनिष्ठिका के आदि से अङ्गुष्ठ के अन्त तक १५पर्व एवं वाम हाथ के भी १५ पर्व तक तीस वर्ष फिर दक्षिण कनिष्ठिका का ३ और अनामिका के दो पर्व तक ३५ वर्ष हुए, इस पर्व में यदि शुद्ध ऊर्ध्व रेखा हो तो पुत्रादि की प्राप्ति, यश और शुभ विवाहादि मङ्गल कहना चाहिये। इसी प्रकार स्त्री के वाम हाथ से देखना चाहिए॥१-५॥

अथ मास-शुभाऽशुभज्ञानम्

श्रावणो हस्त-तालः स्यादङ्गुष्ठो भाद्रपान्मतः।
कुमारस्तर्जनीमध्ये कार्तिकः श्रीविधानतः ॥१॥
मार्गशीर्षोऽनामिकायां कनिष्ठायां तु पौषकः।
दक्षिणायनमेवं स्याद् दक्षिणे सिंहवाहने ॥२॥
वामे माघः कनिष्ठायां फाल्गुनेऽनामिका मतः।
मध्या चैत्रे प्रदेशिन्यां माधवोऽङ्गुष्ठके परः ॥३॥
आषाढ़ो भूतलः प्रोक्तः एवं स्यादुत्तरायणम्।
वर्तमानो हि यो मासः प्रोक्तः स पञ्चनाड़िका ॥४॥

ततो हस्तेक्षणघटी - मासस्तस्य शुभाऽशुभम् ।
रेखा कामदुघा रूपा वाच्यं लक्षणशिक्षितैः ।।५।।
तर्जन्याञ्च कनिष्ठायां प्राप्तो मासस्तु नो शुभः ।
शेषस्थाने शुभोऽङ्गुष्ठे रणप्रश्नोऽतिमङ्गदः ।।६।।
तर्जन्यां जयदः सोऽपि तालस्थः कोपिनो शुभः ।
लक्ष्मीस्थितो धनकरो मेरुस्थः पददायकः ।।७।।
यद्वा माघादयो मासाः द्वादशोऽपि लघोःक्रमात् ।
दिनोदयात्पञ्चघटीमाना पाणाक्षणावधि ।।८।।
यो मासः प्राप्यते तस्य स्थानलक्षणवीक्षणात् ।
मासे शुभाऽशुभं वाच्यमित्युक्तं ज्ञानिभिः पुरा ।।९।।

प्रत्येक पुरुष की दाहिनी हथेली में श्रावण, अँगूठे में, भाँदव तर्जनी में, कुआर मध्यमा में, कार्तिक अनामिका में, अगहन और कनिष्ठिका अङ्गुली में पौष मास होता है। दाहिने हाथ के ये ६ महीने दक्षिणायन कहलाते हैं। एवं वाम हाथ की कनिष्ठिका में माघ, अनामिका में फाल्गुन, मध्यमा में चैत्र, तर्जनी में वैशाख, अङ्गुष्ठ में ज्येष्ठ तथा हथेली में आषाढ़ मास होता है। इस प्रकार वाम हाथ के छः महीने उत्तरायण के हैं।

गणना के अनुसार सूर्योदय से ५ दण्ड तक वर्तमान महीना भोगता है, अनन्तर ५ दण्ड बाद का दूसरा महीना, इस रीति से ५-५ के क्रमानुसार १ दिन-रात में १२ महीने भोगते हैं।

हाथ देखने के समय की घड़ी से जो महीना आवे उसका शुभाशुभ फल जानना क्योंकि लाक्षणिकों ने रेखा को कामधेनु रूप माना है।

तर्जनी कनिष्ठा और करतल (हथेली) पर जो मास पड़े वह अशुभ और अन्य स्थानों में शुभप्रद है। किन्तु युद्ध विषयक प्रश्न में अङ्गुष्ठ हानिकारक और तर्जनी जय देनेवाली है। हथेली पर प्राप्त महीना किसी प्रकार शुभ नहीं है। लक्ष्मी (मध्यमा) में धन प्राप्ति, मेरु (अङ्गुष्ठ) में पद (मान-प्रतिष्ठादि) प्राप्त होता है। अथवा दूसरी विधि यह भी है कि कनिष्ठिका से लेकर हथेली तक दोनों हाथों

में क्रमशः माघ आदि १२महीने होते हैं। सूर्योदय से हाथ देखने के समय तक ५-५ घड़ी के अनुसार पूर्वोक्त विधि से शुभाशुभ फल जानना चाहिये, ऐसा विद्वानों का कथन है।।१-६।।

उदाहरण—

जैसे किसी ने माघ महीने में १४ घड़ी पर प्रश्न किया कि यह महीना मेरा कैसा बीतेगा? अब यह देखना चाहिये कि माघ महीना वाम हाथ की कनिष्ठा में है, सूर्योदय ५ दण्ड तक इसका भोग और १० दण्ड तक मध्यमा में फाल्गुन मास का भी भोग हो चुका १० से १५ दण्ड तक तर्जनी में चैत्र भोगेगा, अतः यह महीना शुभदायक नहीं है। परन्तु युद्धविषयक प्रश्न हो तो शुभ अर्थात् जयप्रद है, इसीप्रकार महीनों का विचारकरना चाहिये।१-६।

तिथि-शुभाऽशुभफलम्

यस्यां निरीक्ष्यते हस्तः सा तिथिः स्याद्दिनोदये।
घटीचतुष्टयं शेषास्तदनुक्रमतो मताः ।।१।।
हस्तवीक्षणवेलायां या तिथिः समुदीयते।
तदाऽङ्गुल्याः स्वरूपेण वाच्यं सर्वं शुभाऽशुभम् ।।२।।
नन्दा-भद्रा-जया-रिक्ता-पूर्णास्तु तिथयः क्रमात्।
ताराद्याः कृष्णपक्षे तु दर्शः सूर्येन्दुसङ्गमः ।।३।।
तारादि-त्र्यंशके ज्ञेया प्रतिपत्षष्टिका तिथिः।
एकादशी च क्रमशः शेषं शेषांशवत् स्थितम् ।।४।।

जिस तिथि में हाथ देखा जाय उस तिथि का मान सूर्योदयसे ४ घड़ी (दण्ड) तक होता है। उसके बाद इसी क्रम से प्रत्येक ४ दण्डपर १दिन रातमें पन्द्रहों तिथियाँ भोगती हैं। तथा देखनेके समय जिस तिथि का उदय हो उस अङ्गुली के स्वरूप से सम्पूर्ण शुभाशुभ कहना चाहिये।

कनिष्ठिका से लेकर अङ्गुष्ठ पर्यन्त क्रमशः नन्दा, भद्रादि (कनिष्ठिका अङ्गुली में नन्दा१-६-११। अनामिका में भद्रा २-७-१२। मध्यमा

में जया ३-८-१३। तर्जनी में रिक्ता ४-९-१४। और अङ्गुष्ठ में पूर्णा ५-१०-१५।) तिथियों का वास रहता है। कनिष्ठिका के आदि पर प्रतिपदा, मध्य में षष्ठी, अन्त में एकादशी, इसी क्रम से अनामिका इत्यादि अङ्गुलियों में भद्रादि प्रत्येक तिथियों को समझना चाहिये। बायें हाथ में कृष्णपक्ष और दाहिने में शुक्लपक्ष, कृष्णपक्ष में अमावस्या और शुक्लपक्ष में पूर्णिमा होती है।।१-४।।

उदाहरण—

जैसे शुक्लपक्ष की त्रयोदशी तिथि को १० दण्ड पर किसी ने प्रश्न किया तो त्रयोदशी तिथि का निवास मध्यमा के तृतीय पर्व में है; उसका मान सूर्योदय से ४ दण्ड तक भोग चुका, उसके बाद ४ दण्ड तक रिक्ता की चतुर्थी भी तर्जनी के प्रथम पर्व में भोग चुकी, ८ दण्ड के बाद १२ दण्ड तक नवमी तर्जनी के मध्य पर्व में भोगेगी, इसलिये प्रश्न काल (दण्ड१०) में नवमी तिथि वर्तमान है इसमें यदि ऊर्ध्व रेखा शङ्ख, चक्रादि कोई रेखा हो तो उसका फल उक्तवर्ष शुभाशुभ प्रकरण में कथित, ऊर्ध्व चक्रादि के समान जानना चाहिये। इसी क्रम से अन्य तिथियों का भी ज्ञान करना।।१-४।।

ग्रन्थस्तुतिर्विज्ञापनञ्च-

ये सप्तकृत्वः सुधियः पठन्ति ग्रन्थोत्तमं भक्तियुषः किलैतम्।
ते दैववृत्तावगतौ विचक्षणाः भजन्ति निर्वाणपदं सुभव्यम्।।

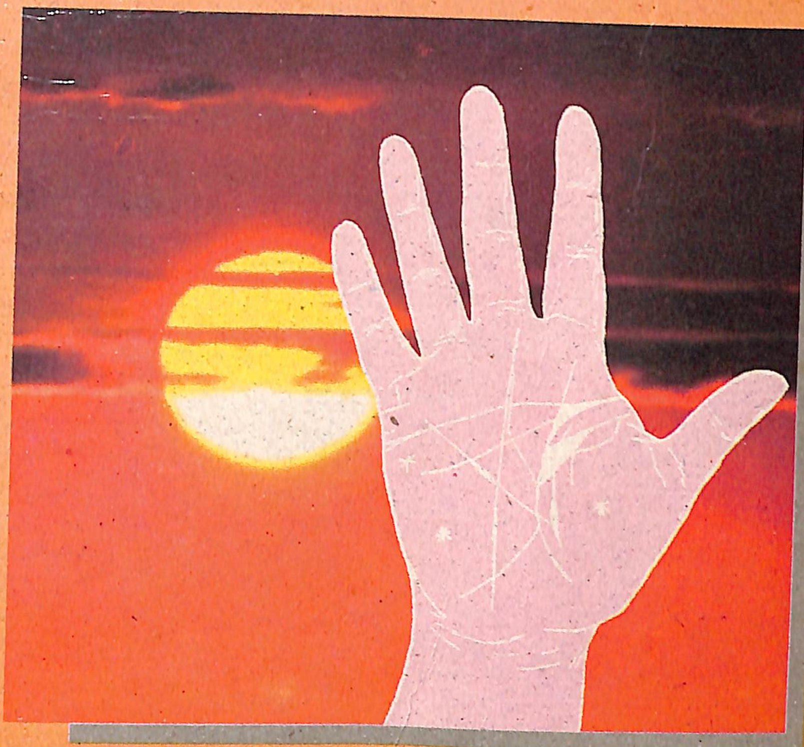
जो विद्वान् लोग इस उत्तम ग्रन्थ को भक्तिपूर्वक सात बार पढ़ेंगे वे लोग परमेश्वर के सृष्टि-क्रम की जानने में निपुण होकर (यश मानादि तथा भगवद्भक्ति प्राप्ति द्वारा) सुन्दर निर्वाण पद को प्राप्त करेंगे।।१।।

वेदाऽष्टाङ्कमृगाङ्क (१९८४) वत्सरगते चैत्रस्य शुक्लेदले
रामाख्ये नगरे च रामनवमी-तिथ्यां रवौ पुष्यभे।
काशी-राज-भुजे समस्तसुभगे देवापगा-रोधसि
ग्रन्थोऽयं परिपूर्णतां समुदगाच्छ्रीकालिकाशर्मणः।।१।।

सचित्र

सामुद्रिक-रहस्य

भाषा-टीका



प्रकाशक

ज्योतिष प्रकाशन

चौक (चित्रा के सामने), वाराणसी २२१००१

सामुद्रिक-रहस्य भाषा-टीका